'जय हिन्द' हमारा राष्ट्रीय अभिवादन है.

चर्खे के निशान-वाला 'तिरंगा-झंडा'
हमारा राष्ट्रीय-झंडा है.

टैगोर का 'जय हो' गीत हमारा राष्ट्रीय
गीत है.

टीपू सुलतान की सेना का स्मृति चिह्न
'शेर' हमारा प्रतीक है.

'चलो दिल्ली' हमारा रणनाद है और
इन्किलाब जिंदाबाद तथा आजाद
हिन्द जिंदाबाद हमारे नारे हैं.

विश्वास एकता और बलिदान हमारा
ध्येय-मंत्र है.

आरजी हुकूमत-ए-आज़ाद हिन्द
[आजाद हिन्द की अस्थायी सरकार]

उन तमाम सहयोगी विद्रोहियों को
जो हिन्दुस्तान में
या हिन्दुस्तान के बाहर
१९४२ से ४५ वाले
भारतीय स्वाधीनता के
दूसरे संग्राम में
एक अडिग योद्धा की तरह
जूझते रहे

प्रवेशक

बर्मा और स्याम की मेरी पिछली यात्रा ने मुझे श्री सुभाष चंद्र बोस की आज़ाद हिन्द सरकार के कागज़ों और उस से संबंधित सामग्री के निकट-तम संपर्क में ला खड़ा किया; इतना ही नहीं परन्तु स्व-देश लौट आने के बाद तो, इस प्रवास के कारण इससे सम्बन्धित कई अन्य विशिष्ट संपर्कों का ध्यान मेरी ओर आकर्षित हुआ। प्रकाशित सामग्री की यही छोटी सी कहानी है। इस सामग्री को जितना प्रचार और प्रसिद्धि मिलनी अनिवार्य थी—ठीक उतनी ही इसे मिल रही है, इस का मुझे हो गहरा आनन्द है।

इतिहास एक अन्वेषण मात्र है। इतिहासकार घटनास्थल अथवा घटनाओं से सम्बन्धित महापुरुषों से सीधे सम्पर्क में नहीं आता। उसे तो विविध सामग्री के परीक्षण के बाद, अपनी नीर-क्षीर बुद्धि विवेक और न्याय के बल से ही सत्य की खोज में अग्रसर हो कर इतिहास का सृजन करना पड़ता है।

आम तौर से डायरी दैनिक घटनाचक्र का आँखों देखा वर्णन होता है। डायरी का लेखक या तो उन घटनाओं का दर्शक होता है अथवा उन में से एक पात्र। इस लिए इसे इतिहास ही कहना ठीक होगा। और यह इतिहास है भी ऐसा जहाँ सत्य की पवित्रता का संरक्षण बहुत अच्छी तरह से हो सकता है। इसलिए मुझे विश्वास है कि इस डायरी के प्रकाशन का जनता पलक बिछा कर स्वागत करेगी।

मैं फिर एक बार ज़ोर देकर बता दूं कि यह प्रकाशन घटनाओं का केवल सीधा सादा विवरण मात्र है। घटी हुई घटनाओं से परिचित कराना ही इसका उद्देश्य है। यदि युद्ध का वक्त होता तो यह विचार कर के कि शायद युद्ध संचालन पर इसका विपरीत प्रभाव पड़े, मैं प्रकाशक को इसे प्रकाशित करने की सलाह नहीं भी देता। लेकिन अब तो युद्ध समाप्त हो चुका। इस लिए जब तक कि स्मृतियें धुंधली हो जाएं, और अतिशयोक्ति एवं विभूति-पूजा के तत्व चुपके से इस में प्रविष्ट होने लगें इन के पहिले तुरत ही इसे प्रकाशित कर देना नितान्त आवश्यक है। इस प्रकाशन को ऊपर के दोनों दोषों से मुक्त रखने का अवश्य ही प्रयत्न किया गया है।

अब थोड़ा सा श्री सुभाष चन्द्र बोस और उन की आज़ाद हिन्द सरकार के विषय में भी। अपने मुल्क में ऐसे लोग भी हैं जिन्हें श्री सुभाष बाबू द्वारा आज़ाद हिन्द सरकार की स्थापना करना और ऐसे ही दूसरे कदम उठाना पसंद नहीं है। उन्हें अपने दृष्टिकोण के मुताबिक ऐसा सोचने का अधिकार है। इतना होते हुए भी इन लोगों से और श्री सुभाष के कट्टर से कट्टर विरोधियों से भी—न्याय का तकाज़ा है—कि सुभाष बाबू के हेतुओं की उच्चता, उनके उठाए हुए ऐतिहासिक जोखिम और आज़ाद हिन्द सरकार की स्थापना में जो साहस और महान् त्याग उन्होंने दिखाया है—उसे वे स्वीकार करें।

पिछले दो-तीन वर्षों में हमारे शासकों ने हमें निरस्त्र कर दिया है। आज मुक्त हथियार उठाते हुए भी भय लगता है। हमें ऐसा लगता है कि हथियार उठा कर स्वाधीनता के लिए युद्ध करने में हम असमर्थ हैं। पर श्री सुभाष ने देश की ओर से हमें और समस्त संसार को बता दिया है कि यह निराशा ता चाहिए मान है—इस में विश्वास न किया जाए। हमारे व्यापारी, क्लार्क और हमारी लड़कियां तक शस्त्र धारण कर के भी आजादी के लिए युद्ध कर सकी हैं—और कर सकती हैं।

श्री सुभाष बाबू ने हमारे साम्प्रदायिक समस्या को, मुसलमान की पहली को और भाषा के मसले को—और उसी प्रकार की अनेकों सार्वजनिक उलझनों को एक एक कर के सुलझा दिया है। पूर्वी एशिया का यह सफल प्रयोग हमारे मुल्क के भविष्य के निर्माण में नूतन-पथ-प्रदर्शन का काम करेगा। अगर पूर्वी एशिया में स्थापित आजाद हिन्द सरकार के प्रयोग ने हमें बहुत कुछ सिखाया है हमारी मोह निद्रा भंग कर दी है—हमारी बन्द आँखें खोल दी हैं। आज हम गोरों के साथ यह महसूस करने लगे हैं कि आजादी के लिए हम पहिले से भी अधिक मजबूत अधिक सजग, अधिक निपुण और अधिक योग्य बन चुके हैं। इस के लिए मुल्क श्री सुभाषचन्द्र का सदैव ऋणी रहेगा। उन्होंने देश में रह कर जो कुछ किया उस के लिए हम उन से उऋण नहीं हो सकते परन्तु उन्होंने पूर्वी एशिया में रह कर जो अद्वितीय और महान कार्य किया है उस के लिए हम उनके अधिक से अधिक ऋणी हैं।

सुभाषबाबू जिन्दाबाद इन्कलाब जिन्दाबाद जय हिन्द

अमृतलाल द. शेठ

प्रिय भाई, २६ सितम्बर १९४५

यह मौलिक सामग्री तुम्हें भेज रही हूं। युद्ध-पूर्व में-हिन्दुस्तान के लिए हमने संघर्ष किए हैं, लड़ाइयें लड़ी हैं और क्रान्तिकाल के तूफानी दिनों में होकर हम—गुजरे हैं। उन दिनों की मनःदशा का यह सच्चा इतिहास है—यह उन दिनों की मेरी डायरी है। तुम इस का उपयोग कर सकते हो—हां—ज्यों तुम चाहो, यदि यह महसूस करो कि हमारे मुल्क की आजादी के जंग को इस से जरा भी सहारा मिल सकेगा।

तुम इस में से जो भी प्रकाशित करना चाहो—जरूर करना। अपनी कल्पना और प्रतिभा के सहारे—ज्यों भी ठीक समझो—इस का संपादन करने की तुम्हें पूरी स्वतंत्रता है।

लेकिन एक शर्त है मेरी। उसे न भूलना! तुम्हारे इस प्रयत्न से हमारी आजादी के आन्दोलन को तीव्रता और बल मिलना ही चाहिए। इस आश्वासन के बाद—मेरी भेजी हुई सामग्री पर तुम्हारा पूरा अधिकार है।

जय हिन्द ! तुम्हारी बहिन

म—

अनुक्रम

जय हिन्द

हिन्दुस्तान की एक अप्रसिद्ध वीरांगना की डायरी के यह थोड़े से पन्ने हैं। पूर्वी एशिया में हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिए जो एक गौरवपूर्ण महाभारत शुरु हुआ था उसे इस वीरांगना ने अपनी आंखों से देखा था।

१९४१ के दिसम्बर के तूफानी दिनों में और उस के बाद छिन्न भिन्न होते हुए ब्रिटिश साम्राज्य के कराहने की दर्द भरी आवाज़ इस ने अपने ही कानों से सुनी थी। मलाया और बर्मा के एक छोर से दूसरे छोर तक जब बीनवर्ण जापानियों की धाक पड़ रही थी तब यह वीरांगना वहीं थी। आज़ाद हिन्द की अस्थायी सरकार और आज़ाद हिन्द फौज की सभी प्रवृत्तियों का प्रारंभ इसने अपने ही सामने देखा था। क्रांति के उदय काल में यह वहां उपस्थित थी—क्रांति के मध्याह्न काल की तीव्र प्रचंडता के भी इस ने दर्शन किए थे और संध्या के बाद, काली रात्रि के निविड़ अंधकार में अपनी प्रवृत्तियों का समाप्त हो जाना भी इसने अपनी इन नंगी आँखों से देखा था।

आराम कुर्सी, गद्दों और सोफों पर पड़े पड़े अपनी ज़िन्दगी बिताने वाले किसी आत्म-तुष्ट व्यक्ति की यह डायरी नहीं है, न यह समाज के हृदय की धूम-स्मृति है और न यह किसी सिद्ध हस्त पत्रकार की तीखी कलम की करामात ही। झांसी की रानी रजिमेंट में बन्दूक हाथ में ले कर प्राणों पर खेलने वाली एक क्रांतिकारिणी भारतीय युवती की यह एक सीधी सादी—अनुभवपूर्ण और बिना किसी टीपटाप की कथा है।

अलंकारों की इसे आवश्यकता नहीं। इस वीरांगना की एक मात्र यही इच्छा थी कि '**जय हिन्द**' का नाद और स्वाधीनता संग्राम में प्राणों पर खेलने वाले पूर्वी एशिया के तीन लाख हिन्दुस्तानियों के अंतर के आंदोलित स्वप्न सच्चे और वास्तविक स्वरूप में अपने देशवासियों के सामने रक्खे जाएं।

इस में हम ने यदि कुछ भी परिवर्तन किया है तो सिर्फ यही कि जानबूझ कर असली नामों को निकाल दिया है कि जिस से उन व्यक्तियों का कुछ भी अनिष्ट न हो सके। बाकी की सामग्री ठीक वैसी ही है जैसी हमें हमारी उस वीरांगना बहन से प्राप्त हुई थी।

—संपादक

हिज एक्सलैंसी नेताजी

श्री सुभाषचंद्र बोस

राष्ट्रपति—अरथाई-आजाद हिंद सरकार

अध्यक्ष—आजाद हिंद संघ

सिपह सालार—आजाद हिंद फौज

भभकती अग्नि

१ फरवरी, १९४२

आए दिन जिस तीव्रता से उथलपुथल मचानेवाली घटनाएं मेरे चारों ओर घट रही हैं—उन्हें नियमित रूप से अपनी डायरी में लिखने का आज फिर मैंने निश्चय किया है। इस तरह का इरादा मैंने पहिले भी कई बार किया था लेकिन उस शुभ संकल्प के सहारे कुछ दिन तक काम अबाध गति से चलता और फिर यकायक मैं उसे भूल जाती।

ऐसा जान पड़ता था कि महासत्ताओं का योरोपीय संग्राम अभी बहुत दूर है—हजारों मील दूर—मन की कल्पना से लाखों मील दूर, लेकिन उस के एक ही झपाटे से अब यह सुदूर पूर्व की पृथ्वी भी उस की ज्वालाओं में झोंक दी गई है। ब्रिटेन की शक्तिशाली नौसेना प्रशान्त की हमारी जल सीमाओं से एकदम अदृश्य हो गई है। पूर्व की दुनियां इन के हाथों से छिनती जा रही है। लोगों की ऐसी मान्यता थी कि ब्रिटेन का सूर्य कभी अस्त नहीं होगा—लेकिन अब ऐसा लग रहा है कि इस के उदय होने के लिए कोई स्थान तक नहीं मिलेगा। सच! यह अब अस्त ही रहेगा—उदय नहीं होगा। नहीं होगा!

हरकोई इसे अब महसूस करने लगा है कि ब्रिटिश साम्राज्य कोई अजेय वस्तु नहीं है! पराजय और अपमान के कलंक का टीका इस के यूनियन-जैक को भी कलुषित कर सकता है! जापानी सेनाओं ने गत वर्ष की सात दिसम्बर को अपनी पूरी ताकत के साथ 'पर्ल हारबर' पर अपना पहिला आक्रमण किया। वे बिना रुके आगे ही बढ़ते गए। पलक मारते मारते एक एक कर कई टापू उन्होंने अपने अधिकार में कर लिए। १३ तारीख को गुआम का पतन हुआ, २३ को वेक टापू, २५ को हांगकांग और २ जनवरी को मनीला का। पेनाग पर तो २० दिसम्बर से ही वे अपना अधिकार कर चुके थे। टिन उद्योग का आधार—इपोह भी २९ दिसम्बर तक उन के हाथों में आ गया था।

ब्रिटेन के साम्राज्यवादी अपनी जान बचाने के लिए दुम दबाकर भाग रहे हैं। हवाई जहाजों के अड्डों और समुद्री बंदरगाहों पर आज असंख्य भीड़ है—इतनी भीड़ कि जहाँ तिल धरने को भी जगह न मिले—जहाँ खुलकर साँस भी नहीं ली जा सके। दुनिया जिन्हें सिंहों की तरह साहसी और शक्तिशाली समझे हुए थी—वे डरपोक और पामर! आज घबराए हुए चूहों की तरह दौड़े जा रहे हैं। जापानी उन्हें बुरी तरह खदेड़ रहे हैं। अफवाहों और अत्याचारों की कहानियाँ मैं सुन रही हूँ। भय और घबराहट मुझे घेरे हुए हैं। मैं भी इन की शिकार बनती जा रही हूँ और सोचती हूँ—भाग चलूँ मैं भी।

लेकिन भागकर मैं जाऊँ कहाँ? किस के पास? और किस तरह? नहीं, मैं नहीं जाउँगी भागकर, मैं यहीं रहूँगी—जहाँ मैं हूँ। क्या ख्याल करेंगे मेरे पति जब वे यहाँ आ कर इस सूने घर में मुझे नहीं पाएंगे? कहीं वे ऐसा न सोच बैठें कि संकट के इन काले दिनों में, उन्हें आग की लपटों में झुलसता हुआ छोड़ कर, मैं कायरों की तरह—विश्राम लेने के लिए सुख की खोज में निकल पड़ी थी। नहीं—मैं ऐसा नहीं होने दूँगी। विदा होते होते उन्होंने मुझे कहा था कि सिंगापुर में ही आकर मैं तुम से मिलूँगा। मैं सिंगापुर में ही रहूँगी, पल घड़ी उन की प्रतीक्षा करूँगी—भले ही आसमान टूट पड़े। बिजली बरसे!! वज्र गिरे!!!

पोटेशियम साइनाइड जैसे तीव्र हलाहल की एक छोटी शीशी मैंने अपने अधिकार में कर रक्खी है। जापानी यदि मेरा सतीत्व लूटने की कोशिश करेंगे तो—तो मैं असहाय हो कर अबलाओं की तरह आँसू बहाने नहीं बैठूँगी। विष के दो घूंट मुझे अपने सतीत्व की रक्षा में सहायता देंगे। मेरे देव! यही मैं सोच रहा हूँ कि कहाँ हो इस समय तुम! कितना अच्छा हो यदि मेरी आत्मा की आवाज तुम सुन सको। कहीं भी हो—विश्वास करना—क्रूर से क्रूर अत्याचारी के सामने भी मैं झुकूँगी नहीं—स्वच्छ और सबल रह सकूँगी और तुम्हारे नाम और तुम्हारे कुल पर कलंक नहीं आने दूँगी।

सच! सिंगापुर का जीवन इन दिनों बहुत अधिक खर्चीला बनता जा रहा है। वस्तुओं के भाव बेरोक बढ़े जा रहे हैं—असाधारण गति से। हर चीज महँगी है। मेरे पास अधिक पैसे नहीं लेकिन जो भी हैं उसे भी भोजन खर्च तेजी से खत्म किए जा रहा है। जीने के लिए किसी नौकरी की खोज करनी चाहिए। पर कैसी

नौकरी ? पैरों के नीचे से जमीन खिसक रही है। भय की कल्पना से पृथ्वी में अभी ही से भूकंप जैसा आ रहा है।

२ फरवरी, १९४२

थाईलैंड की तरफ से जापानी बर्मा में प्रवेश कर रहे हैं। मरन्हुई, तेनोर और मोलमीन पर आसमान से निरंतर आग बरसाई जा रही है। यह लो, मोलमीन पर जापानी झंडा चढ़ गया। मर्तबान अभी तक आत्म रक्षा के लिए जूझ रहा है। पर कबतक ? कितने दिन ? बेकार होगा।

लोग भग रहे हैं। मलाया का डूबता हुआ जहाज उजड़ रहा है। हर व्यक्ति अपने प्राणों की रक्षा के लिए बेचैन है। जापनी विजेताओं का रास्ता साफ हो चुका। ब्रिटिश अफसर, उनकी पत्नियाँ, उन के बच्चे—कुछ बेतहाशा भगे जा रहे हैं—कुछ जान ले कर भगचुके हैं। हाय! प्राणों का मोह! जीवन की ममता!! जापानी तीन ओर से हमारे सिंगापुर पर हमला बोल चुके हैं। बार, क्लुआग और मर्सिंग की तरफ से वे हम पर चढ़े आ रहे हैं। देखते ही देखते मलाया की धरती से वे हमें काट कर अलग कर देंगे। क्या हम अपने नगर की रक्षा कर सकेंगे ? बर्मा की पेगु और सितांग घाटी पर तो जापनी फौज ने पहिले से ही अधिकार कर लिया है।

अधिकारी अभी तक डींगें हाक रहे हैं कि सिंगापुर अजेय है। लेकिन कौन इन पर आज विश्वास करता है ? इन की इज्जत और आबरू आज मिट्टी में मिल चुकी। फिर भी भारतीयों और मलायावासियों के प्रति इन के दंभ में कोई कसर नहीं आई है। मूज जल गई लेकिन उस का बट नहीं गया।

"भगो! भगो!" दौड़ भाग के इस हल्ले गुल्ले के सिवाय दूसरी कोई बात ही सुनाई नहीं देती। भगे जा रहे हैं लोग, पता नहीं कहाँ जा रहे हैं, किधर जा रहे हैं, बिना पते, बिना ठिकाने, जहाँ भी भाग्य ले चले। लेकिन इतना जानते हैं कि ऐसी जगह जाएं जहाँ जापानियों का खूनी पंजा उन्हें हथिया नहीं सके। यही मनोदशा काम कर रही है।

मेरा विश्वास है—सिंगापुर पर जापानी अधिकार होने के पहले हिन्दुस्तानियों की आधी बस्ती मलाया छोड़ चुकी होगी। ब्रिटेन की इस गुलामी ने हमें इन्सान से केवल भेड़ बकरी जैसा लकीर का फकीर बना छोड़ा है।

१५ फरवरी, १९४२

पिछले कुछ दिनों से डायरी लिखने को मैं अवसर ही नहीं निकाल सकी। होनी हो कर ही रही। अजेय दुर्ग जीत लिया गया। सिंगापुर पर अब ब्रिटेन का झंडा नहीं फहराता। इस नौ-सेना के अड्डे के निर्माण में ४५ करोड़ रुपयों की आहुति लगी थी। आज यह नगर पूरा जापानियों के हाथों में पहुँच चुका है। आज १५००० ब्रिटिश १३००० आस्ट्रेलियन और ३२००० भारतीय सैनिकोंने हथियार डालकर आत्म-समर्पण कर दिया है। इस तरह पलक मारते ही मलाया का प्रकृति-रम्य प्रदेश और ५० लाख की आबादी जापानियों के कब्जे में चली गई है।

लोग घबरा गए हैं। लेकिन चलते रास्ते छः सात व्यक्तियों ने मुझे अभिवादन के बाद बताया कि जापानियों ने हम लोगों के साथ अभी तक कोई असभ्य व्यवहार नहीं किया है।

संसार की टिन और रबर का सब से बड़ा उत्पादक केन्द्र मलाया—३८ % टिन और ४३ % रबर आज जापान के कब्जे में चला गया है।

सारी परिस्थिति का मुझे सिंहावलोकन करना होगा। जापानियों की विजय और प्रसन्नता से क्या मुझे प्रसन्नता है? नहीं कह सकती कि वास्तव में मुझे प्रसन्नता है। श्रीज. इस से प्रसन्न थे और वे अपनी प्रसन्नता के कारण भी मुझे बता रहे थे। इन की वृत्ति निर्णयात्मक है। सम्भवतया मैं जरा विशाल दृष्टि से काम लेना चाहती हूँ। मलाया की धरती पर आए हुए इस नए संकट को बिना समझे और बारीकी से अवलोकन किए बिना, कोई भी निश्चित राय कैसे बनाई जा सकती है।

श्री ज. कह रहे थे कि उन्हें घटनाओं की सही सच्ची जानकारी है और वे अपने व्यक्तिगत अनुभव के सहारे ही सारी बातें कह रहे हैं। उत्तर में ब्रिटिश जमींदारियाँ हैं। वहाँ हाल ही में मजदूरों पर जो गोलियाँ चलाई गई थीं—इस की चर्चा श्री ज. ने मुझ से की। श्री ज.. ने बताया कि मजदूरों का अपराध केवल यही कि युद्ध की बढ़ती हुई महँगाई के कारण उन्होंने अपने वेतन में वृद्धि की माँग की थी। श्री ज. को इस बात पर भी बहुत अधिक रोष था कि ब्रिटिश समाचार पत्र विचार और वाणी स्वातन्त्र्य का पूरा पूरा उपभोग कर रहे थे, जब कि भारतीय पत्रों पर कड़ा सेंसर था।

रंग द्वेष और रंग भेदके कारण हिन्दुस्तानियों को अपमानित करने वाली कई घटनाएं तो मैं खुद जानती हूँ। सिंगापुर स्वीमिंग क्लब में योरोपियनों के अतिरिक्त

किसी को प्रवेश की आज्ञा नहीं थी। भारतीयों को तो उस में घुसने तक की इजाजत ही थी नहीं। इस अपमान और तिरस्कार के विरोध में कुछ हिन्दुस्तानी अफसरों ने बहुत जोर से अपनी आवाज बुलन्द की थी जिस के परिणामस्वरूप उन्हें भीतर जाने की इजाजत मिली—लेकिन एक शर्त के साथ—"वे भीतर जा सकते हैं लेकिन नहाने के हौज में युरोपियनों के साथ नहा नहीं सकते।" वे भीतर जाए लेकिन नहाने के हौज से दूर, दूर ही रहें। क्या आसमान टूट पड़ता यदि ब्रिटिश और हिन्दुस्तानी अफसर एक ही साथ एक ही हौज में नहा लेते? भगवान जानें! दंभ और गरूर की भी कोई हद होती है!

मेरे देव! तुम कुशल तो हो न? मुझे तुम्हारे आगे यह स्वीकार करने दो कि मैं इस समय डर रही हूँ—डर रही हूँ इसलिए कि तुम्हें तो कहीं युद्ध हो नहीं गया है? मैं घड़ी भर के लिए भी चैन से बैठ नहीं सकती—सो नहीं सकती। तुम्हारा बिना कुशलक्षेम जाने मेरा आराम कैसा? मेरे देव! मैं जानना चाहती हूँ—जानना चाहती हूँ कि तुम कैसे हो—कहां हो?

लपटों के बीचमें

१६ फरवरी, १९४२

यहाँ के सभी हिन्दुस्तानीयों में चेतना की एक नई लहर दौड़ गई है। चारों ओर उत्साह है—जागरण है—स्फूर्ति है। हर बात में दृढ़ता है। मेज पर हाथ पटक, आवेश से भुजाओं को उठाकर—बात करने का तरीका है आज। यह सब किस लिए हो रहा है? क्यों हो रहा है? इन सब के कारणों से यदि कोई परिचित नहीं है तो यही ख्याल करेगा हर कोई कि हिन्दुस्तानियों की यह सारी की सारी कौम आज किसी सामूहिक उन्माद की शिकार हो गई है।

जापानी सेना के सदर मुकाम के मेजर फूजीवारा ने आज कुछ प्रमुख हिन्दुस्तानियों को अपने यहाँ बुलाया था। जापानी सदर मुकाम से लौट आने पर उन्होंने ड्राइंग रूम में एकत्रित जनसमूह के आगे जिस समय जापानी अधिकारियों से अपनी मुलाकात का विवरण पेश किया—उस समय निश्चल शान्ति थी। एक दूसरे के हृदयों की धड़कनें भी स्पष्ट सुनाई दे रही थीं! सभी मन्त्रमुग्ध होकर सुनने में व्यस्त थे। उन्होंने बताया कि मेजर फूजीवारा सज्जनता की साक्षात्

प्रतिमा सा था। बहुत ही सज्जनता का उसने व्यवहार किया और विनम्रता से उसने समझाना शुरू किया कि, "इंग्लैंड की फौजी ताकत का अंत कर दिया गया है। वह अपनी प्रतिष्ठा खो चुकी। हिन्दुस्तानियों को अपने मुल्क की स्वाधीनता का संग्राम शुरू करने के लिए इस से बढ़कर उपयुक्त अवसर हाथ नहीं आ सकता। जापानी हिन्दुस्तानियों को हर तरह से सहायता करने को तैयार हैं। पहले के लिए हिन्दुस्तानी ब्रिटिश सल्तनत की रिआया है और सैद्धान्तिक दृष्टि से जापान के शत्रु ही माने जाने चाहिए। पर नहीं—जापानी जानते हैं कि हिन्दुस्तानी अपनी इच्छा से ब्रिटिश सल्तनत की रिआया नहीं हैं, और इसलिए जापानी फौजें उनके साथ शत्रुओं जैसा व्यवहार नहीं करेंगी। यदि हिन्दुस्तानी ब्रिटिश हुकूमत की रिआया होनेसे इन्कार करने का निश्चय करते हों तो जापान उनके साथ बराबरी के मित्रों की तरह व्यवहार करने को तैयार है। मेजर फूजीवारा ने सुझाया कि हिन्दुस्तानी यदि आजाद लीग जैसी संस्था की स्थापना करें तो वह इस कार्य के संचालन के लिए हम हर तरह की सुविधा देने के लिए तैयार हैं।"

भारतीय नेता इस सुझाव पर एकमत नहीं थे। उन में से अधिकांश को जापानियों के इरादों की सचाई में संदेह था इसलिए उन्होंने सम्मिलित रूप से मेजर फूजीवारा को यही उत्तर दिया कि अपनी इस सहानुभूति के लिए हम आप के आभारी हैं लेकिन हमें इस प्रश्न पर सब तरफ से थोड़ा और विचार विनिमय करना होगा। तब कुछ दिन बाद हम आप से फिर दुबारा मिल सकेंगे।

मेरे देव! तुम्हारी तरफ से अभी कोई समाचार नहीं मिल रहे हैं। क्या बात है? मैं अभी तक आँखों में उत्साह और चहरे पर मुस्कराहट लिए घूमती हूँ। अपनी दिल्लगी और मजाक से शरीक होती हूँ और प्रयत्न करती हूँ कि इन चर्चाओं ने जिस स्फूर्ति और प्रेरणा को जगा दिया है, उन में हर समय तल्लीन रह सकूँ। पर मेरे भीतर ही भीतर किन मानसिक व्यथाओं का ज्वालामुखी सुलग रहा है उसे कौन जानता है? मेरे हृदय की प्रत्येक धड़कन में प्रतिक्षण तुम्हारे नाम का अखण्ड जप चल रहा है। हर सांस तुम्हारी मंगलकामना कर रही है। प्रभु! उन्हें कुशल रखना, उन्हें सम्हाले रहना, उन की रक्षा करना।

२१ फरवरी, १९४२

हमारे कौमी नेताओं ने मेजर फूजीवारा को एक सन्देश उत्तर भेज दिया है। उन्होंने लिखा है कि इस तरह का गंभीर निर्णय लेने के पहले यह जरूरी है कि

मलाया के सभी भारतीय नेताओं से परामर्श कर लिया जाए। मेजर फूजीवारा को इन्होंने यह भी सुचित किया है कि मलाया में सेंट्रल इंडियन एसोशिएशन नाम की एक सस्था है और परामर्श के लिए उसके सभापति श्री एन राघवन से वे मिलना चाहते हैं। इसलिए उन्होंने मेजर फूजीवारा को सुझाया कि श्री राघवन सिंगापुर को बुलाए जाए।

इसलिए आगामी महीने के पहिले सप्ताह तक मलाया के सभी भारतीय नेताओं के बीच में इस सबन्ध में मंत्रणा होने की सभावना है। सिंगापुर में जनमत बटा हुआ है। अधिकांश लोगों की राय है कि आजाद हिन्द लीग की स्थापना कर दी जाए और जापानियों के इरादों का परीक्षण किया जाए। हम अपनी ओरसे यह स्पष्ट कर दें कि हम अपनी सेवाए केवल और केवल भारतीय स्वाधीनता के लिए ही अर्पित करेंगे।

लेकिन कुछ लोगों की मान्यता है कि अब भी ब्रिटिश पीछे आएंगे, इसलिए हमारे लिए अच्छा यही है कि अधिक नहीं तो महीने दो महीने और ठहरें और देखें कि ऊट किस करवट बैठता है? जागरुकता और सावधानी सदा अच्छी। दूध का जला छाछ भी तो फूंक फूंक कर पीता है।

२३ फरवरी, १९४२

जापानियों ने अजेय सिंगापुर को किस तरह फतह किया इस की कहानी मैंने अभी अभी सुनी है। युद्ध बंदियों की छावनी में कुछ हिन्दुस्तानी अफसर भी है। श्रीक...उन से बड़ी शिविर में मिले और इस सब की उन्होंने जानकारी प्राप्त की।

सिंगापुर—हमारा सिंहपुर जापानी चक्र व्यूह में आ गया। निसंदेह यह अजेय और अभेद्य था यदि कोई प्रशान्त महासागर की लहरों पर चढ़कर इस पर आक्रमण करने आता लेकिन इस की धूल और मिट्टी पर चार पांच सुमात्रा से इस पर आक्रमण कर के इसे जीत लेना तो बच्चों का खेल मात्र था। जनरल बेनेट की अध्यक्षता में काम करनेवाली आस्ट्रेलियन फौजों को जौहर के मरुस्थल का काम सौंपा गया था। लेकिन ये फौजी टुकड़ियें जापानियों के सामने अपने पैर नहीं जमा सकी और उल्टे पांवों सिंगापुर में शरण लेने को भागकर चली आई।

और फिर सारे सिंगापुर को पानी पहुंचाने वाले तालाब जौहर में था। जापानियों ने सिंगापुर को पानी पहुंचाने वाले नल काट दिए। ऐसी स्थिति में,

विवश हो कर, आत्म समर्पण कर देने के अतिरिक्त सिंगापुर के पास दूसरा कोई उपाय ही नहीं रहा।

उन अंग्रेज अफसरों को—जिन्होंने सिंगापुर को अजेय और अभेद्य घोषित किया था भारतीय सेनापतियों ने "फौजी बुद्धुओं" का खिताब दिया है। श्री क.. का कहना है कि ब्रिटिश सेनापतियों को जापानियों ने बुरी तरह पछाड़ दिया है। उन्हें आधुनिक किलेबन्दी और रणव्यवस्था के क. ख. ग. की भी जानकारी नहीं है। जो यह भी नहीं जान सके कि थाइलैंड ही मलाया आने का राजमार्ग है उन की बुद्धि के विषय में क्या कहा जाय? इतनी सी बात तो एक बालक भी नकशे की ओर आंख उठा कर समझ सकता है।

श्री ग.. ने आगे बताया कि जिस समय जापानियों ने कोटा बहारु से अपने आक्रमण शुरु किये उस समय ब्रिटिश फौजों के पास मुकाबिले के लिए मलाया में एक भी टैंक नहीं था। उन की फौजें पेंजर डुबडियों से एक दम सूनी थीं। थोड़ी बहुत बखतर गाड़ियां थी जरूर पर वे भी पेलेस्टाइन के युद्ध से छीनी हुई। उन में से कुछ तो पचीस पचीस वर्ष पुराने मोडल की थी जो आधुनिक गोलाबारी का सामना करने के लिए एकदम निकम्मी और बेकाम। इन का उपयोग तो नुमायशी गाड़ियों की तरह केवल आतंक पैदा करने के लिए उस जगह किया जा सकता है यदि कहीं दंगा हो जाए और दंगा करने वाली दोनों टोलियाँ निशस्त्र हों। इन गाड़ियों में भारी मशीनगनें तक नहीं थी। ऐसी स्थिति में यदि जापानी अपना रास्ता साफ पाकर सीधे बढ़ते ही आते तो कोई आश्चर्य की क्या बात?

और मलाया के ब्रिटिश शासन का नागरिक पहलू भी भीतर से ठीकऐसा ही खोखला और सड़ा सा था। मैंने अपनी आंखों से देखा है कि जब जापानी सगीनें मलाय की आधी धरती पर अधिकार कर चुकी थी उस समय तक ये गोरांग 'बड़े साहब' निश्चिंतता से रात रात भर नाच गान की पार्टियों में गुलछर्रे उड़ाया करते थे।

श्रीक.. को सुदूर पूर्व के ब्रिटिश सेनापति ब्रूक-पोपहाम की वह मुलाकात अभी भी याद है जो उसने मलाया, पर्ल-बन्दरगाह और मनीला पर जापानी आक्रमण शुरु होने के पाँच दिन पहिले दी थी। ३ दिसम्बर का वह दिन था। श्रीक...का कहना है कि उस के वे शब्द अभीतक उन के कानों में गूंज रहे हैं—"टोजो अपना सिर खुजला रहा है। जापानियों की अक्ल पर पत्थर पड़ गए हैं; उन्हें

समझ में नहीं पड़ता कि किधर से आक्रमण करें। उन के पास कोई निश्चित रणनीति ही नहीं है। ब्रिटिश और अमेरिकनों को छेड़ने की वे हिम्मत न करें इसी में भलाई है उन की। यदि भूले भटके यह दुस्साहस कर बैठे तो ऐसा सबक सिखाएंगे उन नकालों को कि छठी का दूध याद आ जाएगा। हम उन के आक्रमण के लिए तैयार हैं।"

और जापानियों ने वह दुस्साहस किया। उन्होंने 'प्रिन्स ऑफ वेल्स' और 'रिपल्स' जैसे दो सर्वश्रेष्ठ ब्रिटिश युद्ध पोतों को समुद्र की तह में सुला दिया—इतनी आसानी से—देखते ही देखते कि जैसे खेल ही खेल में बच्चों ने पानी के नन्हे से हौज में कागज की नौकाएं डुबा दी हों।

क्या ब्रिटेन के सिंहों ने सचमुच ही अपनी कब्र खोदनी शुरू कर दी है। लग तो कुछ ऐसा ही रहा है, सचमुच।

२८ फरवरी, १९४२

आ हा.. हा...आखिर शुभ घड़ी आई। मेरे पति के समाचार मुझे मिले। उन्हें युद्ध बन्दी बना कर बन्दी शिविर में रक्खा गया है। ऐसा लगता है कि इन की टुकड़ी के लिए जापानियों के आगे आत्म समर्पण कर देने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं था। इन के सामने दो ही मार्ग थे—या तो जापानी टैंकों के नीचे निरर्थक रौंदे जाकर अपने प्राण दे देना या फिर समर्पण कर देना। इन्होंने आत्म समर्पण करना ही ठीक समझा तो उस में आश्चर्य किस बात का? इन के पास न काफी तादाद में बन्दूकें थीं और न ही था इन के पास हवाई जहाजों का पुट बल! इतने पर भी जो कमी थी उसे आस्ट्रेलियनों ने कायरों की तरह मैदाने जंग से भग कर पूरी कर दी। अब तो इन की रक्षा शक्ति भी टूट चुकी थी। ऐसी स्थिति में ये और कुछ करते भी तो क्या?

मैंने सुना है कि हथियार डाल देने की जब आज्ञा सुनाई गई उस समय सैनिकों की आँखों में आँसू छलछला पड़े थे।

लेकिन सब से बड़ी बात तो यह है कि वे सुरक्षित हैं। मैंने उन से मुलाकात करने के लिए जापानी सेनापति को अर्जी दी है। उन्हें भोजन, कपड़े, पढ़ने को किताबें और जरूरत का अन्य सामान भेजने के लिए भी इजाजत माँगी है।

मुझे विश्वास हो रहा है कि वे जल्दी ही मुक्त कर दिए जायेंगे क्योंकि आज़ाद हिन्द लीग की स्थापना होते ही भारतीय की चिन्ता भारतीयों को ही अधिक होगी और उस समय वे अवश्य मुक्त हो सकेंगे।

घटनाओं की माला में एक कड़ी पिरोना मैं भूल गई। श्री रासबिहारी बोस ने एक तार द्वारा यहाँ के सभी प्रमुख भारतीयों को टोकियो सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए निमंत्रित किया है।

११ मार्च, १९४२

मेरी डायरी! तुम्हें तो इन दिनों बिलकुल ही भूल गई थी मैं। चलो, अब ही सही। सभी घटनाओं का लेखा जोखा लेलूँ।

वे आनन्द में हैं। मैं उन से मिल आई हूँ। छावनी कमाण्डर के दफ्तर में मुझे देखते ही उन का चेहरा आनन्द से खिल उठा था। लेकिन उन्हें बहुत अधिक कष्ट सहन करने पड़े हैं। उन के चेहरे पर चिन्ता की गहरी रेखाएं और उन की अंगुलियों के नाते भीने आन्ध मेरी नजर से बच नहीं सके। उन्होंने मुझे बताया कि जापानी सेनापति ने अंग्रेज सेनापतियों को शत्रु प्रदेश में घुसते समय अपनी नई रण-विधि द्वारा किस तरह से करारी शिकस्त दी थी। पश्चिमी किनारे पर जापानी लगातार सेना उतार रहे थे पर साथ ही हमारी टुकड़ियों के पीछे भी वे लगातार मोर्चाबंदी करते थे। ब्रिटिश फौजों के दो बार पीछे हटने पर जापानियों ने पीछे से उन पर हमला कर के उन्हें सैकड़ों और हजारों की संख्या में कैद किया। तब तो अंग्रेज सेनापति एकदम अचम्भे में पड़गए। वे जापानी रणचातुरी और व्यूहरचना को समझने में ही असमर्थ रहे थे।

रंगून जापानियों के हाथ में है। चार दिन पहिले ब्रिटिश इसे असहाय छोड़ कर भाग खड़े हुए थे। अभागा रंगून! श्वेडेगोन पगोडा का जगत प्रसिद्ध रंगून! भगवान बुद्ध के दो बालों से पवित्र बना हुआ रंगून! आज जापान के अधिकार में आ गया!

हिन्दुस्तानियों का पहिला सम्मेलन हो गया। यहीं सिंगापुर में कल और परसों इस सम्मेलन के जलसे हुए थे। लेकिन अब इसे सिंगापुर नहीं कहना चाहिए। जापानियों ने इसे दूसरा नाम दे दिया है। अब तो यह है 'स्योनान'—दक्षिण का आलोक! दक्षिण की ज्योति!

सम्मेलन मे एक स्वयंसेविका की तरह मैंने भी अपनी सेवाएं अर्पित की थी। सारे मलाया से प्रतिनिधि आए थे। थोड़े बहुत थाइलैंड से भी आए। श्री रास-बिहारी बोस ने टोकियो सम्मेलन के लिए थाईलैंड और मलाया से विधिपूर्वक प्रतिनिधि मंडल भेजने की अपील की थी। इस के लिए जापानी बहुत उत्सुक थे। लेकिन हमारे नेताओं ने बहुत ही सावधानी से कदम बढ़ाने का निश्चय किया है। उन्होंने प्रतिनिधि मंडल के स्थान पर एक शुभेच्छा शिष्ट-मंडल भेजने का निश्चय किया है। टोकियो सम्मेलन में जो रास्ता निश्चित होने वाला है उस को बिना जाने पहिचाने ये लोग उसे अग्रिम रूप से स्वीकार कर लेना नहीं चाहते। इस के दरम्यान वे स्थानीय जापानी सेनापतियों पर दबाव डाल रहे हैं सभी भारतीयों को जापानी जेलों से मुक्त कर देने के लिए।

२३ मार्च, १९४२

मैं अपने पति से कई बार मिल चुकी हूँ। उन का कहना है कि बन्दी शिविर में सभी भारतीय बंदी दिल खोल कर एक दूसरे से चर्चाएं करते हैं। अधिकांशों का मत है कि यदि जापानियों ने उन्हें अपने साथ मिल जाने के लिए कहा तो वे साफ इन्कार कर देंगे। लेकिन यदि उन्हें भारत की आजादी के लिए प्रयत्न करने का एक अवसर दिया जाय और ब्रिटिश-साम्राज्यवाद से भारत को मुक्त करने के लिए सैन्य संगठन के काम में यदि जापानी उन्हें मदद दें तो वे खुशी खुशी इसे स्वीकार करेंगे। लेकिन वे इस के लिए पहिले आश्वासन चाहते हैं। उन का कहना है कि फौज में भर्ती होते वक्त उन्होंने जिस वफादारी की शपथ ली थी वह सैन्य मुल्क के प्रति वफादारी की है। मेरे पति कहते थे कि शपथ का यह दृष्टिकोण सभी बन्दियों में तीव्रता से लोकप्रिय होता जा रहा है। लेकिन जापानियों के इरादों के प्रति वे बहुत शंकाशील हैं। चीनियों के प्रति जापानियों ने जो क्रूरताएं की थीं उन को इन्होंने अपनी आँखों से देखा है और जापानियों की फैसिस्ट मनोवृति तो इन्हें एकदम ना-पसन्द है। उन्हें स्वाधीनता का संग्राम लड़ने के लिए विशुद्ध और पवित्र हाथों की जरूरत है। हिन्दुस्तान की आजादी के लिए वे हिन्दुस्तानी फौज चाहते हैं जिसमें सैनिक और अफसर दोनों ही हिन्दुस्तानी हों। यदि यह सब उन्हें प्राप्त नहीं हो सके तो वे और कुछ भी करने को तैयार नहीं हैं। वे मर जावेंगे सड़ सड़ कर—मौत से भी अधिक भयंकर दुखदाई यातनाएं और कष्ट झेलना वे पसन्द

मैं श्री रा. से आज काफी लम्बे वक्त तक गुफ्तगू करती रही। आदमी वह एकदम सुलझा और सधा है। वह कहता था कि युद्ध में विजय प्राप्त कर लेने से ही किसी को मेरे हृदय पर हुकूमत करने का अधिकार नहीं मिल जाता। 'मेरे शरीर को वह बन्धन में रख सकता है पर मेरे मस्तिष्क पर शासन करने के लिए उसे खाने खाने पड़ेंगे। मेरे निर्णय, मेरी विचारबुद्धि, मेरी संकल्पशक्ति, मेरी पसंदगियां और मेरी पूर्व-धारणाएं मेरा अपना साम्राज्य है। गला घोंट पशुबल के सहारे प्राप्त की हुई विजय का मेरे इस मनोराज्य पर कोई अधिकार नहीं हो सकता। भौतिक विजय यदि मुझ पर किसी गुलामी थोपना चाहे—तो इसे स्वीकार करने की बजाय मैं यह अच्छा समझूंगा कि मृत्यु का आलिंगन कर लूं।

सचमुच मैं भी इसी तरह ही सोचती हूं। शत प्रतिशत उन के विचारों से मैं सहमत हूं। उन्हें कह दिया है मैंने कि विरजम करें आप—मैं और मेरे पति दोनों आपके साथ हैं—यही समझो कि कल से कल दो अनुयायी तो आप को

आज से मिल ही गए।

येनाग युग के तेल क्षेत्र २० अप्रेल को जापानियों के हाथ आ गए। जापानियों ने यह घोषणा की है कि छ महीने के भीतर नियमानुसार इन से तेल निकाला जा सकेगा।

आज मैंने बर्लिन रेडियो सुना। श्री सुभाष बोस बोल रहे थे। सिंगापुर के बच्चे बच्चे ने उसे सुना। मैं अपनी 'शोर्ट हैन्ड नोटबुक' ले कर बैठी थी। यहां आगे उन के भाषण के कुछ वाक्य मैं उद्धृत करूंगी। शीघ्रलिपि में हिन्दुओं और सकीतों के सहारे उनके भाषण को जब मैं लिख रही थी उस समय भी उन की वक्तृत्व शक्ति ने मुझे कायल कर दिया। वह हम सब के लिए स्वर्ग दिव्य योग जन श्री सुभाषचन्द्र बोस यहां पर रेंगे।

"अंग्रेज कितना ही उलटा सीधा प्रचार करें लेकिन जिन्हें भगवान ने विचार शक्ति दी है उन सभी भारतीयों को मालूम हो जाना चाहिए कि इस लम्बे चौड़े ससार में हिन्दुस्तान का एक और केवल एक ही शत्रु है और वह है—ब्रिटिश साम्राज्यवाद, जो सौ वर्षों से उन का शोषण कर रहा है और जिस ने हमारी जननी जन्मभूमि को खून चूस चूस कर निर्जीव कर दिया है।"

"धुरी राष्ट्रों की रक्षा के लिए मुझे वकालत नहीं करना है। यह मेरा काम नहीं। मेरा सम्बन्ध हिन्दुस्तान से है।"

करेंगे। बेशक उनमें ब्रिटिश-साम्राज्यवाद के प्रति नफ़रत और हिकारत के भाव सर्वव्यापी हैं और अन्तरतम में जड़ें जमाचुके हैं लेकिन मेरे पति का कहना है कि वे फिर भी जापानियों की कठपुतली बनकर एक क्षण भी जाना पसन्द नहीं करेंगे—नहीं करेंगे। देश प्रेम उन की नसों में कूट कूट कर भरा हुआ है।

रेडियो पर अभी अभी समाचार सुने हैं। एन्डमन द्वीप समूह पर आज जापानियों ने अधिकार कर लिया। हिन्दुस्तान पर क्या हमला शुरु हो गया ?

३१ मार्च, १९४२

जापान, चीन, मलाया और थाइलेंड के हिन्दुस्तानियों का सम्मेलन टोकियो में हो गया। श्री रास बिहारी बोस ने सभापतित्व किया था। २८ से ३० तारीख तक अधिवेशन होते रहे। थाइलेंड से भारतीय प्रतिनिधियों को लेजानेवाला वायुयान दुर्घटना का शिकार हो गया। इस दुर्घटना में आदरणीय स्वामी श्री सत्यानन्द पुरी का देहान्त हो गया। हिन्दुस्तानियों का बड़ा सहारा टूट गया।

सम्मेलन ने 'आज़ाद हिन्द लीग, की स्थापना की। "किसी भी प्रकार के विदेशी आधिपत्य, हस्तक्षेप और अंकुश से मुक्त सपूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करना" इस लीग का उद्देश्य है।

सम्मेलन का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण निर्णय आज़ाद हिन्द फौज संगठित करने का है। टोकियो सम्मेलन ने यह भी निश्चय किया कि जून के महीने में पूर्वी एशिया के भारतीयों का एक सपूर्ण प्रतिनिधिक सम्मेलन बेंकोक में बुलाया जाए।

यह सम्मेलन आज़ाद हिन्द लीग का अधिकृत रूप से उद्घाटन करेगा और अपनी कार्य कारिणी का चुनाव भी कर लेगा।

शाबास! मेरे बन्धुओं। खूब किया तुमने। टोकियो के सिंहों की गुफा में जाकर अपने देश के उत्तमोत्तम हितों को सपूर्ण सरक्षण देने वाले निर्णय तुम कर आए।

मेरे देव! वह दिन अब दूर नहीं है जब तुम्हें मैं अपने घर लाकर तुम्हारी देख भाल कर सकूँ। युद्ध बंदियों की मुक्ति में अब देर नहीं की जासकती। फिर भी मेरी व्यग्रताओं का पार नहीं है। मन में एक एक करके आशकाएं उठती ही रहती है कि कि..

१९ अप्रैल, १९४२

वे अभी तक युद्ध बन्दी शिविर में ही हैं। इन की मुक्ति की बात हर रोज सुनी जाती है लेकिन अब तो एक एक दिन एक एक युग की तरह लम्बा लगने लग गया है। टोकियो सम्मेलन से आए हुए हमारे नेताओं ने मत को यही सलाह दी है कि जो भी निर्णय किया जाए, बहुत ही गम्भीरता से सोच विचार कर किया जाए। नेताओं की इच्छा है कि जो भी कदम उठाया जाए वह सर्व सम्मति ही से उठाया जाए। जापानियों ने हिन्दुस्तान की स्वाधीनता और आजाद हिन्द लीग के सबंध में अभी तक सार्वजनिक रूप से कोई निश्चित घोषणा नहीं की है।

इसलिए अभी और प्रतीक्षा करनी पड़ेगी प्रियतम के मिलन के लिए, लेकिन यह प्रतीक्षा कितनी असह्य—कितनी दर्दनाक है—इसे मेरा ही जी जानता है।

इसी बीच मैंने एक काम हाथ में ले लिया है। आजाद हिन्द लीग की मलाया की सभी शाखाओं का एक सम्मेलन इसी महीने की २२ तारीख को स्योनान में बुलाया गया है। मैं कोशिश करती हूँ कि इस काम में दिनरात व्यस्त रहूँ। लेकिन मैं घर पहुँचूंगी तब ?

चीनियों का अस्तित्व जापानियों को आँख के काँटे की तरह खटक रहा है। मलायावासी भी इन्हें नफरत की निगाहों से देखते हैं। जापानी सैनिकों द्वारा चीनियों पर किए गए अत्याचार और नीचतापूर्ण दुर्व्यवहार की अनेकों अफवाहें सुनाई दे रही हैं।

मेरी पटेशियम साइनाइड की शीशी अभी तक मेरे पास—निरंतर वह मेरे पास ही रहती है।

२६ अप्रैल, १९४२

अखिल मलाया कान्फ्रेंस तीन दिन तक होती रही। २२—२३ और २५ को। विभिन्न शाखाओं की प्रवृत्तियों को एक सूत्र में सगठित करने और निरीक्षण तथा मार्गप्रदर्शन करने के लिए एक केन्द्रीय समिति का निर्माण किया गया है। प्रत्येक शाखा प्रशाखा द्वारा अब स्वास्थ्य, सामाजिक कल्याण, रोगोपचार और राजनैतिक सगठन का काम किया जाएगा। हर शाखा का यह लक्ष्य होगा कि अपने क्षेत्र में रहनेवाले प्रत्येक भारतीय को वह आजाद हिन्द लीग के लिए कुछ न कुछ काम के लिए क्रियाशील बनावे।

करेंगे। बेशक उनमें ब्रिटिश-साम्राज्यवाद के प्रति नफरत और हिकारत के भाव सर्वव्यापी है और अन्तरतम में ज्हें जमाचुके है लेकिन मेरे पति का कहना है कि वे फिर भी जापानियों की कठपुतली बनकर एक क्षण भी जीना पसन्द नहीं करेंगे—नहीं करेंगे। देश प्रेम उन की नसों में कूट कूट कर भरा हुआ है।

रेडियो पर अभी अभी समाचार सुने हैं। एन्डमन द्वीप समूह पर आज जापानियों नें अधिकार कर लिया। हिन्दुस्तान पर क्या हमला शुरु हो गया ?

३१ मार्च, १९४२

जापान, चीन, मलाया और थाइलेंड के हिन्दुस्तानियों का सम्मेलन टोकियो में हो गया। श्री रास बिहारी बोस ने सभापतित्व किया था। २८ से ३० तारीख तक अधिवेशन होते रहे। थाइलेंड से भारतीय प्रतिनिधियों को लानेवाला वायुयान दुर्घटना का शिकार हो गया। इस दुर्घटना में आदरणीय स्वामी श्री सत्यानन्द पुरी का देहान्त हो गया। हिन्दुस्तानियों का बड़ा सहारा टूट गया।

सम्मेलन ने 'आजाद हिन्द लीग, की स्थापना की। " किसी भी प्रकार के विदेशी आधिपत्य, हस्तक्षेप और अंकुश से मुक्त सपूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करना " इस लीग का उद्देश्य है।

सम्मेलन का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण निर्णय आजाद हिन्द फौज संगठित करने का है। टोकियो सम्मेलन ने यह भी निश्चय किया कि जून के महीने में पूरी एशिया के भारतीयों का एक सपूर्ण प्रतिनिधिक सम्मेलन बैंकोक में बुलाया जाए।

यह सम्मेलन आजाद हिन्द लीग का अधिकृत रूप से उद्घाटन करेगा और अपनी कार्य कारिणी का चुनाव भी कर लेगा।

शाबास! मेरे बन्धुओं। खूब किया तुमने। टोकियो के सिहों की गुफा में जाकर अपने देश के उत्तमोत्तम हितों को सपूर्ण सरक्षण देने वाले निर्णय तुम कर आए।

मेरे देव! वह दिन अब दूर नहीं है जब तुम्हें मैं अपने घर लाकर तुम्हारी देख भाल कर सकूं। युद्ध बदियों की मुक्ति में अब देर नहीं की जासकती। फिर भी मेरी व्यग्रताओं का पार नहीं है। मन में एक एक करके आशकाएं उठती ही रहती है कि ..कि...

१३ अप्रैल, १९४२

वे अभी तक युद्ध बन्दी शिविर में ही हैं। इन की मुक्ति की बात हर रोज सुनी जाती है लेकिन अब तो एक एक दिन एक एक युग की तरह लम्बा लगने लग गया है। टोकियो सम्मेलन से आए हुए हमारे नेताओं ने सब को यही सलाह दी है कि जो भी निर्णय किया जाए; बहुत ही गंभीरता से सोच विचार कर किया जाए। नेताओं की इच्छा है कि जो भी कदम उठाया जाए वह सर्व सम्मति ही से उठाया जाए। जापानियों ने हिन्दुस्तान की स्वाधीनता और आजाद हिन्द लीग के संबंध में अभी तक सार्वजनिक रूप से कोई निश्चित घोषणा नहीं की है।

इसलिए अभी और प्रतीक्षा करनी पड़ेगी प्रियतम के मिलन के लिए; लेकिन यह प्रतीक्षा कितनी असह्य—कितनी दर्दनाक है—इसे मेरा ही जी जानता है।

इसी बीच मैंने एक काम हाथ में ले लिया है। आजाद हिन्द लीग की मलाया की सभी शाखाओं का एक सम्मेलन इसी महीने की २२ तारीख को स्योनान में बुलाया गया है। मैं कोशिश करती हूँ कि इस काम में दिनरात व्यस्त रहूँ। लेकिन मैं घर पहुँचूँगी तब...... ?

चीनियों का अस्तित्व जापानियों को आँख के काँटे की तरह खटक रहा है। मलायावासी भी इन्हें नफरत की निगाहों से देखते हैं। जापानी सैनिकों द्वारा चीनियों पर किए गए अत्याचार और नीचतापूर्ण दुर्व्यवहार की अनेकों अफवाहें सुनाई दे रही हैं।

मेरी पोटेशियम साइनाइड की शीशी अभी तक मेरे पास—निरंतर यह मेरे पास ही रहती है।

२६ अप्रैल, १९४२

अखिल मलाया कान्फ्रेंस तीन दिन तक होती रही। २२—२३ और २५ को। विभिन्न शाखाओं की प्रवृत्तियों को एक सूत्र में सगठित करने और निरीक्षण तथा मार्गप्रदर्शन करने के लिए एक केन्द्रीय समिति का निर्माण किया गया है। प्रत्येक शाखा प्रशाखा द्वारा अन्न स्वास्थ्य, सामाजिक कल्याण, रोगोपचार और राजनैतिक सगठन का काम किया जाएगा। हर शाखा का यह लक्ष्य होगा कि अपने क्षेत्र में रहनेवाले प्रत्येक भारतीय को वह आजाद हिन्द लीग के लिए कुछ न कुछ काम के लिए क्रियाशील बनावे।

मैं श्री रा...से आज काफी लम्बे वक्त तक गुफ्तगू करती रही। आदमी यह एकदम सुलझा और खरा है। कह रहा था कि युद्ध में विजय प्राप्त कर लेने से ही किसी को मेरे हृदय पर हुकूमत करने का अधिकार नहीं मिल जाता। मेरे शरीर को वह बंधन में रख सकता है पर मेरे मस्तिष्क पर शासन करने के लिए उसे सते खाने पड़ेंगे। मेरे निर्णय, मेरी विचारबुद्धि, मेरी सम्पदाशक्ति, मेरी उमंगियाँ और मेरी पूर्व-धारणाएं मेरा अपना साम्राज्य हैं। शस्त्र और पशुबल के सहारे प्राप्त की हुई विजय का मेरे इस मनोराज्य पर कोई अधिकार नहीं हो सकता। भौतिक विजय यदि मुझ पर दिमागी गुलामी थोपना चाहे—तो इसे स्वीकार करने की बजाय मैं यह अच्छा समझूंगा कि मृत्यु का आलिंगन कर लूं।

सचमुच मैं भी इसी तरह ही सोचती हूं। शत प्रतिशत उन के विचारों से मैं सहमत हूं। उन्हें कह दिया है मैंने कि विश्राम करें आप—मैं और मेरे पति दोनों आपके साथ हैं—यही समझो कि कम से कम दो अनुयायी तो आप को आज से मिल ही गए।

येनांग युग के तेल क्षेत्र २० अप्रेल को जापानियों के हाथ आ गए। जापानियों ने यह घोषणा की है कि छः महीने के भीतर नियमानुसार इन से तेल निकाला जा सकेगा।

आज मैंने बर्लिन रेडिओ सुना। श्री सुभाष बोस बोल रहे थे। सिंगापुर के बच्चे बच्चे ने उसे सुना। मैं अपनी 'शोर्ट हैन्ड नोटबुक' ले कर बैठी थी। यहाँ आगे उन के भाषण के कुछ वाक्य मैं उद्धृत करूंगी। शीघ्रलिपि में बिन्दुओं और रारीरों के सहारे उनके भाषण को जब मैं लिख रही थी उस समय भी उन की वक्तृत्व शक्ति ने मुझे कायल कर दिया। वह हम सब के लिए स्वर्ण दिवस होगा जब श्री सुभाषचन्द्र बोस यहाँ पधारेंगे।

"अंग्रेज कितना ही उलटा सीधा प्रचार करें लेकिन जिन्हें भगवान ने विचार शक्ति दी है उन सभी भारतीयों को मालूम हो जाना चाहिए कि इस लम्बे चौड़े संसार में हिन्दुस्तान का एक और केवल एक ही शत्रु है और वह है—ब्रिटिश साम्राज्यवाद, जो सौ वर्षों से उस का शोषण कर रहा है और जिस ने हमारी जननी जन्मभूमि को खून चूस चूस कर निर्जीव कर दिया है।"

"धुरी राष्ट्रों की रक्षा के लिए मुझे वकालात नहीं करना है। यह मेरा काम नहीं। मेरा सबध हिन्दुस्तान से है।"

ब्रिटिश साम्राज्यवाद की जब पराजय होगी—तब ही हिन्दुस्तान को आजादी मिलेगी। और यदि ब्रिटिश साम्राज्यवाद किसी तरह इस युद्ध में विजयी हो गया तो हिन्दुस्तान की गुलामी सदा के लिए अखंडित ही रहेगी। हिन्दुस्तान के सामने इस समय अब दो ही रास्ते खुले हैं-आजादी या गुलामी। और हिन्दुस्तान को अपनी पसंदगी का फैसला कर ही लेना चाहिए।"

"ब्रिटेन के किराये के टट्टू—झूठे प्रचारक मुझे धुरी राष्ट्रों का एजेंट बता रहे हैं—लेकिन अपने देशवासियों के सामने मुझे अपनी सचाई और ईमानदारी का प्रमाण-पत्र पेश करने की कोई जरूरत नहीं। सारे जीवनभर में बरतानिया की सल्तनत के खिलाफ लगातार अडिग संघर्ष ले कर जूझता रहा हूं। यही मेरी ईमानदारी का सब से बड़ा प्रमाण पत्र है। मैं मेरे हिन्दुस्तान का आजीवन एक विनम्र सेवक रहा हूं—और मृत्युपर्यन्त यही रहूँगा। चिन्ता नहीं संसार के किसी कोने में मैं रहूँ लेकिन मेरी भक्ति और वफादारी आज तक मेरे मुल्क—मेरे हिन्दुस्तान के लिए रही है और आगे भी केवल मेरे हिन्दुस्तान के लिए ही रहेगी।"

"युद्ध के भिन्न भिन्न क्षेत्रों का यदि आप तटस्थ रह कर निष्पक्ष अध्ययन करें तो आप भी उसी निर्णय पर पहुँचेंगे जिस पर मैं पहुंचा हूं। ब्रिटिश साम्राज्य का अन्त अब बहुत निकट है और संसार की कोई ताकत अब उसे रोक नहीं सकती हिन्द महासागर की किलेबन्दी ब्रिटिश नौ सेना के हाथों से बहुत दिन हुए निकल चुकी है, मांडले का पतन भी हो चुका और ब्रह्मदेश की छाती पर से मित्रराष्ट्रों की फौजें करीब करीब खदेड़ी जा चुकी है।"

"भारत-माता के वीर दिवालो! ब्रिटिश साम्राज्य के पतन में हिन्दुस्तान की आजादी का स्वर्णोदय झाँक रहा है। मत भूलना कि हिन्दुस्तान ने अपनी स्वाधीनता का पहिला संग्राम १८५७ में शुरु किया था। मई १९४२ में आजादी का अंतिम जंग आरंभ हो चुका है। कमर कस लो! आजाद होने की घड़ी एक हाथ भी दूर नहीं है।"

"आजाद हिन्द हमें युद्ध और तलवार के बल पर हिन्दुस्तान की आजादी के लिए लड़कर प्राप्त करना होगा और तब अपने मुल्क का भावी निर्माण बिना किसी दूसरी सत्ता के हस्तक्षेप के हम पूरी स्वतंत्रता से कर सकेंगे। आजाद हिन्द की नूतन समाज रचना न्याय, समानता और भ्रातृभाव के सनातन सिद्धान्तों के आधार पर स्थिर होगी।"

बंगाल के शेरने बर्लिन से सिंहनाद किया। मुझ में मानो नया खून भर गया। उनमें बातों को ऐसे ढंग से कहने की प्रतिमा है कि वे तीर सी कलेजे में उतर जाती हैं और सीधी दिल पर असर करती हैं। मैं तो जैसे उन के दर्शन के लिए लालायित हूँ वैसे ही उन के मुख से कुछ शब्द सुनने के लिए भी। बड़ी बेचैन हूँ दव। कब वह दिन आवेगा! शायद अब मुझे अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़े।

आजाद हिन्द लीग के काम के लिए मैं अपने नेताओं के साथ दौरों पर हूँ। हम लीग के अस्तित्व को समझाते हैं और उस के लिए सदस्य बना रहे हैं।

कुल सदस्य सख्या ९५००० पर पहुँच गई है। पेनाग, पेरक, केडाह, सेलँगर, नेग्री सेम्बलिन, मल्लाका और जोहर रियासतोंने अपनी शाखाओं के अलावा २२ उप शाखाए स्थापित करली हैं। सेलँगर में तो निर्धन और बीमारों के लिए सब से बड़ा केंद्र खोला गया है। पेरक में सुगई मानेक योजना के अनुसार भारतीयों को यहाँ बसाने की बातचीत चल रही है।

मुझे असली खुशी तो इस बात कि है कि मेरे पति इस कार्य में मेरे तत्पर और कर्मण्य होने की आवश्यकता को मेरी ही तर महसूस कर रहे हैं—जिन से ही केवल, उन की और हमारे जन्मभूमि की स्वाधीनता प्राप्त की जा सकेगी। अब घर के कोनों में बैठकर आसू बहाने और पर्द के पीछे दिल मसोस कर पड़े रहने के बुरे दिन हवा हो चुके। आज भारत माता की बेटी स्वाधीन है—मैं आजाद हूँ।

मुझे दो विशेष महत्व की घटनाओं को लिखना नहीं भूलना चाहिए। २६ अप्रेल को लाशिओ के पतन के साथ साथ अब बर्मा रोड पर जापानी ताले जड़ गए हैं। पहिली मई को माडले जापानियों के हाथ लगा। आकाश से विनाश के देवताने अपना पूरा कौशल दिखाया। अब सुन्दर माडले खडहर मात्र है। पूर्व का यह दूसरा सुन्दर स्थान युद्ध के देवताकी बलिवेदी पर चढ़ा दियो गया।

२४ जून, १९४२

मैं एकदम थक गई हूँ। शरीर में जरा भी जान बाकी नहीं रह गई है। अभी अभी बैंकॉक से हम लोग लौटे हैं। वहाँ पूर्वी एशिया के समस्त भारतीयों का एक सम्मेलन हुआ था। पूरे एक सौ और पचास प्रतिनिधियों ने भाग लिया। १५ तारीख से शुरु हो कर पूरे ९ दिन बाद कल ही सम्मेलन समाप्त हुआ है। स्थान २ से लोग आए थे। इधर जावा सुमित्रा, इन्डोचीन और बोर्नियो स तो

स्योनान में महिलाओं क रैली के बीच में श्री सुभाष बाबू

झांसी की राणी रेजीमेंट का निरीक्षण करते हुए–नेताजी –कॅप्टन लक्ष्मी के साथ.
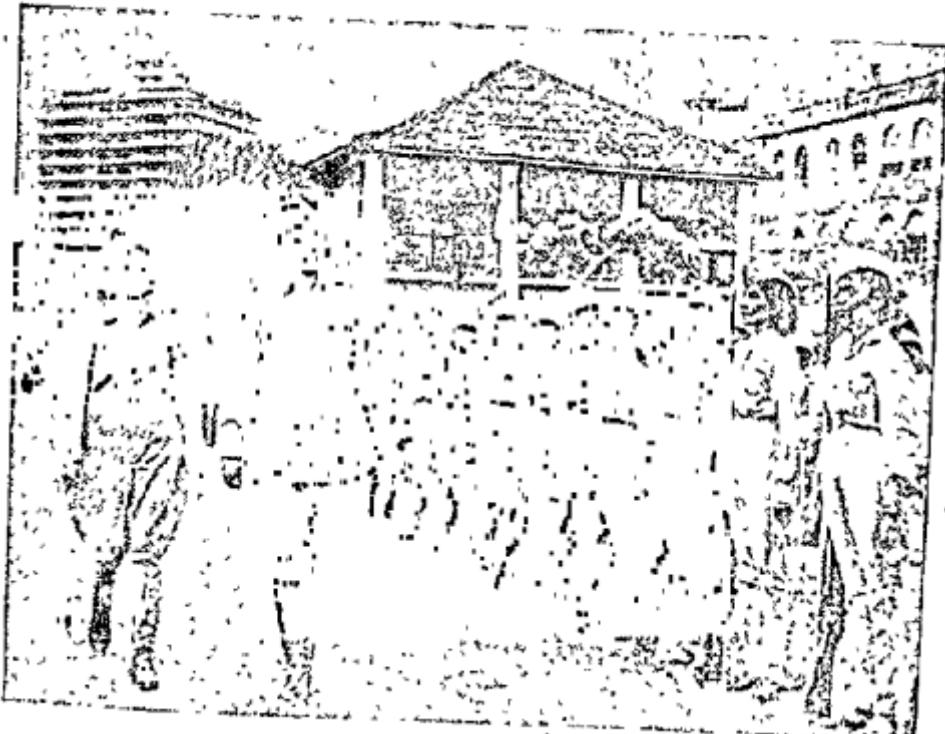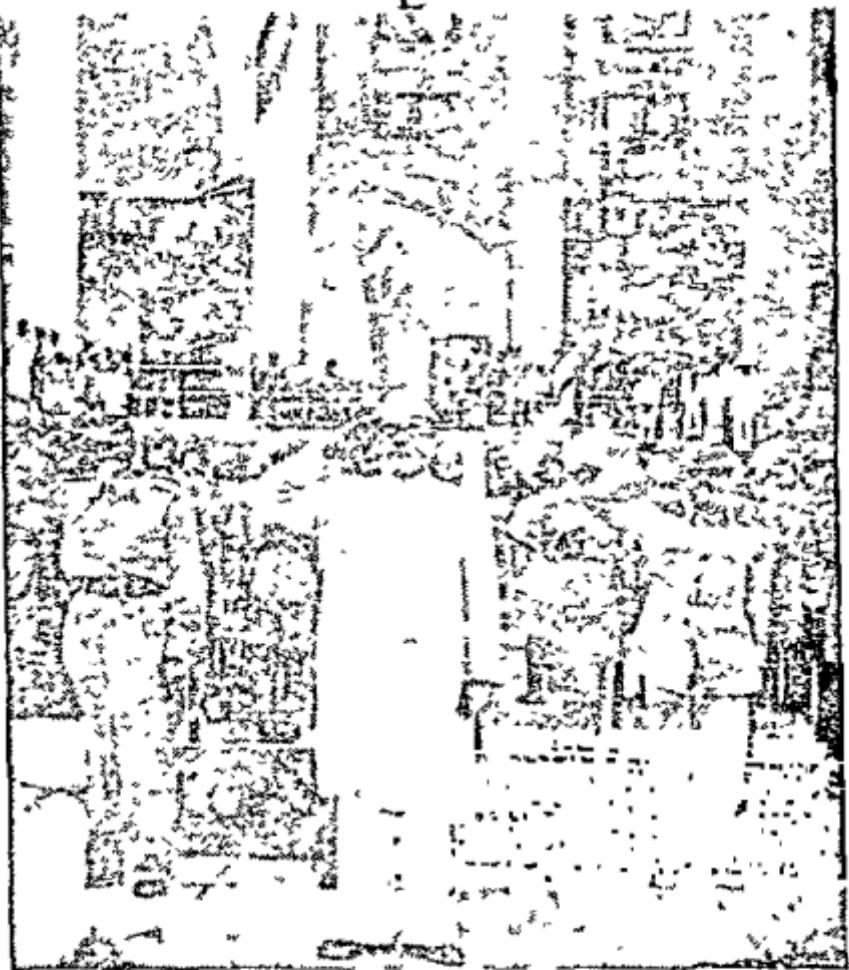
“मेरी वफादारी हिन्दुस्तान के ही प्रति है।”

आजाद हिंद फौज की घोषणा के बाद श्री सुभाष बाबू सलामी ले रहे हैं।

— मलायाके व्यापारी नेताजी को भेट अर्पण करते वक्त

उधर संघाई हांगकांग और जापान तक से। मलाया और बर्मा से तो थे ही। भारतीय युद्ध बंदियों के प्रतिनिधि भी इस में सम्मिलित हुए।

आजाद हिन्द लीग के स्थापित होने की सरकारी तौर पर अब घोषणा कर दी गई। इस का विधान तैयार किया गया और स्वीकार भी कर लिया गया। लीग का ध्येयमंत्र है—एकता, विश्वास और बलिदान। एक झंडे और संगठन के नीचे सभी भारतीयों की एकता,' भारत की तात्कालिक स्वाधीनता प्राप्त करने में दृढ़ विश्वास और इसी स्वतंत्रता को प्राप्त करने के लिए आवश्यकता पड़ने पर प्राणों का हंसते हंसते बलिदान।

सम्मेलन ने निश्चय किया है "भारत एक और अखण्ड है। सारे काम राष्ट्रीय दृष्टिकोण से होंगे। धार्मिक या साम्प्रदायिक तथा विभाजन के दृष्टिकोण को एक दम धता बताया जायगा। भारतीय राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) के उद्देश्यों और नियमों के अनुसार हमारा कार्यक्रम और योजना बनेगी। भारत के स्वभाग्य का निर्णय और उस के भावी विधान को बनाने का काम स्वाधीन भारत के चुने हुए प्रतिनिधि ही कर सकेंगे—दूसरा कोई नहीं।

आजाद हिन्द लीग की कार्यकारिणी के सीधे तत्वावधान में आजाद हिन्द फौज का अनुशासन पूर्ण संगठन किया जावेगा। फौज को जापानी सेना के साथ बराबरी के मान के अलावा एक आजाद देश की सेना जैसा महत्व और मान होना चाहिए। यह स्पष्ट रूप से लिख दिया गया है कि फौज का उपयोग हिन्दुस्तान में सिर्फ विदेशियों के ही खिलाफ किया जावेगा और भारतीय स्वाधीनता को सुरक्षित रखने के अलावा और किसी भी दूसरे काम मे इस का उपयोग कदापि नहीं हो सकेगा।

कार्यकारिणी में प्रेसिडेन्ट के अलावा चार सदस्य और होंगे जिन में दो आजाद हिन्द फौज के प्रतिनिधि रहेंगे। श्री रासबिहारी हमारे पहिले प्रेसिडेन्ट चुने गए और श्री एन राघवन, के. पी. के मेनन के अलावा फौज की ओर से कैप्टिन मोहनसिंह और कर्नल जी. क्यू गिलानी सदस्य बनाए गए।

कार्यकारिणी को एक निर्णयात्मक आदेश दिया गया है। वह अपनी जो भी सैनिक प्रवृत्ति शुरू करे उसे ठीक ऐसे अवसर पर प्रारंभ कियाजाए ज्योंहि हिन्दुस्तान

की जनता में क्रांति की ज्वालाएं फैल चुकी हों और ब्रिटिश भारत की सेनाए भी विद्रोह करने को तैयार हों।

सम्मेलन ने जापानियों से माँग की है कि वे एक ऐसी आम घोषणा करें कि अग्रेजों को भारत से मार भगाने के बाद वे स्वाधीन भारत की प्रभुता का स्वतन्त्र देश की तरह मान करेंगे–उस में जरा भी विदेशी प्रभाव, नियन्त्रण और हस्तक्षेप न होने देंगे—किसी तरह का भी नहीं—न सैनिक, न आर्थिक और न राजनैतिक। जापानियों द्वारा किसी भारतीय को शत्रु नहीं माना जावेगा और न किसी का धन माल जब्त किया जावेगा।

सम्मेलन ने काग्रस के तिरंगे और राष्ट्रीय झंडे को अपना झंडा स्वीकार किया।

हम ने जापानियों से प्रार्थना की है कि श्री सुभाष बोस को पूर्वी एशिया में पहुंचने की सुविधाए दी जाएं कि जिस से वे आकर हमारे स्वाधीनता के आन्दोलन की बागडोर अपने हाथों में सम्हाल सकें।

मेरे पति का ख्याल है, कि अब सैनिक युद्ध बंदियों में अधिक से अधिक लोग आजाद हिन्द फौज और आजाद हिन्द लीग में भर्ती होने का निश्चय कर लेंगे। नागरिकों ने भी चौतरफी माँग की है कि उन्हें फौज में भर्ती होने की इजाजत दी जाए और यह सुविधा उन्हें अब दे दी जावेगी। हम में से कुछ महिलाएं भी फौज में भर्ती होने की तैयारी में है, पर हमारे नेता अभी तक महिलाओं को भर्ती करने में आनाकानी कर रहे हैं।

मेरे ख्याल से भारतीय ब्रिटिश सेना के भूतपूर्व सिपाही, फौज में, भर्ती होने का पूरा अधिकार रखते है। उन का यह कार्य सर्वथा उचित होगा। उन्हों ने वफादारी की जो शपथ ली है वह उन के देश के प्रति ही हो सकती है। उन का पूरा हक है कि वे अपनी शपथ को पूरा करने में जो भी उपाय उचित समझें उन को काम में लाएं और देश के प्रति वफादारी का फर्ज अदा करें। अब यदि वे अपने निर्णय के अनुसार फौज में भर्ती हो कर देश की पूरी तरह से सेवा कर सकते हैं तो उन्हें फौज में भर्ती होने का पूरा अधिकार है। इस न्याय से उन्हें कोई नहीं रोक सकता।

भारत माता! जन्मभूमि! इन दो शब्दों ने मुझ में एक नई चेतना, एक नई स्फूर्ति पैदा कर दी है। मैंने सम्मेलन में वक्ताओं के भाषण बड़ी दिलचस्पी से

सुने। उन के भाषणों ने मेरे हृदय की तन्त्री को झंकृत कर दिया। स्वतन्त्रता को तड़फ को बार बार कुचल देने पर भी भारत अभी जिन्दा है। पूरे एक सौ और पचास वर्ष के अखण्ड विदेशी शासन के बाद भी इस में आज़ाद होने की एक तमन्ना थी और वह तमन्ना आज और भी अधिक से अधिक तीव्र और बलवती हुई है। इस ने अपने पराक्रमी पुत्र और पुत्रियों को निर्दयता की चक्की में पिसते देखा है—नहीं—वे पीस दिए गए हैं—जानबूझ कर, क्योंकि उन के सिर पर देश प्रेम का अपराध मुँह खोल कर बोल रहा था। एक ही उद्देश्य के लिए जूझना, एक ही अत्याचारी के हाथों-एक ही तरह के अमानुषिक अत्याचारों को सहन करना और एक ही तरह की दुखदाई परिस्थितियों में रहना। यही इन सब का समान दुर्भाग्य रहा है। फिर भी हर दूसरी पीढ़ी ने अपनी पहिली पीढ़ी की चिता पर से आज़ाद होने की न बुझनेवाली प्यास विरासत में प्राप्त की है। इस प्रकार जीवन और मृत्यु का यह संघर्ष निरन्तर काल से चला आ रहा है—न रुकने वाला है न शान्त होने वाला है—चिर-प्रवाहित—चिर-चालित।

हमने सर झुकाने से साफ इन्कार कर दिया है। अथक परिश्रम से हमने हमारे हृदयों में स्वतन्त्रता की आग को प्रज्वलित रक्खा है। बेशक-हमारी कौम का दर्जा मज़दूरों और कुलियों तक ही सीमित कर दिया गया है, पर इस से क्या? स्वाधीनता की आग तो तब भी शान्त नहीं हो पाई। वह और अधिक भयंकरता से जल रही है हमारे हृदयों में। हम हरवर्ष हज़ारों और लाखों की संख्या में अकाल और बाढ़ के शिकार होते रहे हैं पर आग की वह चिनगारी अपने बच्चों को पैतृक सम्पत्ति में बराबर मिलती रही है। और वक्त आने पर उस छोटी सी चिनगारी ने भीषण ज्वालाओं का रूप धारण किया है। आज फिर इतिहास हमें क्रांति के लिए पुकार रहा है और हम आज भी अपनी कौम को जलती मशालों के रूप में सजा कर साम्राज्यवाद के पापभरे कारागृह को भस्म करने के लिए कटिबद्ध हैं।

११ अगस्त, १९४२

प्रलय के गाज की तरह स्योनान में एक खबर आई है। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने बंबई के अधिवेशन पर विदेशी हुकूमत के सामने गर्जना की है कि—"भारत छोड़ो!" और "चले जाओ!" महात्मा गांधी ने सभी देशभक्तों को आदेश दिया है "करो या मरो"। "नेताओं के नेतृत्व के लिए बाट मत देखो! जो तुम्हें उचित मालूम हो और, जिस तरह से भी तुम भारत को आज़ाद

कर सभी वैसे काम में पिल पड़ो।" संक्षेप में यही इन का सिंहनाद है, यही वक्त की पुकार है।

वे भी आज इस बात को महसूस करते हैं कि स्वतन्त्रता को छीन कर लेने का यह सब से सुन्दर सुयोग है—रात्रीनती घड़ी है। यही हमारे बैंकॉक सम्मेलन का भी निर्णय था। यह जान कर हमें हार्दिक सन्तोष है कि हम भी उसी रास्ते पर अपने कदम बढ़ा रहे हैं जिसे कांग्रेस ने स्वीकार किया है।

ब्रिटिश सरकारने कांग्रेस के छोटे बड़े सभी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया है। पर अब हमें अच्छी तरह से विश्वास हो चुका है कि हिन्दुस्तान की सीमा के इस पार भी स्वाधीनता संग्राम के कर्मण्य नौजवान तैयार हैं—हम हजार बार सन्तोष की साँस ले सकते हैं।

१६ सितम्बर, १९४२

हिन्दुस्तान में घटने वाली घटनाओं की खबर यहाँ आने लग गई है। एक भयंकर क्रांति होने वाली है। प्रत्येक नगर और गाँव के कोने कोने में क्रांति की उत्तेजना फैल चुकी है। इस पार हमें भी अपना काम फुर्ती से निबटा देना चाहिए। ब्रिटिश साम्राज्यवाद लड़खड़ा रहा है। उस के मौत की घड़ी बज गई है। हम शीघ्र ही इन गोरों को भारत के भार से मुक्त कर देंगे।

मलाया में हमारा काम तरक्की कर रहा है। लीग के अब १२०००० सदस्य हो गए हैं। उप शाखाओं की संख्या भी बढ़ कर, चालीस हो गई है।

हर एक चीज की कीमत बढ़ रही है। धन की जरा भी कमी नहीं, जापानी हजारों की संख्या में नोट छाप रहे हैं। नए डोलर की क्रय शक्ति आज के डोलर से दस गुनी कम होगई है। यदि आज हमारी यह लीग भारतीयों की रक्षा करने के लिए नहीं होती तो न जाने कितने भारतीय अकाल की भेंट चढ़ गए होते। खास तौर से मजदूरों की हालत तो अत्यन्त दयनीय है।

१ अक्टोबर, १९४२

४१. ३४ मीटर पर आज हमने पहले से कांग्रेस रेडियो सुना। रोमांचक! सनसनी-पूर्ण! स्वतन्त्र भारत संसार को ललकार कर कह रहा है कि आओ और आँखें खोलकर हमारी स्थिति को देखो!

हमने आज सुना है कि श्री सुभाष निकट भविष्य में शीघ्र ही पूर्वी एशिया में पहुँचने वाले हैं। हमारी कार्यकारिणी आजाद हिन्द फौज को एक प्रथम श्रेणी की राष्ट्रीय सेना बनाने के लिए कठिनाइयों का बहादुरी से सामना कर रही है। जैसा सोचा था बात उतनी सुलझी हुई नहीं जान पड़ रही है। बैंकॉक सम्मेलन के प्रस्तावों और मांगों का अभी तक कुछ उत्तर नहीं मिला है।

पी..की आंखों में यही एक मौन प्रश्न मैं इन दिनों देखती हूँ कि क्या जापानी धोखा देंगे? यह परेशानी उनके व्यग्रता भरे बेचैन व्यवहार से भी प्रकट हो रही है। क्या हमारे हिन्दुस्तान के भाग्य में विश्वासघात के कड़वे अनुभव करने अभी तक बाकी हैं? पर चिंता नहीं। मैं आशावादिनी हूँ। मुझे विश्वास है कि श्री सुभाष बाबू इस बिगड़ी बाजी को भी सम्हाल लेंगे।

१७ ओक्टोबर, १९४२

पी. मेरे पति इन दिनों खूब व्यस्त रहे हैं। आजाद हिन्द फौज के संगठन सम्बंधी चर्चाओं में उन्होंने दिन रात एक कर दिया है। उन्होंने लम्बे लम्बे वादविवाद किए हैं, रात रात भर जगे हैं और अपने साथी अफसरों से और सिपाहियों से फौज के निर्माण के लिए जी खोल कर बातें की हैं।

आजाद हिन्द लीग ने भारतीय नागरिकों को फौज में भर्ती होने की अपील की है। कुछ लोगों की राय है कि लीग सभी स्वस्थ भारतीयों को सेना में भर्ती होने की आज्ञा दे दे परन्तु लीग ने यह बात नागरिकों की स्वेच्छा पर ही छोड़ दी है। मैंने अपने पति से सुना है कि कुछ भारतीय अफसर फौज से अलग रह कर उस के संगठन के मार्ग में रोड़े अटका रहे हैं। उनका कहना है कि वे फौज के अमुक अफसर से बड़े अफसर हैं अतः वे उस की अध्यक्षता में किसी भी तरह कार्य करने के लिए तैयार नहीं हैं। धिक्कार है उन्हें! क्या उन के दिमाग में अनुशासन और नियंत्रण हवा हो चुके? क्या उन्हें आजादी के जंग को लड़ने वाले इस आजाद भारतीयों के सर पर ब्रिटिश अफसराई का ढोंग थोपना चाहिए? उन्हें मर जाना चाहिए—चुल्लू भर पानी में नाक डुबा कर!

५६००० युद्ध बंदियों में से कार्यकारिणी ने ५०००० सैनिकों को फौज में भर्ती कर लिया है। कार्यकारिणी ने शरारतियों को चेतावनी देदी है कि वे फौज के सम्बन्ध में अपनी हरकतों से बाज आवें।

३ नवम्बर, १९४२

जापानी हाई-कमांड से हमारे सबन्ध बिगड़ रहे हैं। कार्यकारिणीने जापान से माग की है कि वह इवाकुरो किकान (जो हमारी फौज और जापानी फौज की मध्यस्ता के लिए एक महकमा है।) को हमारे काम में हस्तक्षेप न करने का आदेश दें।

हमारे विग्रह का कारण स्पष्ट है लेकिन किकान उसे प्रगट करने की हिम्मत नहीं करता। किकान हमारी फौज का उपयोग भारत पर जापानी साम्राज्यवाद को थोपने के लिए करना चाहता है। कार्यकारिणी जबरदस्त विरोध कर रही है, और बहादुरी से सामना कर रही है-ऐसा श्री र…ने मुझे बताया है।

इस में जरा भी शक नहीं कि हमारा सारा अस्तित्व जापानियों की दया पर निर्भर है। हमारे पास दाम नहीं। हमारा सारा धन माल वे कल ही जब्त कर सकते हैं। हम बिलकुल असहाय और अनाथ है—पर फिर भी हम अपने उन्नत भाल को झुकाना स्वीकार नहीं करते और न जापानियों के हाथ की कठपुतली बन कर उनकी इच्छा के अनुसार नाच नाचना पसन्द करते है। आजादी का आन्दोलन यदि चलेगा, तो केवल भारतीयों द्वारा सचालित होकर ही—जिसका मकसद केवल भारत का हित मात्र।

पेनाग में जो स्वराज्य-इन्सटीटियूट श्री र चला रहे है-उस की गड़बड़ी के बारे में उन्होंने मुझे बताया कि यहाँ मलाया भर से भारतीय, ट्रेनिंग के लिए उमड़ पड़ रहे है। देश प्रेम ही यहाँ की शिक्षा का प्रधान राग है। एक रात को किकान के अफसरों के साथ जापानी सेना के कुछ अफसर वहाँ आ धमके। उन्होंने युवकों को इकट्ठा कर के, उन में से कुछ खास नौजवानों को अलग चुना और उन्हें मोटरों में बिठा कर चम्पत हो गए। श्री र…उनका पता लगाने के लिए जापानी अफसरों के दरवाजों की धूल छान रहे हैं। कार्यकारिणी ने सरकारी तौर से जापानी सेना के इस कार्य का घोर विरोध किया है। श्री र…इस सबंध में कई जापानी अफसरों से मिले है। हर जापानी अफसर इस घटना में अनभिज्ञता प्रगट कर रहा है और इस की जिम्मेवारी से अपने को अलग बताता है। श्री र…ने आम घोषणा के साथ यह धमकी दी है कि यदि जापानी सरकार इस प्रकार के कार्यों को फिर कभी न होने देने का विश्वास नहीं दिला देती है और उन युवकों को वापिस नहीं लौटाती है तो वे इस इन्सटीटियूट के हमेशा के लिए ताला लगा देंगे।

श्री र...को मित्रों ने सचेत कर दिया है कि यदि उन्होंने जापानियों के खिलाफ अपनी ऐसी प्रवृत्तियों को बन्द नहीं किया तो शायद एक दिन वे खुद भी गायब कर दिए जावेंगे लेकिन इस शेर ने उत्तर दिया कि "वे मेरे प्राण ले सकते हैं, इस से अधिक तो कुछ नहीं कर सकते। जो सर पर कफन बाँधे घूमता है उस को किस बात का भय?

१३ नवम्बर, १९४२

स्वराज्य इन्स्टीटियूट के मामले के कारण सारे भारतीयों में सनसनी और रोष है। जापानियों ने स्वीकार कर लिया है कि उन युवकों को जापानी सेनाके अफसरों ने पनडुब्बी द्वारा भारत को जापानी सेना के लिए गुप्तचरों का काम करने के के लिए भेजा है।

श्री र...ने इस अन्याचार की खुल कर, कड़ी निन्दा की है। उन्होंने विज्ञप्ति से कहा है कि स्वराज्य-इन्स्टीटियूट जापान के वास्ते गुप्तचर पैदा करने का कारखाना नहीं है। किसी भी भारतीय को बिना मर्जी जापानी सेना में काम करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता। उन्होंने प्रत्येक भारतीय को सलाह दी है कि वे कार्यकारिणी के आदेश के बिना ऐसा कुछ भी काम करने के लिए कभी भी तैयार नहीं होवें।

श्री म. ने जापान सरकार से बैंकॉक सम्मेलन की माँगों का स्पष्ट उत्तर मांगा है। "जापानी भारत में एक इञ्च भूमि भी नहीं चाहते"—केवल यह कह देने मात्र से काम नहीं चल सकता और इससे परिस्थिति सुधरती नहीं। एक स्वतन्त्र राष्ट्र की तरह हमारा सम्मान होना चाहिए, हमें हमारी अस्थायी सरकार बनाने की सुविधा मिलनी चाहिए और किसान के हस्तक्षेप का सदा के लिए अन्त होना चाहिए।

मेरे पति पी...का कहना है कि जापानी हमारी फौज की ट्रेनिंग के मार्ग में अनेक तरह की बाधाएं उत्पन्न कर रहे हैं—और पूरे हथियार नहीं दे रहे हैं। कार्यकारिणी के लिए काम करना टेढ़ी खीर हो रहा है।

२९ नवम्बर, १९४२

युवकों को उड़ा ले जाने के विरोध में श्री र...ने स्वराज-इन्स्टीटियूट को सचमुच बन्द कर दिया है। जापानियों के रोष का पार नहीं है। जो धमकियाँ उन्हें और उन के परिवार को मिली हैं यदि उन में से आधी भी सच है, तो उन की किसी

प्रभावित है। इस के सभी सदस्य जापानी सेनापतियों या किसान के अफसरों ने जो इशारे और चाकर मात्र हैं। इस में संशय को लेशमात्र भी स्थान नहीं—इन व्यक्तियों को भारतीय जनता से पटने की नहीं—कभी नहीं।

श्री र. .अभी तक अपने मकान पर नजर बन्द ही है। हाँ इतना जरूर है कि अब उन के अधिक से अधिक मित्र उन से मिल सकते हैं, रोक नहीं के बराबर है। किसान की ओर से अभी अभी यह इशारा तक हुआ है यदि श्री र. ही केवल इस्तीफा दे दें तो उन के और हमारे संबंध बहुत ही मधुर हो सकते हैं—दोनों में फिर से प्रेमभाव बढ़ सकता है। जापानियों को अपने मान और बड़प्पन की रक्षा के लिए कोई बलिदानी चाहिए और वे इस के लिए श्री र का ही उपयोग सर्वश्रेष्ठ समझते हैं।

९ जनवरी, १९४३

जापानियों द्वारा प्रोत्साहित नौजवान सघ श्री र और श्री म...के साथ साथ लीग के अन्य नेताओं पर जी भर कर कीचड़ उछाल रहा है। यह व्यक्तिगत मक्कारी से भरे सफेद झूठ का घृणात्मक प्रचार कर रहा है। इस नौजवान सघ की सभा के पोस्टर कई स्थानों पर जापानी सिपाही चिपकाते देखे गए हैं।

हिन्दुस्तान के समाचार काफी खेदजनक है। मेरी मातृभूमि! जन्मभूमि!! दुलारी माँ, हम तुम्हारी रक्षा के वास्ते आँधी की तरह उमड़ कर आना चाहते हैं पर मूर्खता से नहीं। तुम्हारे शरीर का एक एक घाव हमारे दिलों में कटारों की तरह पीड़ा दे रहा है पर हम अंध हो कर आगे नहीं बढ़ना चाहते कि जिस से तुम्हारे सिर पर कहीं भविष्य में और अधिक विपत्तियों के बादल नहीं बरस पड़ें! हम इतना तो पहिले ही निश्चय कर लेना चाहते हैं कि हमारी किसी भी प्रगति के कारण तुम्हारा उन्नत भाल किसी विजेता और शोषक के सामने नत मस्तक न हो! हमारे दम रहते कभी न हो!

हेमू कल्याणी नामक कराची के एक विद्यार्थी को आज फाँसी पर लटका दिया गया है। काइरो रेडिओ पर यह समाचार सुना है। उस का अपराध था देशभक्ति! साम्राज्यवादी भला इसे कैसे सहन करते? उस के खून से हाथ लाल करके ही दम लिया उन्होंने। ओफ भयानक!

१३ फरवरी, १९४३

२९ मालन्गाम रोड पर आजकल बड़ी सरगर्मी है। केन्द्रीय शिविर पर काम की बड़ी रेलपेल है। मलाया शाखा की कमेटी इन तीन दिनों में लगातार मंत्रणा कर रही है। श्री रासबिहारी के चले जाने के बाद जिन जिन कठिनाइयों का इन्हें सामना करना पड़ा है उसका एक स्मरण पत्र वे उन्हें भेजने के लिए तैयार कर चुके हैं और यह भी निश्चय कर लिया गया है कि यदि निकट भविष्य में स्थिति में सुधार नहीं हुआ तो पूरी ही कमेटी एक साथ त्याग—पत्र दे देगी, जरा भी आनाकानी किए बिना

प्रेसिडेन्ट ने फौज में सुधार कर के उस का पुनर्संगठन कर डाला है। अब स्थिति नाजुक हो चली है। चाहे कोई भी क्यों न हो, कितना ही बड़ा अफसर हो—जापानी या और कोई—फौज किसी के हुक्म को नहीं मानेगी। यह सिर्फ कार्यकारिणी के ही तत्वावधान में कार्य करेगी—उसी के आदेशों का पालन किया करेगी।

१५ फरवरी, १९४३

जापानियों को स्मरण-पत्र की बातों का पता चल गया है। वे चाहते हैं उस को रोकना, नहीं पहुँचने देना चाहते श्री रासबिहारी तक और उस के पहिले वे अपना खेल खेलना चाहते हैं। वे चाहते हैं स्मरण पत्र के पहुँचने के पहिले ही श्री र. का त्यागपत्र। हर तरह, हर कीमत पर तुले हुए हैं वे इस त्याग पत्र को प्राप्त करने के लिए।

इधर श्री क का मत सूरज की तरह स्पष्ट है। वे नहीं चाहते कि मलाया की शाखा के नेता त्याग पत्र दें। यह त्याग-पत्र ही तो जापानी चाहते हैं—इस लिए कि वे अपनी मनचाही योजना को वे मनमाने ढंग से कार्यान्वित कर सकें। धार, छोड़ है। रस के समक्ष पेंच पड़ है। दिल के की मुराद पूरी नहीं होने देंगे सहज में, मरते दम तक नहीं। अपने जिम्मेवार पदों को रिक्त नहीं करेंगे-नहीं देंगे त्यागपत्र ये लोग, कभी नहीं।

३ मार्च, १९४३

दूसरे महीने स्योनान में पूर्वी एशियाइयों का सम्मेलन होने वाला है। ऐसा पता चला है कि जापानियों ने श्री रासबिहारी को अब तक किसी प्रकार

का आश्वासन नहीं दिया है। उनकी मांगों का उत्तर तक नहीं दिया है। पर वे झुके जरूर हैं। उन्होंने एक अस्थायी सन्धि सी कर ली है। श्री सुभाष को यहाँ पहुँचने की सुविधा वे देंगे और फिर श्री सुभाष, श्री रासबिहारी के स्थान को संभालेंगे। हमारा नेतृत्व करेंगे। लीग के सभापति होंगे। हमारे धन्य भाग्य।

तब तक के लिए मौजूदा स्थिति में कुछ भी परिवर्तन नहीं होगा, स्थिति ज्यों की त्यों बनी रहेगी।

श्री र पर अब कुछ भी प्रतिबन्ध नहीं है। उन्हें पूरी आजादी है। पर वे बीमार हैं। अतः घर पर ही रहने के लिए बाध्य हैं। ऐसा मालूम हुआ है कि किसी खास बीमारी के लिए उन का आपरेशन होगा।

१० मार्च, १९४३

आखिर मलाया की शाखा पर निप्पन ने एक राजनैतिक विजय प्राप्त कर ही ली। श्री र के त्याग पत्र में ही उन्होंने अपना गौरव समझा। श्री रासबिहारी इन के दबाव में आ गए। उन्होंने श्री र से त्यागपत्र मांग लिया और श्री र ...ने उसे पेश भी कर दिया। अब तक जापानियों के कलेजों पर साँप लोट रहे थे। आज कलेजा ठंडा हुआ है। श्री र के स्थान को कौन ग्रहण करेगा? देखें कौन आता है? कौन कांटों के ताज को पहनने का जोखिम रखता है? हम मलायावासी भारतीय हम रहते किसी चपड़ूस, जीहजूरे या जापानियों के एजेंट को हमारा प्रेसिडेंट नहीं होने देंगे। हमारे प्राण रहते यह बात नामुमकिन ही रहेगी।

श्री र...के त्याग-पत्र ने हम में से अनेकों की आंखें खोल दी हैं। मोह निद्रा से जगा दिया है। कैसा दिलेर आदमी। मलाया के विचरशील भारतीयों में उन का स्थान सब से लोक प्रिय था। उन्होंने मौखिक संदेश भेजा है—

"हमारी संस्कृति और सभ्यता युग युग पुरानी है। हम दानवी अत्याचारों और जुल्मों के मानसिक अधःपतन से आजादी नहीं प्राप्त करेंगे। हमें स्वार्थपरता और खुदगर्जी से बहुत ही दूर रहना चाहिए। न तो हम किसी भी राष्ट्र के आगे नतमस्तक होंगे और न हमारे पथ में पड़ने वाले निन्हीं शक्तिहीन राष्ट्रों को हम पददलित करेंगे। हम अपने धर्म पर स्थिर रहेंगे। भारत को स्वतन्त्र बनाने का यही हमारा तरीका है। मैंने आजतक नैतिक सिद्धान्तों के आधार पर

कर्तव्य निश्चित कर के काम किए है, अपने स्वार्थ के वशीभूत हो कर कभी नहीं। स्वाधीनता हमारा ध्येय है। हमारे भविष्य के बलिदानों के बल पर हमारा देश उसे अब भी प्राप्त करेगा। यह मेरी दृढ़ धारणा है और मेरी यही दृढ़ धारणा मुझे जबरदस्ती त्याग पत्र दिलाने के बाद भी अकर्मण्य नहीं होने देगी। हमारी विजय निश्चित है, इसमें राई रत्ति की कसर नहीं।"

९ अप्रेल, १९४२

मैं बैंकॉक आ गई हूँ। मुझे बैंकॉक रेडियो पर हिन्दी में ब्रॉडकास्ट की व्यवस्था करने और उसमें सुझाव-संशोधन करने का काम सौंपा गया है। लीग अपनी नीति को हर मोर्चे से कार्यान्वित करने की धुन में है।

अतः मैं अब बैंकॉक में हूँ। मैंने अब तक यहाँ से किए गए भारतीय ब्राडकास्टों का पूरी तरह से मनन कर के विश्लेषण कर लिया है।

दिल्ली का अखिल भारतीय रेडियो हम पर कीचड़ उछाल रहा है, हमें शत्रु घोषित कर रहा है। पर हमें अपने किए हुए एक भी काम पर या बोले हुए एक भी शब्द पर शर्म करने की जरा भी आवश्यकता महसूस नहीं होती। हमारा दावा है कि हम सच्चे देशभक्त हैं और अपनी जन्मभूमि के उद्धार के लिए उचित मार्ग का अवलम्बन कर रहे हैं। हमारे और दिल्ली के ब्राडकास्टों को किन्हीं अन्तर्राष्ट्रीय न्यायाधीशों के सम्मुख रख दो और उन का फैसला देख लो। मुझे विश्वास है कि न्याय हमारे पक्ष में बोलेगा। उन के फैसले पर हमें विश्वास है। उन के फैसलों को मैं पहिले ही बता सकती हूँ।

हम तेरह अप्रेल को जलियाँवाले हत्याकाण्ड के सम्बन्ध में एक कार्यक्रम पेश करेंगे। नाटक, गीत और भाषण इस अवसर के लिए खास तौर पर तैयार किए गए है।

१८ अप्रेल, १९४२

मलाया शाखा के प्रधान कार्यालय १८ चान्सरी लेन पर पूर्वी एशियाइयों का सम्मेलन हुआ। यह घोषणा की गई कि श्री सुभाष बाबू दो महीनों में योरप से यहां पहुँच जावेंगे।

स्वतन्त्रता का समूचा का समूचा आन्दोलन अब युद्धकालीन तत्परता से संगठित किया जा रहा है। धन और माल दोनों को इकट्ठा करने का भी निश्चय कर लिया

लेकिन अंग्रेजों ने नागरिक और सैनिक शासन के ऊंचे ऊँचे ओहदों पर ऐसे ऐसे क्षुद्र, दम्भी और अज्ञानी जीवों को लाकर इकट्ठा किया था कि बस। वे ही भुक्तभोगी इस का अंदाजा लगा सकते हैं जिन्होंने रंगून में इन की हुकूमत के नीचे अपने दुर्भाग्य की घड़ियां बिताई होंगी।

श्री प...ने कहा :

"जापानी सचमुच जब रंगून में प्रवेश कर रहे थे उस समय म्युनिसिपैलिटी के कर्मचारी, भंगी और आग बुझाने वाले आदमी एकदम लापता थे। उस समय जेल, पागलखानों और कोढ़ियों के अस्पतालों के दरवाजे खोल दिए गए थे और आजाद हुए ये भयंकर इन्सान राजमार्गों पर निरंकुशता से उपद्रव मचा रहे थे। यह पराक्रम था स्वर्ग से सीधे उतार कर आने वाले नौकरशाहों का! धांय धांय कर रंगून जल रहा था। किस के पाप से? क्या किसी अभिशाप से? कौन जाने? जेल की फाटकों से अकस्मात् ही निकल कर बाहर छूट पड़ने वाले अपराधी गुंडों ने शहर के अधिकांश हिस्सों में आग लगादी थी। सूने घरों की संपत्ति इन्होंने लूटी और फिर उन में दियासलाई बना चले कि जिस से इन के अपराधों का पता लगाने की कहीं गुंजाइश ही न रहे।"

समझ में नहीं आता—सरकार ने इन खूनी हत्यारों, गुनहगारों, पागलों और कोढ़ के मरीजों को इस तरह आम सड़कों पर तूफान मचाने के लिए क्यों आजाद किया? लेकिन यह घटना रंगून में ही घटी हो ऐसी बात नहीं। अंग्रेजी हुक्कामों ने सारी बर्मा में इसी तरह का व्यवहार किया था। इन्हें अपने और केवल अपने प्राणों की चिन्ता थी। लोग जाएं भाड़ में। जनता जिए या मरे—अपनी बला से। रिआया की लाशों पर पैर रख रख कर भी अपनी रक्षा के लिए दौड़ने भागने में मस्त थे ये लोग!

और उस दिन खूनी, हत्यारों और गुन्डों के हाथों हमारी क्या दुर्गति हुई? *क्या कहूँ? उस समय का अनुभव बहुत बुरा रहा। अंग्रेजों के खिलाफ उस दिन मेरा खून खौल उठा।* उस दिन महसूस किया मैंने कि इन की वफादारी करके मैंने भूल की है। उसी दिन मैं सोच सका कि गुलामी में ही यदि रहना पड़े तो किसी और की भले ही सही पर इन की तो गुलामी भी बदतर है। हमने इनकी खिदमत की थी, इन के साथ कंधे से कंधा भिड़ाकर संकट के काले दिनों में इन का साथ दिया था, इन के लिए

"हे राष्ट्र जनक बापू! हिन्दुस्तान की स्वाधीनता के इस पावन संघर्ष में हमें आपकी मंगल कामनाएं और आशीर्वाद चाहिए।"

श्री सुभाष बाबू हिन्दुस्तान के लिए आकाशवाणी कर रहे हैं (६ जुलाई १९

'साथियो! आजाद हिंद फौज का केवल एक ही मकसद है— मादरेवतन की आजादी, फौज का एक ही लक्ष है—दिल्ली का पुराना लाल किला! अस्थाई सरकार और उसकी फौज भारतीय राष्ट्र के विनम्र सेवक हैं!"

—श्री सुभाष बाबू आजाद हिंद फौज के उद्देश्यों की घोषणा कर रहे हैं।

(२५ अक्टोबर, १९४३)

अपना खून तक बहाया था और इन सब के बदले हमें पुरस्कार क्या मिला? यह कि हत्यारों और पागलों की अमानुषिक निर्दयता के आगे वे हमें छोड़कर भग गए—अपने बचाव के लिए—केवल अपनी ही-रक्षा के लिए।"

"और ८ की प्रभात से जापानी सेना शहर में प्रविष्ट हुई। लेकिन इस के पहिले ही शहर के सभी स्थलों पर अंग्रेजी हाकिमों द्वारा ध्वंस नीति अख्त्यार की जा चुकी थी।"

"सात तारीख की रात के ३ बजे अंग्रेजों ने सीरीयम और इनीजे के तेल के कूपों में आग लगा दी थी। बिजलीघर को छिन्नभिन्न कर दिया था। धान के सभी गोदामों को जला कर खाक कर दिया गया। आग की भयंकर लपटों में जले हुए इन कारखानों से उठनेवाले भयंकर धुँए ने सड़कों और मकानों को बुरी तरह ढक लिया था। दिन दहाड़े ऐसा लग रहा था कि अंधेरी रात का काला अंधकार छाया हुआ है। बिजली की बत्तियां बेकार थीं। रोशनी का कहीं नाम तक नहीं था। जलती हुई इमारतों से ही जो उजाला मिलता था—मिल पाता। अगले सप्ताह के अधिकांश दिनों तक यह आग अखण्ड ज्वालामुखी की तरह बेरोक धधकती रही।"

"मर्चेंट स्ट्रीट में अपने मकान जाते हुए हमने देखा कि पागल आदमी बिलकुल नंगे होकर मकानों के ढंग पर बैठे बैठे गंदगी और विष्ठा खा रहे थे। सातवीं तारीख के सूर्यास्त के पहिले पहिले रंगून के आखिरी अंग्रेज मेजर मेन्दन ने भी रंगून को अलविदा कह दी थी।"

"८ तारीख के प्रभात में बाव और डेकू के रास्ते से हो कर जापानियों ने शहर में प्रवेश किया ठीक हमारे रक्षकों की तरह हमें उस वक्त वे लगे। उजड़े हुए नगर में फिर से व्यवस्था कायम की। लोगों का प्रवाह बढ़ बढ़ कर शहर में आबाद होने के लिए पीछा उमड़ने लगा। नगर में गुंडों द्वारा होने वाले निरंकुश उपद्रव दबा दिए गए। खूनी, हत्यारों, पागलों को उपयुक्त स्थानों में बन्द कर दिया गया।"

उस दिन रात को देरी से मैं वहाँ से व जा सके। आतंक और भय के प्रभाव से उन के चहरों पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। बीते दिनों के कडुवे अनुभवों की एक दर्द भरी अमिट छाप उन पर स्पष्ट झलक रही थी। क्या वे फिर कभी वफादार रह सकेंगे अंग्रेजों के? अपनी आँखों के आगे उन्होंने मृत्यु का

३

ताण्डव-नृत्य देखा है—मृत्यु से बढ़कर—मृत्यु से भी भयंकर मृत्यु के आगमन की वेला का भय और आतंक उन की आँखों के आगे से निकल चुका है। उन के स्मृति पट पर शोक और वेदना की असीम और अनन्त रेखाएं अंकित हो चुकी हैं।

१९ मई, १९४३

कल रात को श्री स हमारे साथ भोजन करने आए थे। माडले में साग पान के व्यापारी हैं। एक बर्मी महिला से विवाह कर चुके हैं और कई बच्चों के बाप हैं। इन्होंने पिछले महीने की पहिली तारीख को जापानियों द्वारा माडले विजय और अंग्रेजों की सेना के पीछे हटने के सम्बन्ध में बहुत सी बातें बताई।

अंग्रेजों को इस बात का शक था कि गत मार्च के अन्त में माडले की जेल से बा माओ को अदृश्य करने में श्री स का भी हाथ था। लेकिन श्री स का कहना था कि उनका इस घटना से कोई सरोकार ही नहीं था।

बा माओ की कहानी तो बर्मा में आज एक पौराणिक कथा की तरह चारों ओर अत्यन्त ही लोक प्रिय हो गई है।

बा माओ बर्मा के भूतपूर्व प्रधानमंत्री थे। युद्ध आरम्भ होते ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और माडले की जेल में उन्हें रख दिया गए। अंग्रेजों ने इन पर यह आरोप लगाया कि जापानियों के साथ इन का पत्र व्यवहार चलता था। इन की गिरफ्तारी के बाद यूसा प्रधानमंत्री बने लेकिन उन्होंने बा माओ की गिरफ्तारी के विरोध में चूं भी नहीं किया। कारण यह था कि राजनैतिक क्षेत्र में दोनों एक दूसरे के प्रतिद्वंदी थे।

लेकिन यूसा को प्रकृति ने, क्षमा नहीं किया। उन्हें अपने किए का फल मिल गया। वे अपने को अधिक दिन सुरक्षित नहीं रख सके। अंग्रेजी सल्तनत के दाव पेच का एक दिन इन्हें भी शिकार बनना ही पड़ा। अमेरिका से यूसा बर्मा लौट रहे थे। रास्ते में अंग्रेजों ने इन्हें गिरफ्तार कर लिया और इन पर भी बा माओ की तरह जापानियों से संधि-चर्चा का आरोप लगा कर जेल में रख दिया। वस्तुतः यूसा अंग्रेजों से बर्मा के लिए औपनिवेशिक स्वराज्य की तात्कालिक घोषणा की माँग करने के लिए इंग्लैंड गया था। अंग्रेजों ने बर्मा को औपनिवेशिक स्वराज्य देने से साफ इन्कार कर दिया। और तब झल्लाया हुआ यूसा अमेरिका गया और वहाँ उसने अंग्रेजों के इन्कार करने का भंडाफोड़ किया। अमेरिका से बर्मा लौटते हुए

रास्ते में बिचारे ने अपने आप को अंग्रेजों का बंदी पाया; पकड़ लिया गया और ठूंस दिया गया जेल में।

मार्च के अन्त में मेमियो से एक उच्च कोटि के संदेशवाहक माण्डले आए। बर्मा के ब्रिटिश गवर्नर का निवास इन दिनों मेमियो में ही था। संदेश वाहक सीधा माण्डले की जेल में गया। घण्टों तक बा मा ओ के साथ उसकी बातचीत होती रही। अंग्रेज बा मा ओ को बिना शर्त रिहा करने के लिए तैयार थे। पर वे एक बात चाहते थे—केवल एक बात—और वह यह कि बा माओ बर्मा के निवासियों को अंग्रेजों के प्रति वफादार रखने के लिए प्रयत्न करें। वे बा माओ से पहिले यह आश्वासन लेना चाहते थे कि वह मुक्त होते ही अविलम्ब एक वक्तव्य प्रकाशित करें कि अंग्रेजों ने बर्मा को व्यावहारिक स्वराज्य दे दिया है और अब बर्मा के निवासी स्वाधीनता का उपभोग कर रहे हैं।"

पर बा माओ की योजनाएं स्पष्ट तौर से कुछ अलग ही थीं। इन्होंने अंग्रेजों के इन सुझावों का कुछ गोल माल उत्तर ही दिया, और योजनाओं को कार्यान्वित करने में कई कठिनाइयें खड़ी कर दीं। संदेशवाहक बा माओ द्वारा उठाई हुई उलझनों के संबंध में और अधिक परामर्श करने के लिए वापिस मेमियो चला गया। लेकिन मेमियो में बा माओ की शर्तें ठुकरा दी गईं, और अंग्रेजों ने तत्काल ही यह निश्चय किया कि इस व्यक्ति को जेल में सुरक्षित रखने के लिए यही ठीक होगा कि इसे किसी भारतीय जेल में बदल दिया जाए। माओ को ले जाने के लिए संदेशवाहक सशस्त्र दलबल के साथ मेमियो से पीछा माण्डले आया लेकिन तब तक पक्षी पिंजरे से उड़ चुका था। कौन जाने? कहाँ गया वह! कब गया? किस तरह गया? जेल का कोना २ छान लिया गया पर बा माओ का वे कहीं पता नहीं लगा सका। क्या पृथ्वी ही उसे निगल गई थी—आसमान उठा ले गया?

सुभाषबाबू कलकत्ते से अदृश्य हो गए थे। अपने मकान में वहीं वे नजर बन्द थे और चारों ओर घर पुलिस के कड़े पहरे से घिरा था। सब की आँखों में धूल झोंक कर भी सुभाषबाबू ने अपना रास्ता निकाल लिया। बा माओ का अदृश्य हो जाना भी ऐसा ही एक दूसरा चमत्कार था जब कि जेल की चाहर दिवारी पर सुभाषबाबू के मकान से भी अधिक चौकसी, सख्ती और कड़ा पहरा रक्खा गया था।

देखते ही देखते यह बात सारे बर्मा में वायु वेग से फैल गई। बा माओ के जेल से अन्तर्ध्यान हो जाने की बात बर्मा के बच्चे बच्चे की जुबान पर थी।

जनसाधारण में यह किम्वदन्ति बहुत जोरों से फैल चुकी थी कि बमोमो को दैवी सिद्धि प्राप्त हो चुकी है और उस के प्रभाव से वह जेल की चारदिवारी से अदृश्य हो सके हैं। जब कि सीखचे दरवाजे और खिड़कियाँ ज्योंकी त्यों बन्द थीं आश्चर्य यही था कि तब यह परिन्दा उड़कर किस तरह भग गया। ख़ासा बनगड़ हल्ला हुआ। जनता की जुबान पर तरह तरह की सैकड़ों बातें थीं। असली कहानी पर नमकमिर्च लगा कर गली और मोहल्लों में लोग इस की बड़ी दिलचस्पी के साथ चर्चा करते। अंग्रेजों की इज्जत खाक में मिल चुकी थी।

बा स क कथनानुसार—वास्तव में हुआ यह था कि उस ऐतिहासिक दिन के प्रभात में—सूर्योदय के बहुत पहिले माडले के पास इरावदी के अंचल में कुछ समुद्री हवाईजहाज अचानक ही आ उतरे। सबने उन्हें अपनी आँखों से प्रत्यक्ष देखा लेकिन किसीने भी जुबान तक नहीं हिलाई। उस समय देखा यह गया था कि पीत वस्त्रधारी कुछ बर्मी साधु भी इन समुद्री हवाईजहाजों की तरफ बढ़ रहे थे। वे उन पर सवार हो गए—इंजिन की धड़धड़ाहट शुरू हुई और हवाई जहाज उड़ चले। जेलरने सदाकी तरह प्रभात में जेल के कैदियों की गिनती की लेकिन उस दिन एक कैदी कम पाया। चलमें चलबली मच गई। आज यह बात तो सूरज के उजले की तरह स्पष्ट हो गई है कि पूरब में अंग्रेजों के पास समुद्री हवाई जहाजों का नाम निशान भी नहीं है। यदि है तो केवल जापानियों के पास ही। रहस्योद्घाटन में अब कोई कसर बाकी नहीं रही। बर्मा ने स्वाधीनता की जिन शर्तों को अंग्रेजों ने ने ठुकरा दिया था उन्हें जापानियों ने प्रसन्नता से स्वीकार करली। ब्रिटिश सेना की छावनी के ठीक बीचोबीच से जापानी बा मामो को यहाँ सलामत उठा ले गए। अब बा मामो आजाद था।

अंग्रेज बा मामो को जापानियों के हाथ की कठपुतली बतलाते हैं। लेकिन बर्मी इसका करारा उत्तर देते हैं यह कह कर कि अंग्रेज स्वयं इसे अपनी कठपुतली बनाने की सोच रहे थे। 'तुम्हारी दाल नहीं गल सकी—अब तुम यही कह कर अपने दिल के फफोले फोड़ोगे-तुम्हारा तो पानी उतर चुका।'

समाचार मिले हैं कि सुभाष बाबू योरप से रवाना हो चुके हैं याकि रवाना हो रहे हैं और बहुत ही जल्दी उन के टोकियो पहुँचने की संभावना है इस समाचार से हर व्यक्ति में आशा उत्साह और चेतना की लहर सी दौड़ गई है।

अपनी हर सवेरे की प्रार्थनाओं में मैंने ,सुभाष बाबू के लिए मंगलकामनाएं करना नहीं भूलती हूँ और कहती हूँ "हे प्रभो! उन्हें-उन के जीवन के इस सब से बड़े मिशन में पूरी पूरी सफलता प्रदान करना।

३ जून, १९४३

चार दिन हुए श्री रासबिहारी बोस टोकियो के लिए रवाना हो चुके हैं सुभाषबाबू के टोकियो पहुँचने ही वे उन से अविलम्ब मिलेंगे।

प...मलाया और थाईलैंड के सरहद तक लम्बी यात्रा करके पीछे लौट आए हैं। वह रबर के उन घने जंगलों का निरीक्षण कर आए हैं जहाँ तामिल मजदूर हजारों की संख्या में दिन रात काम करते रहते हैं। रबर के जंगलों का उन्होंने जो वर्णन किया है वह तो परलोक की याद दिलाता है। मजदूरों के साथ बहुत ही बुरा बर्ताव किया जाता है। उन्हें अपना कोई भी संगठन बनाने की इजाजत नहीं। मैनेजरों की दया के पात्र होकर ही वे निरीह अपना जीवन की दुर्भाग्यपूर्ण घड़िया बिता रहे हैं—बिलकुल असभ्य और जंगलियों की तरह ही।

प. ने जिस समय उन्हें संघ का संदेश सुनाया उस समय वे हर्ष में उछल पड़े। उन के आनन्द का पार नहीं था। उन्होंने पी. को चारों ओर से घेर लिया और एक टक से उस को सुनते रहे। उन्हें ऐसा मालूम हुआ कि उन की रक्षा करने के लिए कोई ईश्वरीय दूत स्वर्ग से नीचे लिए उतर आया है। यह गरीब, अशिक्षित और अज्ञानी तामिल मजदूर अपनी मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व कुर्बान करने के लिए तैयार हो गए। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं। जहाँ कहीं कभी हिन्दुस्तानी के पसीने की बून्द गिरती है—वहीं हिन्दुस्तान आबाद हो जाता है—आप वहीं हिन्दुस्तान के दर्शन पूरी भव्यता के साथ करते हैं। प...ने हमेशा दूर दूर के रबर के जंगलों में एक ही दृश्य देखा, जहाँ भी हिन्दुस्तानी मजदूर है वहाँ एक छोटा मोटा हिन्दुस्तान बस गया है। रामायण और महाभारत के हर सुबह और शाम कीर्तन और पाठ करते हैं और जप के समय अपने इष्ट देवों के नाम के साथ—गांधीजी के नाम का भी वे जप करते रहते हैं।

पी...का कहना है कि उन रबर के जंगलों से अधिक निरुत्साह करने वाला वातावरण उन्होंने अपने जीवन में पहिले कभी नहीं देखा।

रबर के लम्बे वृक्षों की कतारों पर कतारें—एक दूसरे पर छाए हुए पत्तों का इतना घना समूह कि मत पूछो बात! सूर्य की किरणें जिन्हें भेदकर धरती पर कभी उतर ही नहीं सकतीं। बसंत के दिनों में कीचड़ और तरी के जो दृश्य यहाँ देखने को मिलते हैं उन की तो कल्पना तक नहीं की जा सकती।

यहाँ के मजदूर 'अताप' की पत्तियों से छाई हुई दिवारों और छतों वाली झोंपड़ियों में अपना जीवन बसर करते हैं। धरती की सतह से छः फीट ऊंची उठी हुई झोंपड़ियें ऐसी लगती हैं मानो वृक्षों की डालों पर ही खड़ी कर दी गई हों।

कीचड़ और तरी की परेशानियों से बचने के लिए इन मजदूरों ने एक नया उपाय सोच निकाला।

जमीन की सतह से छः फीट ऊंचे लकड़ी के खम्भों पर मच की तरह झोंपड़ियों बना डाली हैं जिन की दिवारों और छतों को उन्होंने 'अत्तप' के पत्तों से छा दिया और घास के तन्तों की पर्दा बना कर जिन्होंने अपने कम चलाऊ घर का निर्माण कर लिया है।

प...ने बताया कि एकदिन मजदूरों की आमसभा हो रही थी और उसी वक्त बादलों की घड़घड़ाहट के साथ पानी की बौछार शुरु हुई। बिजलियाँ चमकने लगीं और मूसलाधार पानी बरस पड़ा। लेकिन एक भी मजदूर टस से मस न हुआ। १५ मिनट के बाद वृक्षों के घने पत्तों में से बरसात का पानी बून्द बूंद कर टपकने लगा। पानी का "टप टप" शुरु हो गया, वह रुका नहीं, अन्त तक चलता ही गया। प.. तो टपटप के इस हमले से अधीर और परेशान हो उठे लेकिन मजदूरों के लिए तो मानो कुछ हुआ ही नहीं हो। हंसते हुए चेहरों से वे उसी धैर्य के साथ बैठे रहे। उन की नाक पर सल तक नहीं था।

खून पीने वाली जोंकों का बाहुल्य है यहाँ। फिर विशाल-काय हाथी और वृक्षों की टहनियों से नदियों के दलदल भरे किनारों तक कुदकने वाली मछलियों—ऐसी मछलियाँ जो दलदल में अपनी पूछ के बल खड़ी रह कर अपने पास से गुजरने वाले मनुष्यों को अपने शिकार की तरह तकती रहें। वहां बन्दर भी हैं और रंग बिरंगे भारतीक धनकुल और तरह तरह के चमकीले परों वाले अद्भुत परिन्दे।

उष्णकटिबन्ध के जंगलों का प्रकृतिक सौंदर्य यहाँ के कण कण में बिखरा हुआ पड़ा है लेकिन इस आनन्द का उपभोग अधिक देर तक नहीं किया जा सकता। कुछ ही देर बाद मन भर जाता है। सांस हँफने लगती है और ऐसा मालूम होता है कि कोई दम घोंट रहा हो। इन्हीं मजदूरों की तरह फटे चिथड़े पहन कर जापानी सैनिक इन्हीं बियाबान जंगलों को पार करके मलाया में प्रविष्ट हुए थे। मलाया के मूल निवासियों ने ही उन्हें रास्ता बताया था।

प. को इन दिनों हल्का ज्वर रहता है। पता नहीं क्यों? किसी डाक्टर को बुला कर उन के खून की जाँच कराना जरूरी है। संभव है मलेरिया हो या कि कोई जंगली बुखार ही। प. का कहना कि मलेरिया यहां के लिए सब से बड़ा अभिशाप है जो दूसरी किसी बीमारी के मुकाबिले में, सब से अधिक हिन्दुस्तानियों को मौत के घाट उतारता है।

आजादी की उषा

गे-वह शुभ घड़ी आज आ पहुँची है आज की घड़ी—भारतीय जनता के लिए आज़ादी की उषा है।"

"हमारा विश्वास है कि इस तरह का स्वर्ण-अवसर आगामी सौ वर्षों तक फिर हाथ आने का नहीं। इसलिए हमारा यह दृढ़ संकल्प है कि हम इस अवसर का पूरी तरह उपयोग करेंगे।"

"ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने इतने वर्षों से हिन्दुस्तान को क्या दिया? इस का सीधा जवाब है—नैतिक अध पतन, सांस्कृतिक विनाश, भूख, गरीबी, गुलामी

"हमारा फर्ज है इस लिए हम अपनी आज़ादी की कीमत अपना खून दे कर चुकाएं। बलिदान और बहादुरी से जिस आज़ादी को हम हासिल कर सकेंगे, उसे हम अपनी सामर्थ्य और शक्ति के बल से सुरक्षित भी रख सकेंगे।"

"शत्रु ने म्यान से तलवार निकाल ली है। समर क्षेत्र में तलवार का जवाब चमकती हुई तलवार से ही दिया जाना चाहिए। सत्याग्रह को अब शस्त्र युद्ध में बदल देना आवश्यक है। भारतीय जनता—सामूहिक रूप से जब अग्नि परीक्षा में तप कर खरे सोने की तरह चमकती हुई बाहिर निकलेगी तब ही वह वास्तव में आज़ादी की अधिकारीणी बन सकेगी।"

२१ जून, १९४२

श्री सुभाष की पहिली आकाशवाणी आज हमने टोकियो से सुनी। उन के भाषण से मैंने ये अवतरण अपने पास उतार रक्खे हैं, जो मुझे महिलाओं में काम करते समय सहायक हो सकेंगे। अपनी बात को सीधे साद पर प्रभावशाली तरीके से कहने की उन के पास अद्भुत् क्षमता है।

"जहाँ तक हिन्दुस्तान का संबंध है-हिन्दुस्तान के पड़ोसी मुल्कों की मौजूदा स्थिति ही हम सब के लिए सब से अधिक महत्व पूर्ण है।"

"हिन्दुस्तान में इतने लंबे ब्रिटिश शासन में एक भी ऐसा सेनपति नहीं हुआ जिसने यह कल्पना तक की हो कि भविष्य में कभी अंग्रेज़ों का कोई शत्रु हिन्दुस्तान की पूर्वी सीमा से भी चढ़कर हमला कर सकता है। ब्रिटेन के रण-पंडितों ने इसलिए अपना सारा लक्ष्य भारत के उत्तर पश्चिम सीमाप्रान्त की तरफ ही केंद्रित कर रक्खा है।"

"सिंगापुर का जलदुर्ग अंग्रेजों के हाथ में था और इसलिए उन्हें विश्वास था कि हिन्दुस्तान उन के पैरों तले सुरक्षित है। जनरल यामाशिता और जनरल इडा के हमलों की विद्युत प्रगति ने संसार की आँखें खोल दीं और बता दिया कि ब्रिटेन के रणनीति विशारदों का सैन्य आयोजन कितना खोखला और निरर्थक है ."

"जनरल वैवल तब से हिन्दुस्तान की पूर्वी सरहद की किलेबन्दी करने के लिए जी तोड़कर प्रयत्न कर रहे हैं लेकिन हिन्दुस्तान के लोग एक ही सवाल पूछ रहे हैं कि सिंगापुर की किलेबन्दी करने में बीसवर्ष लगे थे पर उस का पतन पांच मारते-एक सप्ताह में हो गया। ऐसी स्थिति में पूर्वी किलेबन्दी की इन तैयारियों को मिट्टी में मिलते कितनी देर लगेगी?"

"हम हिन्दुस्तानियों के लिए इस का कोई महत्व नहीं कि ट्युनिस, टिंबुक्टू, लम्पेडूसा या एलास्का में क्या हो रहा है लेकिन हमारे मुल्क हिन्दुस्तान में प्रकट और उस की सीमाओं के दूसर पार के मुल्कों में घटने वाली घटनाओं से हमारा सम्बन्ध है।"

"वर्मा के पुनर्विजय की जो डींग अंग्रेज डंके की चोट से जी भर कर संसार के सामने हांक रहे थे, उस का परिणाम वर्मा से निर्लज्ज पलायन के रूप में प्रकट हुआ है-हमारे लिए यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना है।"

"सिंगापुर का पतन और वर्मा की क्षति अंग्रेजी सेना के इतिहास में दो बहुत ही बड़ी और करारी हारें हैं लेकिन अंग्रेजों की मनोदशा में ये जरा भी परिवर्तन नहीं ला सकी है। साम्राज्यवाद का दम ब्रिटेन के दिमाग से अभी दूर नहीं हुआ है। हिन्दुस्तान पर हुकूमत करने वाले ये अंग्रेज अभी तक इसी भ्रम में है कि इन्सान जन्मे या मरें, राज्य बनें अथवा बिगड़ें लेकिन ब्रिटिश साम्राज्य वाद का कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता। वह अजय है, अक्षुण्ण है।"

"इन की इन भूल भरी धारणाओं को आप चाहें तो राजनैतिक दिवालीयापन कहें या मानसिक उन्माद लेकिन इस पागलपन और उन्माद के कारण आसानी से समझे जा सकते हैं।

"ब्रिटिश साम्राज्य का विकास हिन्दुस्तान से हुआ है। अंग्रेज राजनीतिज्ञ भले ही वे किसी भी राजनैतिक दल के हों—भली प्रकार जानते हैं कि हिन्दुस्तान के

समग्र संपन्न संपत्ति की उन्हें आवश्यकता है। वे स्वीकार करते हैं कि उन की ताकत और साम्राज्य सभी हिन्दुस्तान के पीछे हैं। जब तक हिन्दुस्तान उन के हाथ में है तब तक सब कुछ है। हिन्दुस्तान गया और उन का सब कुछ गया। इसलिए आज ये लोग भरसक साम्राज्य की रक्षा करने के लिए दीवानों की तरह प्रयत्न कर रहे हैं। चिन्ता नहीं मौजूदा युद्ध के परिणाम स्वरूप इंग्लैंड पर क्या बीते, उस का जो होना हो, हो, पर अंग्रेज लोग अपनी अन्तिम सांस तक, रक्त की आखिरी बूंद तक—अपने साम्राज्य—हिन्दुस्तान को अपने फौलादी पंजे से मुक्त करना नहीं चाहेंगे—नहीं ही चाहेंगे।

"इसलिए मैं बेशक खुले शब्दों में कह रहा हूँ कि अंग्रेज स्वयं आज भयंकर दुर्दशा के शिकार हैं लेकिन हिन्दुस्तान को यदि आज आजादी नहीं देते हैं तो यह उन का उन्माद था पागलपन नहीं है। पागलपन तो हमारा है कि हम आशा लगाए बैठे हैं कि अंग्रेज खुशी खुशी हमारे लिए यह साम्राज्य छोड़ कर चले जाएंगे।"

"हर एक हिन्दुस्तानी को अपने दिमाग से यह भ्रम निकाल बाहर कर देना चाहिए कि ब्रिटेन अपने को आजाद कर देगा।"

"लेकिन इस का अर्थ यह भी नहीं कि ब्रिटिश राजनीतिज्ञ हिन्दुस्तान के साथ भविष्य में कभी समझौते की चर्चा ही नहीं करेंगे।"

"व्यक्तिगत रूप से मुझे ऐसी सम्भावना दिखाई दे रही है कि इसी वर्ष के दरमियान ब्रिटेन इसी तरह का कोई प्रयत्न फिर करेगा लेकिन मैं जिस बात की ओर संकेत करना चाहता हूँ वह यह है कि समझौते के द्वारा ब्रिटिश राजनीतिज्ञ कभी भी हिन्दुस्तान के लिए मुकम्मिल आजादी स्वीकार नहीं करेंगे। समझौते के माया-जाल में फंसाकर हिन्दुस्तान के लोगों को वे केवल धत्ता बताने की कोशिश करेंगे।"

"लम्बी लम्बी मंत्रणाओं का दूसरा अर्थ हो ही क्या सकता है केवल इसके—कि इसी बहाने मुल्क की स्वाधीनता का संघर्ष ताक पर रख दिया जाए और राष्ट्र की सम्पूर्ण शक्ति दिन दिन शिथिल पड़ती रहे। ऐसा ही तो किया था ब्रिटिश राजनीतिज्ञों ने १६४१ के दिसम्बर से अप्रेल १६४२ तक।

"इसलिए हमें ब्रिटिश साम्राज्यवाद के साथ समझौता करने की तमाम उम्मीदें हमेशा के वास्ते छोड़ देनी चाहिए। हमारी स्वाधीनता की कांटों भरी राह में सम

फौजों को कोई स्थान नहीं है। आजादी का वरण तब ही किया जा सकेगा जब कि अंग्रेज और उन के साथी भारत छोड़ देंगे।"

"और मुल्क के लिए आजादी हासिल करने की सचमुच ही जिन्हें चाह हो उन्हें आजादी की कीमत अपने खून से चुकानी पड़ेगी......

"मेरे देशवासियो और दोस्तो! इसलिए अपनी तमाम शक्ति और सामर्थ्य से हिन्दुस्तान के भीतर और उस की सीमाओं के बाहिर स्वाधीनता के संग्राम को प्रज्वलित किए चलो। अडिग श्रद्धा के साथ अपने इस जंग को जारी रक्खो—उस समय तक—जब तक कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद छिन्नभिन्न और भग्नस्त नहीं हो जाए और उस समय तक जब तक कि उस की राख में से हिन्दुस्तान एक बार फिर एक आजाद राष्ट्र की तरह उठ खड़ा नहीं हो।

"इस पावन संघर्ष में न पराजय है न पलायन। विजय और स्वाधीनता के गले में जब तक जयमाला न डाल दें तब तक हमें बिना रुके, बिना झुके आगे बढ़ना है—आगे ही बढ़ना है।"

दिव्य! भव्य!

२४ जून, १९४२

लो, श्री सुभाष की यह फिर दूसरी आकाशवाणी! संग्राम का शंखनाद।

"मेरे कई एक देशवासियों को उम्मीद थी कि अन्तर्राष्ट्रीय संकट के दबाव से ब्रिटेन जैसी साम्राज्यवादी शक्तियें हिन्दुस्तान जैसे गुलाम मुल्कों को आजाद करने के लिए उद्यत हो सकेंगी लेकिन इस तरह की सभी आशाएं जहाँ की तहाँ धरी रह गईं।"

"आप को मालूम होगा कि १९४० के अन्त में महात्मा गांधी ने लम्बी प्रतीक्षा के बाद जब सत्याग्रह शुरु किया उस समय मैंने महसूस किया था कि हिन्दुस्तान की जनता के गौरव और प्रतिष्ठा का अपमान किया गया है। उस समय भी आवश्यक यही था कि सम्मिलित रूप से भारतीय शक्ति का इतना प्रभावशाली आयोजन किया जाता कि जो अपने लक्ष्य की सिद्धि में सफल होकर ही रहती। जोर देकर यह बात आज मैं आप को बता सकता हूँ कि इस तरह के सभी साधन उपलब्ध किए जा चुके हैं।"

" अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति की हमें सब तरफ से आज पूरी पूरी जानकारी है और इस लिए हमारी अंतिम विजय में हमें पूर्ण विश्वास है।"

" हिन्दुस्तान के सभी प्रवासी हिन्दुस्तानियों को जो प्रत्यक्ष रूप से शत्रुओं द्वारा संचालित मुल्कों में नहीं रहते—एक संगठित और मजबूत संस्था की छत्रछाया में एकत्रित किया गया है। इस संस्था के लोग एक तरफ हिन्दुस्तान में आए दिन घटनेवाली घटनाओं का बहुत ही बारीकी से अवलोकन कर रहे हैं और दूसरी ओर अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के उतार चढ़ाव के साथ अपना नियमित संपर्क कायम किए हुए हैं। अपने मुल्क की धरती पर जेल, नजरबन्दी और पाशविक यातनाओं को सहन कर के भी जिन्होंने अंग्रेजी हुकूमत के साथ आजादी का जो जंग अब तक जारी रक्खा है, उस में ठीक वक्त पर अपनी सभी संभवित शक्तियों के साथ सहायता पहुँचाने के लिए ये लोग जोरों के साथ तैयारियें शुरु कर चुके हैं।

" दोस्तो ! भूले नहीं होंगे आप कि पहिले भी एक से अधिक बार मैंने आप को विश्वास दिलाया था कि वक्त आने दीजिए—उस समय—मैं और मेरे जैसे अनेकों दूसरे साथी आजादी के जंग में कंधे से कंधा मिलाकर तुम्हारे साथ जूझते मिलेंगे, तुम्हारे ही साथ कष्ट और यातनाओं को सहन करेंगे और तुम्हारे ही साथ बैठ कर कर विजय का आनंद समान रूप से मनाएंगे। हम अपने उन्हीं वचनों का आज पालन कर रहे हैं।

"वक्त आ गया है। अब बहुत ही जल्दी हिन्दुस्तान आजाद होगा। आजाद हिन्द जेल खानों के दरवाजे खोल देगा कि जिस से उस के लाडले सपूत बन्दीगृह की कोठरियों के अंधकार से निकलकर आजादी के आलोक में मुस्कराहट के साथ प्रवेश कर सकें।"

२९ जून, १९४३

श्री सुभाष बाबू ने पूर्वी एशिया के भारतीयों से अपील की है—

" हिन्दुस्तान की आजादी के लिए झूझने वाली एक बलवती फौज का मैं संगठन करना चाहता हूँ। आओ! इस महान काम में अपना सक्रिय सहयोग दो और कंधे से कंधा मिला कर आगे बढ़ो।

" अपने मुल्क हिन्दुस्तान को आजाद करने का काम हमारा और केवल

हमारा है। यह महती जिम्मेदारी हम किसी दूसरे पर छोड़ने को तैयार नहीं है। ऐसा करना हमारी राष्ट्रीय प्रतिष्ठा के विरुद्ध होगा। हम ऐसा नहीं होने देंगे।"

"शत्रु क्रूर है। प्राणों की बाजी लगाकर अंत तक युद्ध करेगा। हथियारों की कमी नहीं है उसके पास।"

"नवीन से नवीन शस्त्रों से सुसज्जित है उस का सैन्यदल। और ऐसे भयानक शत्रु के मुकाबिले में क्या काम आएंगे तुम्हारे हथियार—वर्षों पुराने हथियार? सविनय अवज्ञा, तोड़फोड़ और राजनैतिक गुप्त हत्याओं का आतंक क्या टिकेगा इस के सन्मुख? अंग्रेजों को यदि भारत से खदेड़ बाहिर निकालना है तो लड़ना पड़ेगा हमें उन्हीं के हथियारों से, उन्हीं के तरीकों से। देखो! दुश्मन ने पहिले ही तलवार उठा ली है। अब रुकने का समय नहीं। ईंट का जवाब पत्थर से ही देना होगा हमें।

मैं डंके की चोट ऐलान करता हूँ कि पूर्वी एशिया में रहने वाले अपने बन्धुओं की मदद के बल पर मैं एक ऐसी विशाल सैन्य शक्ति का संगठन करूँगा जो भारत में अंग्रेजों की सारी ताकत को मटियामेट कर के दम लेगी। रणभेरी बज चुकी! प्रयाण करो रणभूमि को! जब आजादी के दिवानों के खून से मैदाने जंग लाल हो जाएगा और स्वतन्त्रता के प्रेमी भारतीयों के रक्त का नाला बह निकलेगा—तो देश आजाद हो कर रहेगा।"

उत्साह चारों ओर से उमड़ निकला है। हम सब काम की धुन में रंग गए हैं। मेरे पति-प भी घड़ी देर कर के आते हैं घर को एक या दो बजे के बाद और प्रात सात के पहिले चल पड़ते हैं अपने काम के लिए। श्री सुभाष स्योनन आयेंगे। जिस सम्मेलन में वे हमारा नेतृत्व ग्रहण करेंगे उस की सुचारु रूप से व्यवस्था तो बाकी पड़ी है। फिर भला दम मारने की फुरसत कैसे हो? किस को हो? मैं सजावट के काम पर हूँ। पंडाल सजाने का काम कहाँ समाप्त हुआ अब तक। लो यह बापू जी का विशाल तैल चित्र। इसे पंडाल के ऊपर ठीक मध्य में सजा दें। और फौज के सैनिक प्रयाण के अवसर के लिए भारत माता का यह चित्र उपयुक्त रहेगा—कैसी शान से, सीना तान कर खड़ी हैं हमारी भारत माता—हाथ में तिरंगे झंड को ले कर। आडम्बर को मारो गोली। हमारी सजावट में सादगी ही प्रधान रहेगी।

२ जुलाई १९४३

सोने का सूर्य उदय हुआ। श्री सुभाष आज आ गए। उन के स्वागत के लिए जन सागर उमड़ पड़ा। भारतीय, मलायी, चीनी और जापानी भी—सभी को धक्कामुक्की की रेल पेल में कुचला जाना मजूर था—पर वे उस महान क्रांतिकारी सेनानी के दर्शनों की लालसा को रोक नहीं सकते थे। श्रद्धा और प्रेम का कैसा अपूर्व प्रदर्शन! ओह! हम सास रोके देख रहे थे—तन्मय हो कर—अपने आपको भूलकर—सुधबुध खोकर।

सुभाष बाबू ने सब पर जादू सा कर दिया है। आजाद राष्ट्र के आत्माभिमान की तरह उनका उन्नत मस्तक, उनका तना हुआ वक्ष और स्नेह मयी मुस्कान ने सभी दर्शकों को मन्त्र मुग्ध कर दिया है। हमें विश्वास है—हमारा यह सेनानी हमें हमारे लक्ष तक पहुँचा सकेगा। हमने इनके कई सुन्दर से सुन्दर चित्र देखे हैं, लेकिन आज इनके साक्षात् दर्शन कर के ही हम जान सके है कि इनका सौंदर्य इनके चित्रों से कई गुना अधिक आकर्षक और भव्य है। इनके शरीर की पौरुष भरी ऊँचाई को बिचारे फोटोग्राफर किस तरह अंकित कर सकते है? चान्सरी लेन वाले अपने कार्यालय में जब वे स्थानीय कार्यकर्त्ताओं से मिले—तब मैंने उन को निकट से जी भर कर देखा। विरोध पर विजय पाने वाली उन में सहज मुस्कराहट है। यह सभी जानते है कि श्री द...दमन के सामने घुटने टेकने वाले नहीं। वे अदमनीय है। उन्होंने साफ शब्दों में जापानियों में अविश्वास प्रगट किया। श्री सुभाष जरा उन की ओर मुड़े और मुस्करा पड़े। फिर उन्होंने कहा·

"क्या आपको मेरी बुद्धि पर विश्वास है कि मैं जापानियों के हाथ खिलौना नहीं बन सकूंगा? तो विश्वास करो जब मैं यह आश्वासन तुम्हें देता हूँ कि जापानी राजनीति में हमें परास्त नहीं कर सकते। यह तब ही संभव हो सकता है यदि हम अपने को पूरी तरह से संगठित नहीं कर सकें—हम आजादी के लिए मोर्चा लेने वाली एक उत्तम रण वाहिनी नहीं तैयार कर सकें। हमें अपनी रक्षा में सतर्क और जागरूक रहना है—न सिर्फ ब्रिटिश साम्राज्यवाद से और साम्राज्य के भूखे जापानी नौकरशाही के चक्रों से, पर हमें अपने ही घर में छिपे अपने भारतीय विभीषणों से, जयचदों और अमीचदों से जो रंगे हुए सियार है। उन से भी। अस्त्रशस्त्र पूर्ण प्रत्येक कुर्बानी के लिए हमें कमर कस लेनी चाहिए। तैयार हो

जाओ। काम तुम्हारी बाट देख रहा है। कर्त्तव्य का पालन करो, काम करते करते प्राणों को होम दो यही मेरा और आप का मूल-मंत्र हो आज से।"

३ जुलाई, १९४३

श्री सुभाष ने आज फौज के सेनापतियों से भेंट की। कल वे हॉंगकॉंग, थाई देश, बर्मा और बोर्नियों से आए हुए कार्यकर्त्ताओं से मिले थे।

मेरे पति को श्री सुभाष से जरा देर के लिए भेंट करने का अवसर मिला। उन्होंने श्री सुभाष को अपनी उत्तरी मलाया की यात्रा का अनुभव सुनाया। उन का कहना है कि वे श्री सुभाष जैसे किसी सर्वज्ञ नेता से पहिले कभी नहीं मिले हैं। उन्हें तो उन छोटे छोटे नामों का भी पता है जो नक्शे में मुश्किल से स्थान पाते हैं। वहाँ की भावना और जंगल की विकट परिस्थितियों से वे पूर्ण जानकार हैं। जापानियों द्वारा जो जो तरकीबें, योजनाएं और तरीके अंग्रेजों को पराजित करने के लिए काम में लिए गए थे वह सब उन से कुछ भी छिपा हुआ नहीं है। उन का तो यहाँ तक कहना है कि "मैं एक भी ऐसी नई बात नहीं बता सका जो श्री सुभाष पहिले से नहीं जानते हों। वे श्री सुभाष की आधुनिक रण-क्रिया की पारंगतता को देख कर दंग रह गए। सचमुच, श्री सुभाषचन्द्र बोस जनता के एक नैसर्गिक नेता हैं।

४ जुलाई, १९४३

आज इस ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण सम्मेलन के उद्घाटन की शुभ घड़ी आई।

जब श्री सुभाष बोलने को खड़े हुए तो चारों ओर अखण्ड शान्ति छा गई। उन का एक एक वाक्य, एक एक शब्द स्पष्ट सुनाई दे रहा था।

"दोस्तो! समय ने आजादी के दीवाने हिन्दुस्थानियों की माँग करली है। वो सुनो! वक्त की पुकार को सुनो! युद्धकालीन कार्यपद्धति में सैनिक अनुशासन और उद्देश्य के प्रति अटूट श्रद्धा की सब से बड़ी जरूरत है। मैं आवाहन करता हूँ अपने पूर्वी एशिया में रहने वाले अपने देशवासियों को-एक झंडे के नीचे संगठित होने के लिए!—एक संगठन में मिल कर, आने वाले भरपूर युद्ध की पूरी तैयारी करने के लिए। मुझे पक्का विश्वास है वे इस आवाहन को स्वीकार करेंगे—कभी पीछे न हटेंगे!

"मैंने पहिले भी कईबार बताया है। आज और बता दूँ, एक बार फिर। मैंने १९४१ में जन्मभूमि छोड़ी! क्यों? एक जबरो मिशन को पूरा करने के

लिए। अपने देश बन्धुओं की सामूहिक इच्छा से। उन के कहने से। तब से अब तक बराबर भारत से मैं इन के संपर्क में हूँ। सी. आई. डी. मुस्तैदी से अड़गा लगाती है। पता लगाने की सरतोड़ कोशिश करती है परन्तु बेकार। उसे हाथ मल कर ही रहना पड़ता है।

"देश में आजादी के दीवाने आजादी का जंग लड़ रहे हैं और इधर देशभक्त प्रवासी स्वतन्त्रता को अपने रक्त क मोल खरीदने भी तैयार हैं। ये प्रवासी देश में लड़ने वालों क पूरे ट्रस्टियों के रूप में काम कर रहे हैं। मैं फिर एक बार विश्वास दिला दूं कि आज तक जो कुछ हमने किया है और भविष्य में जो कुछ करेंगे, एक मात्र देश की आजादी के लिए होगा। हम जनता की मर्जी के खिलाफ एक कदम भी आगे रखने वाले नहीं।

"अपने सारे उपकरणों को एक स्थान पर केंद्रित करने के लिए मैं चाहता हूँ कि आजाद हिन्द की एक अस्थायी सरकार का निर्माण किया जाए, हम अपने बलबूते पर, अपनी कुर्बानियों और प्रयत्नों के सहारे आजादी को प्राप्त करके एक ऐसी शक्ति पैदा करेंगे कि जो हमारी आजादी को युग युग तक सुरक्षित रख सकेगी। मैं आप लोगों को एक बार और सचेत कर दूं। विजय तो हमारी होगी ही। इस का हमें पक्का विश्वास है। पर शत्रु शक्कर की गोली नहीं, जिसे आप सहज में निगल जावें। वह लोहे का चना है जिस को चबावाना दाँतों के लिए टेढी खीर है। उस के बल और पराक्रम को कम मत आंकिए। वह ताकतवर है, बेरहम है, कातिल है और बहशी है। युद्ध के प्रारम्भिक काल में यदि रणनीति के सहारे, कभी हमें कुछ वक्त के लिए पीछे भी हट जाना पड़े तो क्या आप साहस खो देंगे? जीवट हार बैठोगे मेरे साहसी बहादुरो? इस तरह के संकट काल के लिए तुम पहिले से ही तैयार हो कर रहना मेरे जवान दोस्तों। हमारे सामने एक निकट युद्ध बाकी पड़ा है। शत्रु परास्त्री है। उस में कृतघ्नता कूट कूट कर भरी है। क्रूरता में उस का कोई सानी नहीं। तुम्हें इस शत्रु को पछाड़ना है। आजादी की इस अंतिम सीढी को चढने में तुम्हें अनेक कष्ट झेलने पड़ेंगे। भूख और प्यास का सामना करना पड़ेगा। अनेक अभावों का मुकाबिला करना होगा। अनिच्छिन्न प्रयाण करने पड़ें और मृत्यु के मुख में भी जाना पड़े। पर इस कठिन अग्नि परीक्षा से गुजरने के बाद–आजादी आप की होगी–आप आजाद होंगे। मैं क्यों न विश्वास करूँ कि आप अवश्य ही अपनी तलवारों के बल पर स्वतन्त्रता प्राप्त कर के रहेंगे। देश की गुलामी और और निर्धनता का अन्त करके चैन लेंगे।"

" हमारी प्रवृत्तियों का कोई ऐसा क्षेत्र बाकी नहीं बचा है जिसमें हमारी बहनोंने बहादुरी के साथ हसते हसते हमारा बोझ हल्का करने के लिए अपना हाथ नहीं बँटाया हो।"

— रंगून में महिलाओं की सभा के बीच श्री सुभाष बाबू.

'मृत्युन्जय टुकंडी की सैनिकाओंने हाथ में तलवार लेकर वे ही रण-कौशल दिखलाए जो सन् ५७ में झांसी की रानी की तलवार से देखेगए थे।"

५ जुलाई, १९४३

मैंने मंच से हमारे सैनिकों का प्रयाण देखा। यह टाउन हाल के सामने मिलिटरी रिव्यू में हुआ था। इनके प्रयाण में आजाद लोगों का मान और सौंदर्य था। राष्ट्रीय गीत को गाने वाली लड़कियों में मेरा भी नाम था। जब मेरे पति मंच के पास से होकर प्रयाण करते हुए निकले तब मैंने उन के मुख पर एक अजीब तेज देखा। वह चमक विद्युत किरणों सी थी जो उन की आँखों से मंच पर खड़े नेताजी की ओर बढ़ रही थी। मैंने इस अनुपम चमक में उसी चीज के दर्शन किए जिसे वे नेताजी के लिए अपने हृदय में छिपाए हुए थे। वे और उन की टुकड़ी के सारे जवान देश की आजादी के लिए अपने रक्त की अंतिम बूंद तक न्यौछावर करने को तैयार बैठे हैं। उत्साह और जोश से वे पागल हुए जा रहे हैं। अब टुकड़ी के सभी आदमी आपसी रगड़ों झगड़ों को खत्म कर चुके हैं। नेताजी ने हम को एकदम बदल दिया है। हम में नए प्राणों का संचार हो चुका है। अब हम गुलाम भारतवासी नहीं–आजाद हिन्द के सूरमा सैनिक हैं हम लोग अब। नेताजी ने अप्रतिम गति से शुरू किया—

'आजादी लाने वाली सेना के वीरो!

"आज मेरे जीवन का सब से अधिक गौरवशाली और महत्व का दिन है। आज विधाता ने मुझे अद्वितीय मान का अधिकारी बनाया है। आज गर्व के साथ संसार के सामने यह घोषणा करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि भारत की स्वाधीनता के लिए मोर्चा लेने वाली आजाद हिंद फौज का संगठन हो चुका। आज मेरे जीवन का एक बड़ा स्वप्न पूरा हुआ। आज सिंगापुर के रणक्षेत्र में—उसी सिंगापुर के मैदाने जंग में–जो कभी ब्रिटिश साम्राज्यवाद का अभेद्य दुर्ग था—हमारी सेना कूच करने के लिए आदेश की प्रतीक्षा कर रही है।

"अंग्रेजों की गुलामी से यही सेना हिन्दुस्तान को मुक्त करेगी। इस भारतीय फौज को भारतीय सेनानायकों ने नागरिकों की ही अध्यक्षता में संगठित किया है और जब युद्ध का डंका बजेगा उस समय यही फौज एक मात्र भारतीय नायकों के नेतृत्व में रण-भूमि की ओर प्रस्थान करेगी।

"हिन्दुस्तान के बच्चे बच्चे को इस फौज पर अभिमान होगा। ब्रिटिश

साम्राज्य की कब्र पर खड़ा होकर आज एक बालक भी इस बात में विश्वास करता है कि ब्रिटिश साम्राज्य आज अतीत की एक घटना हो चुका—यह केवल बीते युग की एक अवशिष्ट कहानी है।

"दोस्तों! तुम्हारा रण नाद हो—' दिल्ली चलो, चलो दिल्ली" पता नहीं हम में से कितने व्यक्ति आजादी के जंग के बाद जीवित बचेंगे। यह बताना कोई आसान काम नहीं है पर मैं इतना अवश्य अधिकार पूर्वक कह सकता हूँ कि अन्त में विजय हमारी होगी और हम में से जो भी जीवित बचेंगे वे योद्धा जब पुरानी दिल्ली के लाल किले में जाकर ब्रिटिश साम्राज्य की दूसरी चिता पर विजयोत्सव की कवायद कर लेंगे तब ही हमारे इस महायज्ञ की पूर्णाहुती होगी।

"मैंने अपने सार्वजनिक जीवन में सदैव इस बात को महसूस किया है कि मुल्क आजादी के लिए पूरी तरह तैयार है। लेकिन यह कमी सदा से मुझे खटकती थी कि मेरे मुल्क के पास आजादी के युद्ध में जूझ-मरने वाली एक सशस्त्र संगठित फौज नहीं है। जार्ज वाशिंगटन ने अमेरिका को गुलामी से मुक्त किया था। इतना बड़ा काम केवल इसी लिए वह सफलता से पूरा कर सके कि अपने राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए उन्होंने एक अक्षोहिणी तैयार कर रखी थी। गारीबालदी को आप जानते हैं। वह इटली के उद्धारक थे। उन की पीठ पीछे भी हथियारबन्द स्वयंसेवकों का एक विशाल संगठन था। आज यह सम्मान और यह विशेषाधिकार—केवल आप को प्राप्त है क्योंकि आजाद हिंद फौज को संगठित करने के लिए आप ही सब से पहले आगे आए हैं। जो सैनिक अपने राष्ट्र के प्रति सदा वफादार रहें, जो विषम परिस्थितियों में भी कर्तव्य पालन से मुँह नहीं मोड़ें और जो वक्त पड़ने पर हसते हंसते अपने प्राणों का बलिदान करने को तैयार रहें उन के रास्ते में पराजय जैसी कोई चीज आ ही नहीं सकती। वे अजेय सैनिक हैं। वफादारी, कर्त्तव्य पालन और बलिदान— ये तीन ध्येय-मंत्र हैं-इन्हें आप-अपने हृदय पटल पर अंकित कर रखिए-इन्हें मत भूलिए।

"साथियो! हिन्दुस्तान की राष्ट्रीय इज्जत आज तुम्हारे हाथों में है। हिन्दुस्तान की आशा और आकांक्षाओं के तुम साकार प्रतीक हो। इस तरह

में अपने कदम उठाना कि तुम्हारे देशबंधु तुम पर हर्षोन्मत्त होकर आशीर्वाद बरसाएं और भविष्य की पीढ़ियें तुम पर गर्व कर सकें। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि मैं अंधकार और प्रकाश में, दुख और सुख में, पराजय और विजय में तुम्हारे साथ ही रहूँगा। इस समय तो, मैं तुम्हें केवल भूख, प्यास, यातनाएं, अनवरत दौड़भाग और मृत्यु की भेंट ही दे सकता हूँ, इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं। तुम्हें इन सबका आलिंगन करने के लिए आगे बढ़ना होगा। नहीं कह सकता कि हिन्दुस्तान को आजाद देखने के लिए हम में से कौन और कितने सभी जीवित रहेंगे? यह कोई महत्व की बात नहीं। महत्व की बात तो यह है कि हिन्दुस्तान आजाद होकर रहेगा और हम अपना सर्वस्व न्यौछावर कर के उसे आजाद बनायेंगे। ईश्वर हमारी फौज को आशीर्वाद दे कि जिससे युद्ध में हमारी विजय हो।"

नेताजी के आने के पहले लीग के रास्ते में जो विपत्तियें पहाड़ की तरह आ खड़ी हुई थीं वे नेताजी के एक संकेत मात्र से चकनाचूर होती नजर आ रही हैं।

आजाद हिंद फौज के संगठन और उसके उद्देश्यों की घोषणा अभी तक सरकार के सामने इस तरह से नहीं हो सकी थी क्योंकि किकान इसके विरुद्ध था और वह नहीं चाहता था कि आजादी के लिए भारतीयों के त्याग की कहानियें प्रकाश में आएं। यह हमारी एक बड़ी भारी शिकायत थी। लेकिन सुभाष बाबू के यहां पहुँचते ही ये शिकायतें दूर होने लग गईं। सुभाष बाबू ने अपनी पहली मुलाकात में ही विजय का वरण कर लिया। उनके आकर्षक और प्रभावशाली व्यक्तित्व ने किकान के व्यक्तित्व को इस तरह से बहा दिया है कि जिस तरह मूसलधार पानी नमक के एक छोटे से ढेर को बहा देता है।

—कल जनरल टोजो फौज को सलामी देंगे।

६ जुलाई, १९४३

कितना वह भव्य दृश्य था जब कि जनरल टोजो ने प्रयाण करती हुई हमारी फौज को सलामी दी थी। नेताजी जपान के प्रधान मंत्री के बराबर ही खड़े थे और हमारे जवांमर्द बहादुर सिपाही अपना सीना तानकर पौरुष भरी चाल से झूमते हुए इन दोनों के आगे से गुजरे। युद्ध-प्रियता और सशक्त देशभक्ति के गौरव ने इन के प्रयाण में एक खुमारी ला दी थी। अपना राष्ट्रीय झंडा—अपने मुल्क की शान—

हिन्दुस्तान का तिरंगा—उन के हाथों में आसमान की तरफ ऊंचा उठ कर फहरा रहा था। पूरे डेढ़ घंटे तक फौज का कूच कदम जारी रहा और जनता दोनों ने पूरे वक्त तक सिपाहियाना तरीके से खड़े रह कर फौज को सलामी दी।

मेरे पति के साथ रात को कई मित्र भोजन करने आए; उन में महिलाएं भी थीं और पुरुष भी थे।

मलाया निवासी श्री ल. ने हमें कई बातें बताईं—ऐसी दिलचस्प और नई बातें कि जिन की हमें कल्पना तक नहीं थी। इन्होंने हमें बताया कि अंग्रेजों ने मलाया पर तलवार के बल से हुकूमत कायम नहीं की थी। मलाया को इन्होंने बनियों की तरह खरीदा था, धोखा दे कर, दगाबाजी से, बेईमानी से, घूस और रिश्वतों के जोर पर। इन्होंने उदाहरण दे कर बताया कि सिंगापुर जोहर के सुल्तान से १८१९ में खरीदा गया था इसी तरह १७८६ में पेनांग भी केडाह के सुल्तान से खरीदा गया और मलाक्का डचों के पास से। पेराक का इतिहास तो और भी दिलचस्प है। १८२४ में ब्रिटेन और थाईलैंड ने पेराक को उसकी स्वाधीनता सुरक्षित रखने का विश्वास दिलाया था। पचास वर्ष तक सुलतान की हुकूमत अनाबाध गति से चलती रही। सुल्तान इसी बीच एक नादानी कर बैठा। उसने अपने किसी घरेलू झगड़े में ब्रिटेन से सहायता की मांग की। ब्रिटेन ने सहायता देना स्वीकार कर लिया और उत्तर में अविलम्ब एक ब्रिटिश रेजिडेंट पेराक पहुंच गया। लेकिन किसी ने उस का खून कर दिया। सम्भवतया अंग्रेजों के किसी एजेंट द्वारा ही—यह खून हुआ हो। इस अपराध की सजा देने के लिए ब्रिटिश सैनिकों की एक टुकड़ी पेराक पहुंची। हत्या करने वालों को गिरफ्तार किया गया। उन्हें फांसी के तख्तों पर लटका दिया गया। लेकिन पेराक का तख्ता पलट गया। सुलतान गद्दी से उतार दिया गया और पेराक की सब कचहरियों पर अंग्रेजों का यूनियन जैक फहराने लगा। स्वतन्त्र पेराक के गले में गुलामी का तोक डाल दिया गया।

सेलेंगर के गुलामी की कहानी भी कुछ ऐसी ही है और ठीक ऐसी ही कहानियां हैं—नेगरी, सेंबिलिन और पहांग की भी। वही आपसी झगड़े, उपद्रव, किसी अंग्रेज का हस्तक्षेप, उसका खून या ऐसा ही कुछ हो कि बदला लेने के बहाने फौजें चढ़ आएं और फिर आतंक, मारपीट, खूनखराबा, और बस फिर वह इलाका अंग्रेजों के अधिकार में, गुलामी का फंदा उस के सर पर कस दिया जाता।

आजादी की उषा

क्या कहेंगे इसे आप ? विजय, व्यापार या कमीनापन। अंग्रेज इन कामों को गर्व से मुल्कों को फतह करना कहते हैं पर इस बनियागिरी और छलकपट में अंग्रेजों ने खोया क्या ? पूरी तौ जमें भी कुछ न की।

अंग्रेजों का ख्याल था कि जापानी पूर्वी किनारे पर कहीं हमला कर के किनारे किनारे आगे बढ़ेंगे लेकिन जापानियों ने कोटा बारु पर अपना आक्रमण किया और पश्चिमी किनार के सामानन्तर नीचे की तरफ आगे बढ़ते गए। अंग्रेजों की मान्यता थी कि जंगल अभेद्य है। जापानियों की छाया भी उन्हें पार नहीं कर सकती। लेकिन जापानी जंगलों में घुस पड़े। उन्हें पथ-प्रदर्शक भी मिल गए और एक एक कर सभी रास्ते वे पते गए। शस्त्रों के बारे में भी अंग्रेजों ने एक मूर्खता भरी राय अपने लिए बनाली थी। उनका कहना था कि हमारी तोपों के सामने जापानी खिलौने क्या टिकेंगे ? इसलिए उन्होंने पेनांग में छ छ इन्च के व्यास वाली दो छोटी छोटी तोपें समुद्री किनारे की रक्षा के लिए कोटा बारु पर लगा दी थी और दो तीन अन्य स्थानों पर ही किलेबन्दियां कीं। इस के आगे कुछ नहीं। न टैंक थे न टैंकों को फँसाने के सिरजे। तोपों को सुरक्षित रखने के लिए मोर्चे तक नहीं बनाए गए थे न कहीं गोलों को सुरक्षित रखने की पेटियों का नामोनिशान था। दर असल में उनके पास था ही कुछ नहीं। इस पर भी मजा यह था कि अंग्रेजों के ख्याल से जापानियों का निकटतम समुद्री अड्डा १५०० मील की दूरी पर फारमूसा माना गया था लेकिन जापानियों ने आक्रमण के आयोजन के लिए एक दूसरा ही अड्डा चुपके से तैयार कर लिया था-बहुत निकट-केवल छ सौ मील दूर की दूरी पर ही-इन्डोचीन में-सेगाँव।

सिंगापुर में अंग्रेजों को खतरे का अंदेशा हमेशा दक्षिण के विशाल समुद्र की तरफ से रहता था। उन्होंने इसलिए अपनी भीमकाय तोपों को सीमेंट और कंक्रीट में गड़वाकर समुद्र की ओर लगवा दिया था। लेकिन जापानी उत्तर की तरफ से कूद पड़े और विशालकाय तोपें दक्षिण की ओर मुंह किए-समुद्र से जापानियों के आने की प्रतीक्षा करती ही रहीं। उन का मुंह जापानियों पर आक्रमण करने के लिए उत्तर की तरफ नहीं मोड़ा जा सका। बिचारी तोपों के मालिकों को समुद्र से ही तो भय था। यह भी ठीक है कि ईश्वर जिसका विनाश करना चाहता है उसे वह पहिले ही अंधा बना देता है। श्री ल...का कहना है कि

जापानी जबर चतुराई से अंग्रेजों को पछाड़ कर आगे बढ़े इसका स्पष्टीकरण इस से बढ़ कर और क्या दिया जा सकता है।

हमारी गोष्ठी का रात में बहुत देरी से विसर्जन हुआ। श्री ल...की बातों में बड़ा रस आ रहा था। आज पूरे वक्त तक बातचीत करने का मानो उन्होंने ही ठेका ले लिया था। बड़े ही सरस व्यक्ति हैं। इन्हें तो हमें समय समय पर निमंत्रित करना चाहिए।

९ जुलाई, १९४३

आज सम्पूर्ण फौज की विशाल रैली थी। म्युनिसिपल दफ्तर के ठीक सामने मैदान में। डेढ़ लाख से अधिक व्यक्ति नेताजी को सुनने के लिए दरिया की तरह उमड़ पड़े। उत्साह का पार नहीं था। हमारे नेताजी जनता से कितनी आत्मीयता से मिलते जुलते हैं। कितनी मोहकता है उन के व्यवहार में। स्त्रियों और बालकों के लिए तो उन के मन में और भी अधिक आदर के भाव हैं। कभी कभी जनता आवेश में आ जाती है और नेताजी के दर्शन और स्पर्श के लिए धक्कम-धुक्का शुरु कर देती है। उस समय भी उनकी जुबान से कठोर शब्द नहीं निकलते। कल हमारे कार्यालय में नेताजी आए। बाहर एक बुढ़िया बैठी थी। नेताजी के चरण स्पर्श करने के लिए मीलों चल कर आई थी। उसने उनके चरण स्पर्श करने की कोशिश की लेकिन इस के पहिले कि वह चरण छू लेती, नेताजी ने उसे उठा कर खड़ा कर लिया और उसके आगे अपना मस्तक झुका कर आशीर्वाद मांगा। बुढ़िया को उन्होंने 'माँ' कह कर पुकारा। हमारी आँखें उस समय आँसुओं से छलछला उठी थी जब उन्होंने बाद में अपनी ममता भरी माँ की, चर्चा की थी जिसे वे अपने पीछे कलकत्ते में छोड़ आए हैं।

माइक पर भाषण देते समय नेताजी तन कर सीधे खड़े रहते हैं। बोलते वक्त हाथों के अभिनय वे नहीं करते। अपनी वक्तृता में व्यर्थ की उन्मादपूर्ण चलाबाजी उन्हें पसन्द नहीं। वे कभी शान्त और फिर कभी दृढ़ आवाज में अपने विषय का प्रतिपादन करने वाले व्यक्ति हैं। एक के बाद एक मन्त्रमुग्ध करने वाले तर्क वे करते रहते हैं कि जिससे जनता उन्हें सुन कर दंग रह जाती है और श्रोताओं की भीड़ के हर स्त्री-पुरुष यही महसूस करने लग जाते हैं कि नेताजी उस समय उन से और केवल उन से ही बातें कर रहे हैं। भाषण के वक्त वे नाटकीय प्रदर्शन नहीं करते। उस समय नहीं चाहिए उन्हें पानी का एक घूंट भी और न चाहिए पंखा झलने के लिए कोई व्यक्ति।

वे उस समय नहीं चाहते नोट लिए हुए कागज का एक टुकड़ा भी जिससे व अपने भाषण में सहायता लें। वहाँ न कागजों के बंडलों की जरूरत है न बड़ी बड़ी फाइलों की। वे इसी तरह खड़ रहेंगे मानो तुम्हारे सामने खड़े होकर तुम्हें कुछ करने का अनुरोध कर रह हों—तुम्हें समझा रहे हों—तुम से तर्क और दलीलें कर रहे हों और दृढ़ता से तुम्हारी प्रकृति के विकसित स्वरूप को प्रोत्साहन दे रह हों। नेताजी की ओजस्विनी वाणी को सुनने के बाद तुम यह महसूस करोगे कि वह व्यक्ति कायर, स्वार्थान्ध और समाज विरोधी है जो इस महान नाननहर की एक आवाज पर सहयोग के लिए अपना कदम नहीं उठाए और मुल्क के लिए की गई इनकी मांग को पूरा करने में हिचकिचाए। अपनी वाणी से जनपदों को स्फुरत, प्रभावित और वशीभूत करने वाले हमारे ये नेताजी कोई जादूगर हैं? जादूगर का स्वांग और विग्रह इन के पास नहीं है लेकिन इन का असर जादू से कुनीम नहीं, ज़्यादा ही है।

ऊंचे रंगमंच से इनकी आवाज गर्ज उठी

"दिल खोल कर आज मैं यह बताना चाहता हूँ कि क्यों मैंने अपनी मातृभूमि और अपने घर को छोड़ कर, हर तरह के भय और खतरों से भरी हुई इस यात्रा पर निकलना पसंद किया? अंग्रेजी हुकूमत के एक कैदखाने में आराम से मुझे रक्खा गया था। वहीं शान्तिपूर्वक मैंने निश्चय किया था कि जिस तरह भी हो सके बड़ी से बड़ी मुसीबतों को सर पर उठा कर भी अंग्रेजों के शिकंजे से मुझे निकल ही जाना चाहिए। जेलखाना मेरे लिए कोई नई चीज नहीं था। इस से पहिले भी मैं दस बार जेल में रह चुका था और इसलिए जेल में रहना मेरे लिए और भी अधिक सरल और आरामदेह था लेकिन मैंने महसूस किया कि मेरे मुल्क हिन्दुस्तान की आजादी के लिए मेरी आवश्यकता है और मुल्क की आजादी मुझ से माँग कर रही है कि मैं हर तरह की जोखिम उठाकर भी हिन्दुस्तान की सीमाओं के बाहिर पहुँच जाऊं।

"कर्तव्य का पालन करते करते यदि मृत्यु भी आ पहुंचे तो उस का स्वागत करने की शक्ति मुझ में है या नहीं, इस का निर्णय करने में मुझे पूरे तीन महीने लगे। इन तीन महीनों को मैंने प्रार्थना और

आत्मचिन्तन में लगाया। हिन्दुस्तान से बाहर निकलने के पहले मुझे जेल खाने की बाहर दिवारों से बाहर निकलना था और इस के लिए अपनी रिहाई की माग करते हुए मुझे भूख हड़ताल पर उतर आना था। यह मैं भली प्रकार जानता था कि हिन्दुस्तान और आयरलैंड में एक भी ऐसा कैदी अपनी सल्तनत में नहीं हुआ जो उसे प्रभावित कर के अपनी रिहाई प्राप्त करने में सफल हो सका हो। मुझे यह भी मालूम था कि ब्रिटेन पर इस तरह का दबाव डालने के प्रयत्नों के फल स्वरूप मैकस्विनी और यतीनदास को अपने प्राणों की भेंट तक चढ़ानी पड़ी थी। लेकिन मुझे ऐसा यकीन होता जा रहा था कि मुझे अभी एक बहुत बड़े ऐतिहासिक कार्य को पूरा करना है। मैंने इस लिए जोर लगाया। मेरी भूख हड़ताल शुरु हुई और भूख हड़ताल के सातवें दिन तक हिन्दुस्तान की ब्रिटिश हकूमत अचानक ही व्यग्र हो उठी और इस इरादे के साथ कि, अभी न सही, महीने दो महीने बाद ही सही-गिरफ्तार करते क्या देर लगेगी, मुझे मुक्त कर दिया। लेकिन वे मुझे फिर अपने बन्धन में लेते कि उस के पहले ही मैं हिन्दुस्तान की सीमाओं से बाहर निकल भागा। मैं आजाद हो गया।

"साथियो! आप जानते हैं कि १९२७ में मैंने विश्वविद्यालय का अपना शिक्षण समाप्त किया था और तब से ठेठ आज तक हिन्दुस्तान की आजादी के जंग में निरंतर सक्रिय भाग लेता रहा हूँ।

"पिछले बीस वर्षों में जितने सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा आन्दोलन हुए उन सब से हो कर मैं गुजर चुका हूँ। इसके अतिरिक्त बिना किसी तरह का मुकदमा चलाए अनेकों बार मुझे जेलों में नज़रबन्द किया जा चुका है। हिन्दुस्तान की अंग्रेजी हुकूमत मेरे ऊपर निरंतर यह सन्देह करती रही है कि किसी सशस्त्र क्रांतिकारी आन्दोलन के साथ मेरा सम्बन्ध है। इस तरह के अनुभवों के सहारे मैं इसी नतीजे पर पहुँचा हूँ कि हिन्दुस्तान में रह कर इस तरह के जो भी प्रयास किए जावेंगे वे बेकार होंगे। अंग्रेजों को निकाल बाहर करने के लिए केवल उतने से प्रयत्न मात्र से काम नहीं चलेगा।"

"हिन्दुस्तान से भाग निकलने का संक्षेप में मेरा यही आशय था।

मैं चाहता था कि मुल्क में लड़ी जाने वाली स्वाधीनता की लड़ाई को बाहर के बल से अधिक बलवान बनाया जाए। दूसरी बात यह कि मुल्क में चलने वाले राष्ट्रीय आन्दोलन को बाहर से सहायता की जितनी अनिवार्य आवश्यकता है वह बहुत ही कम मात्रा में मुल्क को मिल रही है। मुल्क में रहने वाले हम-वतनी हम से दो प्रकार के सहायताओं की उम्मीद करते थे—और करते हैं। एक नैतिक और दूसरी भौतिक। पहिली सहायता यह कि उन के दिल और दिमाग में यह विश्वास जमा दिया जाए कि आजादी के जंग में उनकी विजय निश्चित है और दूसरी सहायता यह है कि उन्हें बाहर से फौजी मदद पहुंचाई जाए।

"अब वक्त आ गया है जब कि मैं सारे संसार के साथ साथ अपने शत्रुओं को भी यह बता सकता हूँ कि हम किस रास्ते से अपनी राष्ट्रीय स्वाधीनता को हासिल करना चाहते हैं। हिन्दुस्तान के प्रवासी हिन्दुस्तानी विशेष कर पूर्वी एशिया के भारतीय एक ऐसी फौज का संगठन करने जा रहे हैं जो इतनी शक्ति शाली होगी कि हिन्दुस्तान के भीतर रहने वाली अंग्रेजी सेना पर आक्रमण कर सके। हम जब यह काम पूरा कर लेंगे, उस समय मुल्क में एक जबरदस्त इन्क़िलाब पैदा होगा। देश के कोने कोने में क्रांति की आग सुलग उठेगी। यह आग नागरिकों तक ही सीमित नहीं रह सकेगी। क्रांति की यह प्रलयंकर लपटें ब्रिटेन की यूनियन जैक के नीचे लड़ने वाली भारतीय सेना के सिपाहियों तक भी पहुंच जाएगी। इस तरह से जब मुल्क के भीतर और मुल्क के बाहर, दोनों ओर से आक्रमण किया जा सकेगा, उस समय वर्षों की पालीपोसी बरतानिया की यह निरंकुश सरकार-देखते ही देखते छिन्नभिन्न हो जाएगी और उसी समय भारतीय जनता अपनी लुटी हुई आजादी को पुन प्राप्त कर सकेगी।

"इसलिए मेरी योजनाओं के अनुसार हमें इस बात कि चिन्ता करने की जरा भी जरूरत नहीं की धुरीराष्ट्रों का हिन्दुस्तान के प्रति क्या रुख है और आगे क्या रवैया रहेगा? यदि हिन्दुस्तान के भीतर और बाहिर रहने वाले सभी हिन्दुस्तानी अपने कर्तव्य का पूरा पूरा पालन करने को तैयार हो जाएं तो अपनी प्यारी जन्मभूमि हिन्दुस्तान से अंग्रेजों को मार भगाने

में जरा भी देर नहीं लग सकती और देखते ही देखते अपने ३८ करोड़ देशवासियों को आजाद किया जा सकता है। दोस्तो! पूर्वी ऐशिया के तीस लाख हिन्दुस्तानियों की जुबान से जगकर यह नारा लगने दो—"अंतिम युद्ध के लिए संपूर्ण संगठन।" इसी संगठन को पूरा और शक्तिशाली बनाने के लिए मैं आप लोगों से तीन लाख सैनिकों और तीन करोड़ डोलरों की माँग करता हूँ। मुझे अपनी कौम की बहादुर बेटियों की भी जरूरत है। सन् १८५७ में, हिन्दुस्तान की स्वाधीनता के पहिले संग्राम में, जिस तरह झाँसी की रानी हाथ में तलवार लेकर रणचंडी की तरह मैदान में कूद पड़ी थी, उसी तरह इस बार भी मैं चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान की वीरांगनाएं एकबार फिर अपने आजादी के अंतिम जंग में तलवार लेकर उतर आएं। वीर ललनाओं की कम से कम एक ऐसी फौज मुझे चाहिए ही। इस मृत्युंजय रेजिमेंट को पूरा करनेके लिए मुल्क की बहादुर बहनें और बेटियें आगे आएं।

"हिन्दुस्तान में हमारे देशवासी इस वक्त बहुत परेशान है। उन्हें एक ऐसे 'दूसरे मोर्चे' की इस वक्त आवश्यकता है जो उन की परेशानियों को दूर करने और उन के जीवन-मरण के संघर्ष को पूरी पूरी सहायता देने का यथोचित काम कर सके। पूर्वी एशिया में आप पूरी तरह से संगठित और सुसज्जित हो जाइए और मैं आप से वायदा करता हूँ कि मैं यहां से 'दूसरा मोर्चा' खड़ा कर दूँगा–ऐसा मोर्चा कि जो हिन्दुस्तान की आजादी के जंग में एक नया ही रंग लाएगा।"

नेताजी बोल रहे थे और बीच ही में मूसलाधार पानी बरस पड़ा। नेताजी ने केवल इतना ही कहा कि 'मत उठिए अपनी जगह से। वहीं बैठे रहिए जहाँ आप बैठे हैं। बरसात हमें भयभीत नहीं कर सकती।' और मंत्र-मुग्ध की तरह लोग चुपचाप बरसते पानी में वहीं खड़े रहे, न हिले, न डुले। कपड़े पानी से भीग कर तर हो चुके थे-लेकिन लोगों का ध्यान उधर नहीं था। हमारे, और विशेष कर गोदी में लिए हुए बच्चों की माताओं के अनुशासन से नेताजी बहुत अधिक प्रभावित हुए।

नेताजी ने मेरे पति प...को अपने अंगरक्षक के पद पर चुना है। सचमुच, मैं फूली नहीं समाती हूँ इस मान के लिए

मालूम होगा तुम्हें—१८५७ के क्रांतिकाल में—हिन्दुस्तान की स्वाधीनता के उस पहले संग्राम में—झांसी की बहादुर रानी ने क्या किया था? यही वह रानी थी जो घोड़े पर सवार होकर, नंगी तलवार लिए हुए, अपने हजारों जवांमर्द सिपाहियों का नेतृत्व करती हुई—युद्ध के मैदान में कूद पड़ी थी। हमारा दुर्भाग्य था कि वह असफल रही। उस की पराजय के साथ साथ हमारे मुल्क को पराजित होना पड़ा। लेकिन १८५७ में इस महान महारानी ने जिस महत्त्वपूर्ण कार्य को शुरू कर दिया था उसे हमें आज फिर से शुरू करके पूरा करना है।

"इसलिए आजादी के इस अंतिम युद्ध में एक ही झांसी की रानी से काम नहीं चलेगा बल्कि इस बार हमें हजारों झांसी की रानियों की जरूरत होगी। तुम्हारा युद्ध में जाकर बन्दूकें उठाना और गोलियाँ चलाना ही केवल महत्त्व का नहीं होगा लेकिन तुम्हारी इस वीरता के आदर्श उदाहरण का नैतिक प्रभाव भी अपना बहुत अधिक महत्व रखेगा—इसे मत भूल जाना।"

दो आजाद स्कूलें भिन्न भिन्न छावनियों के लिए निरीक्षकों को उचित शिक्षण देकर तैयार कर रही है। इन की एक शाखा स्योनान में काम करती है और दूसरी पेनांग में। विद्यार्थियों के दो समुदाय इन शाखाओं में अपने शिक्षण समाप्त करके अपने काम पर लग चुके हैं। तीसरे समुदाय में सम्मिलित हो कर मैं इस शिक्षण-शिविर में भर्ती हो रही हूँ। हमारे यहाँ पुराने दृष्टिकोण के ऐसे लोग अभी तक मौजूद हैं जो यह एतराज उठाते रहे हैं कि स्त्रियों को फौजी तालीम नहीं दी जाए—लेकिन नेताजी ने उन के इस विरोध को कतई तूल नहीं दिया है। वे सचमुच ही नए जमाने के व्यक्ति हैं। इन का दृष्टिकोण विशाल और प्रगतिशील है।

२५ जुलाई, १९४३

आज श्रीमती ट.. और कुमारी स...हमारे यहाँ चाय के लिए निमंत्रित थीं। कुमारी स. पिनांग की रहने वाली है। जब अंग्रेज सभी एशियावासियों को विजेता जापानियों की दया पर छोड़ कर अपनी जान बचाने के लिए पिनांग से भग रहे थे—उस समय के अपने अनुभव कुमारी स...ने सुनाए।

कुमारी स. ने जो कुछ बताया वह इस प्रकार है

सभाओं में निरंतर भाषण देना हो, या घर घर आजादी का संदेश पहुंचाने के लिए अलख जगाना हो अथवा जुलूस के आन्दोलनों का संयोजन करना हो, या फिर अधिकारियों की आज्ञा का उल्लंघन करके ब्रिटिश राज्य की अमानुषी पुलिस की लाठियों का मुकाबिला करते हुए बाजारों और गलियों में जुलूस निकालना हो, या इस के अतिरिक्त जेल की यातनाओं, अपमानों और बेइज्जतियों का सामना करना हो—हमारी बहनों ने सब जगह डट कर निर्भयता से काम लिया है। किसी भी क्षेत्र को उन्होंने अपनी क्रियाशीलता से अछूता नहीं रक्खा। किसी भी क्षेत्र में वे कायर और कमजोर साबित नहीं हुईं। वे बहुत आगे बढ़ी हैं। उन्होंने गुप्त क्रांतिकारी आन्दोलनों तक में बहुत ही महत्व के भाग अदा किए हैं। उन्होंने सिद्ध कर दिया है कि आवश्यकता पड़ने पर अपने भाइयों की तरह वे भी बन्दूकें उठाकर गोलियें चला सकती हैं।

"मुझे तुम्हारी शक्ति और साहस में विश्वास है क्योंकि मैं जानता हूँ कि निश्चय करलेने के बाद कोई ऐसा काम नहीं जिसे तुम नहीं कर सको इस लिए बिना किसी थोड़ी भी अतिशयोक्ति के मैं तुम्हें यह कह रहा हूँ कि संसार में कोई भी ऐसी यातना नहीं जिसे हमारी बहन शान्ति के साथ सहन नहीं कर सकें।

"इतिहास हमें सिखाता है कि प्रत्येक साम्राज्य का पतन उस के उत्थान की तरह अनिवार्य है। समर के रंग मंच से ब्रिटिश साम्राज्य के विलीन हो जाने का भी अब वक्त आ गया है। हमने हमारी आँखों से देखा है कि यह साम्राज्य दुनिया के इस हिस्से से किस बुरी तरह विलीन हुआ और अब संसार के दूसरे हिस्सों से और हिन्दुस्तान से भी ठीक उसी तरह यह विलीन हो जाएगा।

"यदि, यहाँ—इस सभा में या और कहीं कोई बहन यह ख्याल करती हो कि बन्दूकें उठाना और शस्त्र चलाना स्त्रियों के लिए अनुपयुक्त कार्य नहीं है तो उन को मैं कहूंगा कि व हिन्दुस्तान के इतिहास के पृष्ठों को टटोल कर देखें। उन्हें पता लग जाएगा कि हमारी बहादुर बहनों ने बीते दिनों में शौर्य और साहस के कैसे कैसे आश्चर्यजनक कार्य कर दिखाए हैं।

मालूम होता तुम्हें—१८५७ के इतिहास में—हिन्दुस्तान की स्वाधीनता के उस पहले संग्राम में—झांसी की बहादुर रानी ने क्या किया था? यही वह रानी थी जो घोड़े पर सवार होकर, नंगी तलवार लिए हुए, अपने हजारों जवांमर्द सिपाहियों का नेतृत्व करती हुई-युद्ध के मैदान में कूद पड़ी थी। हमारा दुर्भाग्य था कि वह असफल रही। उस की पराजय के साथ साथ हमारे मुल्क को पराजित होना पड़ा। लेकिन १८५७ में इस महान महारानी ने जिस महत्वपूर्ण कार्य को शुरू कर दिया था उसे हमें आज पीछा शुरू करके पूरा करना है।

"इसलिए आजादी के इस अंतिम युद्ध में एक ही झांसी की रानी से काम नहीं चलेगा बल्कि इस बार हमें हजारों झांसी की रानियों की जरूरत होगी। तुम्हारा युद्ध में जाकर बंदूकें उठाना और गोलियाँ चलाना ही केवल मदद का नहीं होगा लेकिन-तुम्हारी इस वीरता के आदर्श उदाहरण का नैतिक प्रभाव भी अपना बहुत अधिक महत्व रखेगा-इस मत भूल जाना।"

दो आर्मीं स्कूलें भिन्न भिन्न छावनियों के लिए निरीक्षकों को उचित शिक्षण देकर तैयार कर रही है। इन की एक शाखा स्योनान में काम करती है और दूसरी पेनांग में। विद्यार्थियों के दो समुदाय इन शाखाओं में अपने शिक्षण समाप्त करके अपने काम पर लग चुके है। तीसरे समुदाय में सम्मिलित हो कर मैं इस शिक्षण-शिविर में भर्ती हो रही हूँ। हमारे यहाँ पुराने दृष्टिकोण के ऐसे लोग अभी तक मौजूद है जो यह एतराज उठाते रह है कि स्त्रियों को फौजी तालीम नहीं दी जाए—लेकिन नेताजी ने उन के इस विरोध को कतई तूल नहीं दिया है। ये सचमुच ही नए जमाने के व्यक्ति है। इन का दृष्टिकोण विशाल और प्रगतिशील है।

२५ जुलाई, १९४३

आज श्रीमती ट और कुमारी स. हमारे यहाँ चाय के लिए निमंत्रित थीं। कुमारी स पिनांग की रहने वाली है। जब अंग्रेज सभी एशियावासियों को विजेता जापानियों की दया पर छोड़ कर अपनी जान बचाने के लिए पिनांग से भाग रहे थे—उस समय के अपने अनुभव कुमारी स ने सुनाए।

कुमारी स ने जो कुछ बताया वह इस प्रकार है

"११ दिसम्बर को बहुत सवेरे में बिस्तर से उठी भी नहीं थी कि इतने में जापानी बम-वर्षकों ने पिनाग पर हमला बोल दिया। एक साथ तीस हवाई जहाज आसमान से हमारे नगर पर ढाई घंटे तक आग बरसाते रहे। लगातार तीन दिनों तक पिनाग पर यह गोलाबारी जारी रही।

"इस बमवर्षा से नगर में जो अंधाधुंधी छा गई थी उस का वर्णन कर सकना मेरे लिए असंभव है। सैकड़ों जगह आग लग रही थी। ऊंची ऊंची इमारतें धूल में मिल रही थीं। ढहे हुए मकानों की संख्या का अंदाजा ही नहीं लगाया जा सकता था। एक ही बम ने आग बुझाने वाले स्टेशन का भी सफाया कर दिया था। इस लिए आग बुझाने के इंजिनों का भी कहीं नामो-निशान तक नहीं था। आग जल जल कर खुद ही बुझती जारही थी। बचे हुए लोग दूर बैठे बैठे अपनी आंखों से अपनी सम्पत्ति और अपने वैभव को भस्म होते देख रहे थे। साधारण सहायता से भी जो चीजें बच सकती थीं वे भी आँखों के आगे जलभुन कर खाक हो गईं। मजदूर भी कहीं के कहीं भाग चुके थे। सड़कों और गलियों में मनुष्यों की लाशें पड़ी थीं और उन की बदबू से सिर फटा जाता था। अपनी आंखों से देखा है मैंने कि इन लाशों के हाथ पैर या दूसरे अंगों पर बैठ बैठ कर कुत्ते उन्हें नोंच नोंच कर खाते थे। चूहे—गेनों के बड़े बड़े जंगली चूहे,-शहरों की सड़क पर उछल कूद मचाते। छोटे छोटे घरों को छोड़ कर शहरों की सड़कों पर यूँ गुलछर्रे उड़ाने चले आते—लाशों को कुतर कुतर कर बेखटके खाते और टूटी हुई इमारतों के खण्डहरों में आराम से रहते। दुकानें अधिकांश बन्द हो गई थीं। बाजार से तो कुछ भी खरीदना असंभव था।

"इस के अतिरिक्त चोरों के उपद्रव ने तो और भी तबाह कर दिया था। भगवान जाने कहाँ से इतने चोर एक साथ निकल पड़े। पुलिस तो कभी की गायब थी। घरों से बाजार तक निकलना नामुमकिन था। मल्लाहों ने काम बन्द करदिया था। भंगी भी कहीं भाग निकले थे। घर घर में गन्दगी और विष्ठा के ढेर लग गए थे। छोटी मोटी पहाड़ियों की तरह आए दिन वे बढ़ते जाते थे। ऐसा लगता था कि जीते जी सदेह नर्क में पहुँच गए हों।

"और बुरे में बुरा यह था कि संकट की इस घड़ी में जनता को सहायता देने के लिए हुकूमती-ताकत का कहीं पता तक नहीं था। अंग्रेज भग कर एक कोने

में छिप गए थे। उन्होंने दूसरे लोगों से मिलना जुलना तक बन्द कर दिया था। बन्दूकों और रिवाल्वरों के बल पर वहाँ बैठ कर वे अपना बचाव करते थे। इसके अलावा जितना भी हो सकता, उतना ही अधिक रसद व अन्य काम के सामान वे अपने पास जोरजबरदस्ती से इक्ट्ठा करते जाते थे। तीसरे दिन शहर खाली करने का निश्चय किया गया लेकिन किसी भी एशियावासी को शहर छोड़ने की इजाजत और सुविधा नहीं दी गई। स्थानीय फौज व सरकारी अधिकारियों ने घोषणा की कि '(विशुद्ध रक्त वाले'-अंग्रेजों को ही शहर से बाहर जाने दिया जाएगा—युरेशियनों को भी नहीं। मैं कई युरेशियन महिलाओं को जानती थी जिन की शादी अंग्रेज व्यापारियों के साथ हुई थी। श्रीमती व.. मेरी एक मित्र थी। उस का पति उसे वहीं मौत के मुँह में छोड़ कर चला गया। वह बेचारी सिर्फ इसी वास्ते जान बचाने के लिए शहर नहीं छोड़ सकी कि वह 'विशुद्ध-रक्त' की मेम नहीं थी—आखिर युरेशियन ही तो थी। इस घटना से हम हिन्दुस्तानियों, चीनियों, मलाया-वासियों और इन अधगोरे युरेशियनों तक के आगे से भ्रम का पर्दा हट गया—आँखें खुल गई। न्याय, प्रजातंत्र और समानता आदि की सभी बातें केवल धोखे की टट्टी थी। हमें भुलावे में डालने वाला मायाजाल मात्र था। यह जानते हुए भी कि जापानी हम पर क्रूर से क्रूर अमानुषिक अत्याचार करेंगे—ये 'विशुद्ध-रक्त वाले अंग्रेज' हमारे बने हुए आका, हमें निराश्रित छोड़कर चल दिए।

"मलाया के अधिकांश स्थानों की यही दर्दभरी कहानी है। साम्राज्य के पतन की वेला में अंग्रेज मालिकों ने अपनी असलियत प्रगट कर दी। इन्होंने अपने आप को जनता के सामने मानवता के कलंक के रूप में प्रगट किया। जिन्हें लोग दाता समझे हुए थे वे स्वयं नियत के भ्रष्ट पामर भिखारी निकले। किसी इमानदार कुतिया का एक पिल्ला तक इन की यादगार में न भोंकेगा न इन की दुदर्शा पर एक बूंद तक कोई आँसू बहाएगा।

१ अगस्त, १९४३

कार्यालय में आठ दिन आनेवाले समाचारों से मालूम होता है कि लीग के सदस्य बनाने का काम बहुत ही उत्साह से आगे बढ़ रहा है। अकेले मलाया में लीग की दस प्रमुख शाखाएं और पचास उप-शाखाएं स्थापित की जा चुकी हैं और सदस्यों की संख्या एक लाख और सत्तर हजार के करीब पहुँच चुकी है।

मलाया के कोने कोने से फौज में भर्ती होने के लिए स्वयंसेवक अपनी अर्जियाँ भेज रहे हैं। नेताजी ने आदेश दिया है कि, "फौज में रंगरूटों को होने के लिए किसी पर जरा सा भी सामाजिक दबाव न डाला जावे। हमारी यह आजाद हिन्द फौज स्वेच्छा से आए हुए कर्मठ सैनिकों की फौज हो।" नेताजी का यह आदेश बिलकुल उपयुक्त है।

आजाद हिन्द फौज के लिए सैनिकों का चुनाव करने में बहुत ही अधिक ध्यान रखने की जरूरत है। दिल्ली रेडियो ब्रिटिश फौज के सिपाहियों से लगातार कह रहा है कि "आजाद हिन्द फौज में आँख मूँद कर भर्ती हो जाओ और मैदाने जंग में, ठीक वक्त पर उसे धत्ता बता कर पीछे लौट आओ। ब्रिटिश सेना में तुम्हारा स्थान सुरक्षित है।" हमारी फौज में हमें गद्दार और देशद्रोही नहीं चाहिए। पर जिन्हें अनिच्छा से जबरन भर्ती किया जाएगा वे देशद्रोही और गद्दार ही सिद्ध होंगे।

दूर दूर के स्थानों से फौज के लिए नित्य प्रति बहुत ही कीमती भेंटें प्राप्त हो रही हैं। कोई मूल्यवान वस्तुएं भेजता है तो कहीं से रोज़ रुपए आ रहे हैं। संदेह की अब कोई गुंजाइश ही नहीं रह गई है। चारों ओर आशा है, उत्साह है, क्रियाशीलता है। नेताजी हमारे आन्दोलन की प्रधान प्रेरक-शक्ति बने हुए हैं। वे हम में बल और स्फूर्ति भर देते हैं, हम में नए प्राण फूंक देते हैं। हर जगह जहाँ कहीं भी वे जाते हैं इन बातों की याद दिलाए बिना नहीं रहते— बार बार दोहरा कर कहते रहते हैं कि—*"यह नया युग है। मूर्ति पूजा—व्यक्ति-पूजा* का युग नहीं है। एक ही व्यक्ति पर सारा आधार रख कर आगे नहीं बढ़ा जा सकता। यह भूल मत जाइए कि मुल्क की आजादी में आन्दोलन व्यक्तियों से बहुत अधिक महान है। एक ही व्यक्ति की तानाशाही हम पसंद नहीं करते। स्वाधीनता के इस महान संग्राम में हम सभी समान रूप से आजादी के सैनिक हैं।"

१५ तारीख को स्योनान में एक विशाल रैली करने का आयोजन किया गया है। [illegible] नेताजी [illegible] हिन्दुस्तान [illegible] भी इसे इसी ६ तारीख को एक वर्ष पूरा हो जाएगा।

१० अगस्त, १९४३

मलाया और पूर्वी एशिया के कोने कोने से ६ अगस्त को सैकड़ों सभाएं हुईं। प्रवासी भारतीयों ने क्रांति-दिवस के इस राष्ट्रीय पर्व को बहुत ही समारोह से

स्योनान में पेडांग पर जागृत जनता का भव्य प्रदर्शन

आजाद हिंद फौज के सैनिक स्वाधीनता की राह पर प्रयाण करते हुए

स्योनान के टाऊन हॉल मैदान में आजाद हिंद
फौज का निरीक्षण करते हुए श्री सुभाष बोस
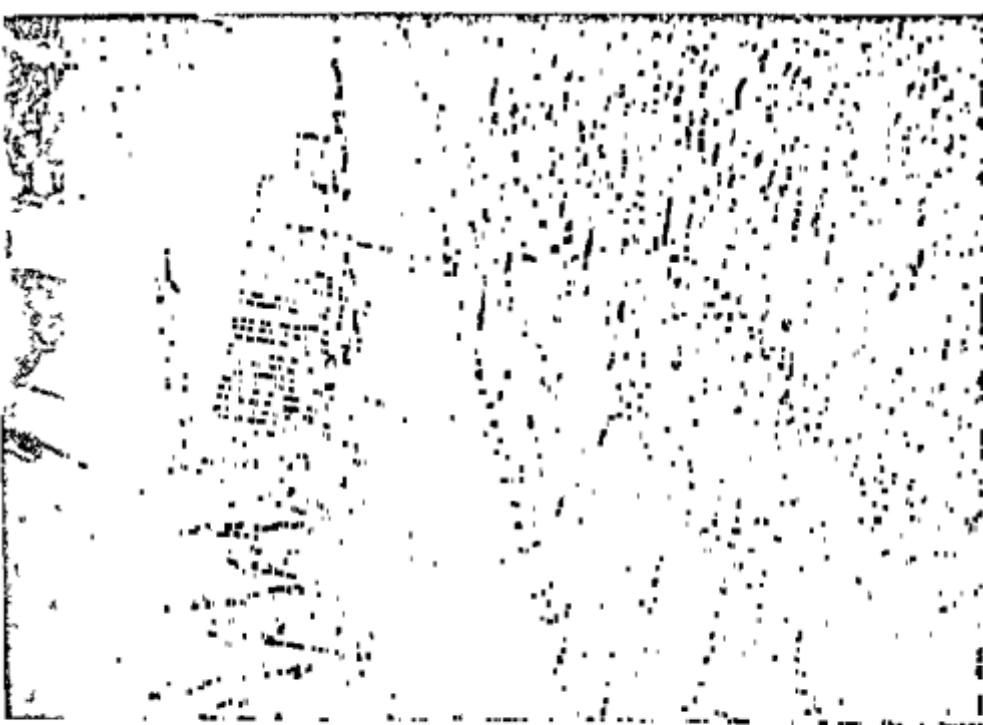
"भगवान को साक्षी रखकर मैं अपने मुल्क हिन्दुस्तान
को आजाद करने की महान शपथ लेता हूँ।"

मनाया। स्योना में भी हमने एक बहुत बड़ी सभा की थी जहाँ गांधीजी, जवाहरलाल और वल्लभ भाई के बड़े बड़े चित्र लगाए गए थे।

१७ अगस्त, १९४३

फेरार पार्क में आज नेताजी का भाषण सुनने के लिए तीस हजार से अधिक लोग उमड़ पड़े थे। ज्यों ही नेताजी बोलने के लिए खड़े हुए कि 'आजाद हिन्द जिन्दाबाद' के गगनभेदी नारों से आसमान गूंज उठा। नेताजी ने कहा:

"अंग्रेजों! भारत छोड़ो, की आवाज बुलन्द करने के अपराध में महात्मा गांधी को जेलखाने में ठूंस दिया गया था—उसे आज एक वर्ष पूरा हो रहा है। इस दिन से सत्याग्रह और तोड़फोड़ की प्रवृत्तियां उसी उत्साह के साथ अनवरत रूप से अभी तक चल रही हैं। लेकिन हम आजादी फिर भी हासिल नहीं कर सके। हमें इसलिए यह जरूरी जान पड़ रहा है कि बर्मा और हिन्दुस्तान की सरहद पर दूसरा मोर्चा कायम किया जावे। आज हम हिन्दुस्तानियों और ब्रिटिश भारतीय सिपाहियों को ललकार कर कहदें कि वे हमारे साथ कंधे से कंधा मिला कर मुल्क की आजादी के नाम पर हिन्दुस्तान में—अंग्रेजों और उन के साथी मित्र राष्ट्रों के खिलाफ शस्त्र उठावें। जब तक हम यह नहीं कर सकेंगे तब तक हमें आजादी नहीं मिल सकेगी—मिलना तो दूर रहा उसकी झलक तक नहीं दिखाई दे सकेगी।

"आज के इस सभारंभ में इतने अधिक मुसलमान भाइयों को देख कर मेरा दिल बागों बहल रहा है। उन्होंने मेरा जो हार्दिक स्वागत किया है और आजादी के जंग के लिए जो बहुमूल्य वस्तुएं भेंट की है उस के लिए मैं उनका शुक्र गुजार हूं। सारे संसार को और खास तौर से हमारे दुश्मनों को यह मालूम हो जाए कि पूर्वी एशिया के तमाम हिन्दुस्तानी, मजहब और कौम के भेदभावों को भुला कर मादरे-वतन की आजादी के लिए कुर्बान होने को एक साथ उठ खड़े हुए है।"

नेताजी ने आगे बताया कि अगले दो महिनों के दरमियान अपनी फौज का बहुत बड़ा हिस्सा बर्मा के लिए प्रस्थान कर देगा और वह ही फिर आगे हिन्दुस्तान की तरफ......। आजाद हिन्द लीग का सदर मुकाम भी अब रंगून चला

"अपनी मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए आने वाले सघर्षों में आजाद हिन्द फौज को बहुत ही महत्वपूर्ण भाग अदा करने पड़ेंगे। और इस काम को पूरा करने के लिए हमें हिन्दुस्तान की तमाम बिखरी हुई शक्तियों को एक फौज के रूप में ढाल देना चाहिए—एक ऐसी फौज के रूप में जिस का मकसद केवल हिन्दुस्तान की आजादी हो और जिस का निश्चय केवल मुल्क की आजादी के लिए जूझते २ मर मिटना हो। शत्रु से मोर्चा लेने के लिए जिस समय हम उठ खड़े होंगे उस समय आजाद हिन्द फौज एक लोहे की अभेद्य दीवार बन जाएगी और जिस समय स्वाधीनता की राह पर पृथ्वी को कपाते हुए हम प्रयाण करेंगे उस समय आजाद हिन्द फौज विद्युत वेग से दुश्मनों को कुचलती हुई आगे बढ़ेगी।

"अपना यह काम कोई बच्चों का खेल नहीं है। युद्ध अभी लम्बे वक्त तक चलेगा। स्थिति और अधिक भीषण होगी। लेकिन मुझे अपने लक्ष्य की सिद्धि में पूरा विश्वास है। संपूर्ण मानव जाति का पंचवे भाग—हिन्दुस्तान के ३८ करोड़ इन्सानों को—आजाद होने का पूरा पूरा अधिकार है और उस समय जब कि अपनी आजादी के लिए व बड़ी से बड़ी कीमत चुकाने को तैयार हो चुके हैं। इस धरती की छाती पर अब कोई ऐसी ताकत मुझे दिखाई नहीं देती जो स्वाधीनता के हमारे जन्म सिद्ध अधिकार से हमें अधिक वक्त तक वंचित रख सके।

"साथियो। रणभेरी बज चुकी है। 'चलो दिल्ली' का सिंहनाद करते हुए हमें उस समय तक लड़ना और आगे बढ़ना है जब तक कि हम नई दिल्ली में वायसराय के राजमहल पर आजादी का तिरगा झंडा नहीं फहरादें और पुराण प्रसिद्ध दिल्ली के लाल किले में अपनी विजय के उत्सव नहीं मनालें।"

फौज के लिए दुभाषिये तैयार करने के इरादे से स्योनान, कोलालम्पुर और सालोतार में तीन केन्द्र स्थापित किए गए है। इन केन्द्रों में दो सौ रंगरूट फौजी और विशिष्ट योग्यताओं की शिक्षा लिया करेंगे।

३ सितम्बर, १९४३

इसी महीने की पहिली तारीख के दिन फौज के रगरूटों को तालीम देने के लिए गैरेम्बाग में एक शिक्षण शिविर स्थापित किया गया है।

नेताजी के साथ कोलालपुर जाने वाली पार्टी में मैं भी शरीक हो गई हूँ। जाते वक्त प्रत्येक स्टेशन पर हजारों हिन्दुस्तानी, नेताजी के दर्शन करने को उमड़ पड़ते और आजादी के जंग के लिए हर जगह उन्हें बड़ी बड़ी थैलियां भेंट करते। कोलालपुर में तो उत्साह का सागर ही उमड़ पड़ा था। लोगों ने नेताजी को स्टेशन पर चारों ओर से घेर लिया। सागर की तरह उमड़ आने वाली जनता के उत्साह की लहरों को चीर कर निकलना नेताजी के लिए मुश्किल हो गया। गाड़ी को १५ मिनिट और अधिक रोकना पड़ा। लोग नेताजी से दूर होना ही नहीं चाहते थे। श्री सुभाष ने वहां स्थानीय नेताओं से कहा, "इस तरह की व्यक्ति-पूजा को प्रोत्साहन मत दीजिए। यह हमारे आन्दोलन का अभिशाप सिद्ध होगा। जनता को चाहिए कि ध्येय के लिए अपनी कुर्बानियें करने की आवश्यकता को अब वह खुद समझे और महसूस करे। जनता के उत्साह को केवल इसी रास्ते में प्रवाहित होने दिजिए। नेता तो निमित्त मात्र है। वे आते और जाते है। जनता के आन्दोलनों को ही बेरोक आगे बढ़ाना चाहिए।"

नेताजी को उन में से एक ने सीधा जवाब दिया कि, "ये लोग उत्साह से आपका स्वागत करने के लिए केवल इस वास्ते आते है कि आपने आजादी के जंग में एक नई जान फूंक दी है। ये लोग आप को उस स्वाधीनता का एक श्रेष्ठ प्रतीक मानते हैं जिस की आग वर्षों से उन के हृदयों में सुलग रही थी।"

आम सभा शुरु हुई। थैलियों और भेंटों का तांता लग गया। घंटे भर तक यही सब चलता रहा। फिर नेताजी ने भाषण शुरु किया। विशाल जनसमूह में उन्होंने बिजली की तरह प्राणों का संचार कर दिया। अपनी वक्तृत्व शक्ति से नेताजी ने श्रोताओं की भावना को आज पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया। कोलालपुर में ऐसी सभा पहिले कभी नहीं हुई; इसका उत्साह असीम था।

नेताजीने कहा :

"छोटी मोटी कुर्बानियें करने का वक्त खत्म हो गया। आज तो समय की मांग है कि हर इन्सान मुल्क की आजादी के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दे। मुल्क के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दें; भामाशाह की तरह अपनी थैलियों के मुँह खोल दे और आधुनिक ढंग की सब तरह से सज्जित सेना को तैयार करने के लिए जिन साधनों

की आवश्यकता हो उन्हें उपलब्ध करने में सहायता दें। मुल्क के लिए आज के युग की यही कुर्बानी है।

"दुनिया में जब तक शान्ति थी तब तक हिन्दुस्तानियों के लिए शस्त्र प्राप्त करना और उन का हिन्दुस्तान के भीतर उपयोग करना असंभव था। हिन्दुस्तान के बाहिर रहने वाले प्रवासियों के लिए भी यह असंभव था। लेकिन इस युद्ध का आभार मानिए कि पाच या चार वर्ष पहिले जो असंभव था वह संभव हो गया। अब यदि आप चाहें तो शस्त्र आप को मिल सकते हैं—हिन्दुस्तान के भीतर नहीं—हिन्दुस्तान के बाहिर। आप यदि आज आधुनिक ढग की एक विशाल सेना तैयार करके उसे सब तरह के नवीनतम हथियारों से सज्जित करना चाहें तो—तो आप आज ऐसा कर सकते है। इसलिए मैं कहता हूँ कि यह विश्व-युद्ध हमारे लिए ईश्वरीय वरदान बन गया है। इसने हमारे हाथों में एक अद्वितीय सुयोग दिया है कि इस अवसर पर अपने मुल्क के लिए हम—औपनिवेशिक स्वराज्य और स्वायत शासन ही नहीं पर—मुकम्मील आजादी हासिल कर लें।

"आपने अपने कोलालपुर में ही हिन्दुस्तानी नौजवानों को आनेवाले आजादी के जग की तालीम देने के लिए जिस शिक्षण शिविर की स्थापना की है उस के लिए मैं आप को बधाई देता हूं। मलाया में ऐसे अनेकों शिक्षण केंद्र मौजूद है। उन में से कुछ तो पहिले से ही ब्रिटिश सैनिकों को तालीम देने के लिए बनाए गए थे लेकिन हमने आज उन्हें अपने उपयोग में लाना शुरु कर दिया है। इसी बात से मुझे ध्यान आता है कि हिन्दुस्तान पहुंचने पर अपनी राष्ट्रीय सेना के लिए बनी बनाई बेरकें भी हमें तैयार मिल जावेंगी। नई बेरकें बनाने की हमें जरुरत नहीं होगी। आज कलकत्ते से बंबई तक और रावलपिंडी से मद्रास तक बहुत ही सुन्दर बेरकें बनी हुई तैयार पड़ी है लेकिन वे हिन्दुस्तानी फौजों के लिए नहीं बल्कि ब्रिटिश टॉमियों के लिए बनाई गई हैं। परंतु आप विश्वास कीजिए कि ये सभी सुन्दर बेरकें आजाद हिन्द फौज के लिए अधिकार में कर ली जावेंगी और उस के बदले में यदि अंग्रेज कुछ चाहेंगे तो उन्हें रहने के लिए हिन्दुस्तान के सभी जेलों की काल कोठरियां सौंप देने का मैं पक्का वायदा करता हूँ।

हमने फौज के शिक्षण-शिविर का मुआयना किया। करीब सात सौ रंगरूट वहाँ सैनिक शिक्षण पा रहे हैं। उन में खूब उत्साह है। नेताजी उन के काम को देख कर खूब प्रसन्न हुए। जिन के बाप दादों ने पिछले सौ वर्षों से कभी बन्दूक के हाथ भी नहीं लगाया था वे क्लर्क और बनिये फौजी शिक्षण में ऐसी दिलचस्पी ले सकेंगे, ऐसी किसी ने स्वप्न में भी आशा नहीं की थी। पर उन में उत्साह है और इसी कारण व सफल हुए हैं। अब तक अंग्रेज लोग सैनिक और असैनिक जातियों के सबंध में जो दकियानूसी बातें हमें सुना सुना कर, हमारे गले उतारना चाहते थे-उन सब का भंडाफोड़ हो गया है। यह तो एक बहाना मात्र था। असल में वे हमें सैनिक शिक्षण से वंचित रख कर, हमारी गुलामी को मजबूत बनाए रखना चाहते थे और इस प्रकार बहाने बना कर वे पूरी कौम को सैनिक शिक्षण से दूर ही दूर रखने का सोचे हुए थे।

उनकी योजना इस तरह की रही है कि कुछ ऐसे खास परिवारों के लिए ही फौजी तालीम और फौजी नौकरिएँ सुरक्षित रक्खी जाएं कि जो वक्त आने पर देशद्रोह कर के अंग्रेजों के जी हजूरे रह सकें। लेकिन पूर्वी एशिया के हम—हिन्दुस्तानियों ने इस रहस्य को समझ कर इस का मूलोच्छेदन कर दिया है।

२८ सितम्बर, १९४३

स्वाधीन भारत के अंतिम मुगल-सम्राट बहादुरशाह की समाधी पर उनकी बर्षी के उपलक्ष में आज एक शानदार जलसा था रंगून नगर में। हम करीब ५० व्यक्ति उस में भाग लेने के लिए स्योनान से वहाँ पहुँचे। नेताजी ने बहुत ही भावपूर्ण श्रद्धांजली उन्हें अर्पित की

> "यह आश्चर्यकारक, परन्तु इतिहास का एक अभूत-पूर्व संयोग है कि भारत के अंतिम सम्राट बर्मा की भूमि पर शान्ति ले रहे हैं और स्वतंत्र बर्मा के अंतिम सम्राट को अंतिम विश्राम लेने के लिए भारतभूमि की गोद मिली है।
>
> "सर्वसाधारण में जो सम्राट था और सम्राटों के बीच में जो पूर्ण मनुष्य था—भारत की स्वाधीनता के लिए जंग करने वाले उस अंतिम शूरवीर की पवित्र समाधी के सामने, उस भव्य विभूति के शान्त पार्थिव शरीर के आगे, हम अपनी अडिग संकल्प-शक्ति व्यक्त करते हैं। इस

समय जब कि हम हिन्दुस्तान के आजादी की आखिरी लड़ाई लड़ने में व्यस्त है—हमारे लिए यह और भी आवश्यक है कि हम स्वाधीनता के संग्राम को अंत तक लड़ने का दृढ़ संकल्प लें, चाहें हमारे पथ में कैसी ही कठिन बाधाएं आएं और चाहे आजादी का यह जंग कितने ही लम्बे अर्से तक चलता रहे। हम उस वक्त तक हथियार नहीं छोड़ें जब तक कि बर्मा और भारत दोनों के शत्रु को हम पछाड़ न दें और न सिर्फ हम अपने अपने मुल्कों में ही स्वाधीन होकर रहें। बल्कि मानव जाति के कल्याण के लिए हम कंधे से कंधा मिला कर बराबर जूझते रहें।

"अब मैं खुद बहादुरशाह की लिखी हुई एक शेर और उस का अर्थ बता कर अपना भाषण समाप्त कर दूंगा।

गाजियों में बू रहेगी
जब तलक ईमान की
तब तो लंदन तक चलेगी
तेग हिन्दुस्तान की

"जब तक हिन्दुस्तान की आजादी के लिए जूझने वालों के दिल में आत्म-विश्वास और श्रद्धा की एक भी सांस चलती रहेगी तब तक हिन्दुस्तान की तलवार लंदन के हृदय को बराबर छेदती ही रहेगी।"

२ अक्टोबर, १९४३

आज महात्मा गाधी की ७५ वीं वर्ष गांठ है। हमने इस पुण्य-पर्व को बड़ी शान से मनाया। एक वृहद सभा की। सभी हिन्दुस्तानियों के मकानों पर तिरंगा झंडा लहराया गया। राष्ट्रीय गीत गाते हुए प्रभात फेरिए और जलूस निकाले गए। एक लाख के करीब खचाखच भरे हुए पंडाल में नेताजी ने गांधीजी की वर्ष गांठ पर उन के विषय में कहा:

"मैं आज आपको यह बताने की कोशिश करूंगा कि भारत के स्वाधीनता-संग्राम के इतिहास में महात्माजी का क्या स्थान है। भारत और भारत के इस आजादी के जंग को जो सेवाएं महात्मा गाधी ने अर्पित की हैं वे अभूतपूर्व हैं। उन का कोई सानी नहीं। उन का नाम हमारे राष्ट्रीय इतिहास में सदैव के लिए सोने के अक्षरों में अंकित किया जावेगा।

"जब पिछला महायुद्ध समाप्त हो गया था और हिन्दुस्तान के नेताओं ने आज़ादी की माँग की थी जिस के लिए अंग्रेज़ों ने लम्बे लम्बे वायदे कर छोड़े थे तब उन्हें पहिली बार पता चला कि उनके साथ किस प्रकार मक्कारी से विश्वासघात किया गया है। १९१९ में उन्हें अपनी आज़ादी की माँग के उत्तर में रौलट एक्ट मिला जिस से उन की रही सही आज़ादी भी समाप्त हो गई। पर जब उन्होंने इस काले कानून का विरोध किया तो जलियाँवाला-बाग का हत्याकांड उन के सामने आया। पिछले महायुद्ध में की गई मदद और कुर्बानियों का बदला दिया इन अंग्रेज़ों ने दमघुटाने वाला रौलट एक्ट बना कर और निहत्थे और भारतीय मनुष्यों को गोलियों से-जलियाँवाले बाग में भून कर।

"१९१९ की इन दुर्घटनाओं के बाद भारतवासी घबरा गए। उनकी कार्य-शक्ति पंगु पड़ गई। स्वाधीनता प्राप्त करने की हर कोशिश को अंग्रेज़ों ने अपने पशुबल से बुरी तरह कुचल डाला। वैध-आन्दोलन, ब्रिटिश माल का बहिष्कार और सशस्त्र-क्रांति आदि सभी उपाय स्वतन्त्रता प्राप्त करने में एक ही तरह से असफल रहे। आशा की एक भी किरण नहीं रह गई थी बाकी। लोग क्या करें? अंधेरे में थे—टटोलते थे कि कहीं कोई रास्ता, कोई तरीका, कोई नया हथियार मिल जाए आज़ादी प्राप्त करने का। ठीक इस समय गांधीजी अपने अमोघ अस्त्र को ले कर रंग-मंच पर आए। यह था असहयोग और सत्याग्रह या सविनय अवज्ञा का हथियार। ऐसा लगा उस समय कि गांधी, हमारे लिए स्वर्ग के देव दूत की तरह अंधकार से उजाले का रास्ता बताने के लिए ही वहीं से उतर पड़ा हो। हँसते हँसते उन के एक ही इशारे पर तमाम कौम उन के झंडे के नीचे आ कर खड़ी हो गई। हिन्दुस्तान को उसका उद्धारक मिल गया। प्रत्येक मनुष्य का मुँह आशा और श्रद्धा के तेज से चमक उठा। हमारे मनमें आत्म-विश्वास जग गया। अंतिम विजय के संकल्प में नई जान आ गई।

"बीस बरस से भी ज्यादा गांधीजी ने भारत की स्वाधीनता के लिए अथक परिश्रम किया है और कौम ने उन के हर हुक्म की तामील की है—हर कुर्बानी की माँग को पूरा किया है।

"यदि १९२० में महात्माजी अपने नए हथियार के—साथ हमारे सेनानी बन कर आगे न आए होते तो अब तक भारत बेशक पद-दलित हो

रहा होता। इस में जरा भी अतिश्योक्ति नहीं है। देश के लिए इन की सेवाएं अमूल्य और अनुपम है। किसी भी व्यक्ति ने इतने थोड़े समय में इस प्रकार की प्रतिकूल परिस्थितियों में इतना अधिक प्राप्त नहीं किया होगा। इन की तुलना में टर्की के मुस्तफा कमालपाशा जरूर आ सकते हैं जिन्होंने टर्की को महायुद्ध में पराजित होने के बाद भी उबार लिया था और जिस के कारण टर्की निवासियों ने उन्हें गाजी के नाम से पुकारा है।

"१९२० के बाद महात्मा गाधी से कौम ने स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए दो जरूरी बातें सीखी है। पहिला है राष्ट्र का आत्माभिमान जिन के कारण देश में दृढ़ आत्म विश्वास उत्पन्न हो सका है और जिसके कारण ही आज उसका हृदय क्रांति के भावों से ओतप्रोत है। दूसरा मिला है एक अखिल भारतीय सगठन जिस की पहुंच अब भारत के हर गाँव और सुदूर देहातों तक होचकी है।......

"महात्माजी ने आजादी की सीधी राह पर हमारे पैर मजबूती से रोप दिए हैं। आज गाधीजी और दूसरे नेता जेल के सीखचों के पीछे सड़ रहे है। इसलिए जो काम गाधीजी ने प्रारम्भ कर दिया है उसे देशवासियों को पूरा करना है—चाहे वे देश में हों या विदेशों में।

"आज मैं तुम्हें एक बात का स्मरण दिलाना नहीं भुलूंगा। दिसबर। १९२० में जब महात्माजी ने कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में असहयोग का मार्ग देश के सामने रक्खा था उस समय उन्होंने कहा था कि "आज यदि हिन्दुस्तान के पास तलवार होती तो अवश्य ही वह तलवार खींच कर मुकाबिले में आता" आगे चल कर महात्माजी ने बताया कि क्योंकि आज हिन्दुस्तान में सशस्त्र क्रांति संभव नहीं दिखती इस वास्ते हमें दूसरा रास्ता अख्तियार करना है और वह है असहयोग और सत्याग्रह का।

"उस के बाद तो गंगा में काफी पानी बह चुका है। आज हम तलवार खींच कर मुकाबिला कर सकते है। हमें इस बात का अपार हर्ष है कि हिन्दुस्तान की आजादी के जंग को लड़ने वाली फौज का निर्माण हो चुका है और वह निरंतर शक्तिशाली होती जा रही है।"

थी। चारों ओर स्तब्धता का अखण्ड साम्राज्य था। ओठों को दबाए हुए, चमकती आँखों से, तने हुए शरीर के साथ हम उनके भावावेग पर विजय प्राप्त करने के वेला की प्रतीक्षा कर रहे थे। हम सचमुच बहुत उत्सुक थे कि इतने में ही थोड़ी देर बाद मगल और गंभीर वाणी में उन्होंने बोलना शुरू किया

"हिन्दुस्तान का मैं सदैव एक विनम्र सेवक रहूँगा और अपने अड़तीस करोड़ भाई बहनों के कल्याण का सदा-सर्वदा ध्यान रखूँगा। यह मेरे लिए मेरा सब से महान कर्त्तव्य होगा।

"स्वाधीनता प्राप्त करने के बाद भी, उस स्वाधीनता को अक्षुण्ण रखने के लिए मैं अपने रक्त की अंतिम बून्द तक बहाने के लिए प्रस्तुत रहूँगा।"

अब हम आराम से बैठ सके—उन्मुक्त हो कर सांस ले सके।

अस्थाई सरकार का प्रत्येक सदस्य तब बारी बारी से जनता के सामने उपस्थित हुआ और हर एक ने अलग अलग शपथ ली:

"भगवान को साक्षी रख कर—मैं यह पवित्र शपथ लेता हूँ कि अपने मुल्क हिन्दुस्तान और अपने अड़तीस करोड़ देशवासियों की आजादी के लिए, अपने नेता सुभाष चन्द्र बोस के प्रति सर्वदा वफादार रहूँगा और अपने इस उद्देश्य के लिए अपने प्राण और अपना सर्वस्व तक बलिदान करने के वास्ते हरदम तैयार रहूँगा।"

इसके बाद आजाद हिंद सरकार का घोषणा-पत्र हमें पढ़कर सुनाया गया।

यह एतिहासिक घोषणा-पत्र हिन्दुस्तान के भावी इतिहास में देशभक्त-भारतीय शहीदों के खून से लिखा जाएगा। मैं इसे पूरा का पूरा अपनी ही डायरी में क्यों न उतार लूँ?

"१८५७ में अंग्रेजों के आगे बंगाल में पहिली पराजय के बाद भारतीयों ने सौ वर्षों तक एक के बाद एक—लगातार जबरदस्त अंग्रेजी की लड़ाइयाँ लड़ी हैं। यह सौ वर्षों का इतिहास बहादुरी और बलिदानों के बेमिसाल उदाहरणों से भरा पड़ा है। इतिहास के इन पृष्ठों में बंगाल के सिराजुद्दौला और मोहनलाल, दक्षिण के हैदरअली, टीपू सुल्तान और वेलू थम्पी, महाराष्ट्र के पेशवा बाजीराव, अवध की बेगमें, पंजाब के

हुकूमत-ए-आज़ाद हिन्द

२१ ओक्टोबर, १९४३

१६ तारीख को फौज का एक नया ट्रेनिंग कैंप इपोह में खोला गया था।

आज का दिन चिर स्मरणीय है। आजाद हिन्द लीग द्वारा आयोजित और निमन्त्रित महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सम्मेलन आज साढ़े दस बजे से 'दई-तोआ-गेकिजो' स्थान पर प्रारम्भ हुआ। समस्त पूर्वी एशिया से भारतीय प्रतिनिधियों ने इस में भाग लिया। श्री र ने स्वागत भाषण पढ़ा और कर्नल च ने मन्त्री की रिपोर्ट। तब नेताजी मंच पर आगे आए और उन्होंने एक जोश भरा व्याख्यान दिया। पूरे डेढ़ घंटे तक। हजारों की संख्या में, जनता मन्त्र-मुग्ध होकर सुनती रही मानो कोई जादू कर दिया गया हो। उन्होंने अस्थायी आजाद हिन्द सरकार की स्थापना का महत्व हिन्दुस्तानी में र या। श्री स...ने उस का तामिल में अनुवाद कर के सुनाया।

जैसे ही नेताजी ने हिन्दुस्तान के प्रति वफादारी की शपथ ली-त्यों ही वह बड़ा हॉल तालियों की गड़गड़ाट से गूंज उठा और बहुत देर तक गूंजता रहा। एक बार तो वे इतने आर्द्र हो उठे कि कुछ क्षणों तक उनके मुह से एक शब्द भी नहीं निकल सका। उस समय तक उन का गला रुध चुका था और वे अपने हृदयगत भावना के आवेग पर विजय नहीं प्राप्त कर सके थे। जब भावोद्रेक शिथिल पड़ा तब लोगों को पता चला कि शपथ के एक एक शब्द और इस अवसर की पवित्रता ने उन के हृदय पर कितना गहरा प्रभाव डाला है। कभी तेज और कभी धीमे पर प्रतिपन्न दृढ़ स्वरों में उन्होंने पढ़ा:

> "मैं, सुभाष चन्द्र बोस, भगवान को साक्षी रखकर यह पवित्र शपथ ले रहा हूँ कि अपने मुल्क हिन्दुस्तान और अपने अड़तीस करोड़ देशवासियों को मुक्त करने के लिए स्वाधीनता का यह धर्म-युद्ध अपने आखिरी दम तक जारी रखूगा।"

और अचानक ही वे रुक गए। ऐसा मालूम हुआ कि अब उन की वाणी जवाब दे देगी। वे नहीं बोल सकेंगे। हम सभी लोग शपथ का एक एक शब्द मन ही मन दुहरा रहे थे। हम सब लोग सरक सरक कर आगे बढ़ रहे थे-स्वभावत उन के पास पहुँचने का हमारा यत्न हो रहा था। सम्पूर्ण जनता अपने आप को नेताजी में देख रही

थी। चारों ओर स्तब्धता का अखण्ड साम्राज्य था। ओठों को दबाए हुए, चमकती आँखों से, तने हुए शरीर के साथ हम उनके भावावेग पर विजय प्राप्त करने के वेला की प्रतीक्षा कर रहे थे। हम सचमुच बहुत उत्सुक थे कि इतने में ही थोड़ी देर बाद मगल और गभीर वाणी में उन्होंने बोलना शुरु किया.

"हिन्दुस्तान का मैं सदैव एक विनम्र सेवक रहूँगा और अपने अड़तीस करोड़ भाई बहनों के कल्याण का सदा–सर्वदा ध्यान रक्खूँगा। यह मेरे लिए मेरा सब से महान कर्त्तव्य होगा।

"स्वाधीनता प्राप्त करने के बाद भी, उस स्वाधीनता को अक्षुण्ण रखने के लिए मैं अपने रक्त की अंतिम बून्द तक बहाने के लिए प्रस्तुत रहूँगा।"

अब हम आराम से बैठ सके–उन्मुक्त हो कर सांस ले सके।

अस्थाई सरकार का प्रत्येक सदस्य तब बारी बारी से जनता के सामने उपस्थित हुआ और हर एक ने अलग अलग शपथ ली:

"भगवान को साक्षी रख कर–मैं यह पवित्र शपथ लेता हूँ कि अपने मुल्क हिन्दुस्तान और अपने अड़तीस करोड़ देशवासियों की आजादी के लिए, अपने नेता सुभाष चन्द्र बोस के प्रति सर्वदा वफादार रहूंगा और अपने इस उद्देश्य के लिए अपने प्राण और अपना सर्वस्व तक बलिदान करने के वास्ते हरवक्त तैयार रहूँगा।"

इसके बाद आजाद हिंद सरकार का घोषणा–पत्र हमें पढ़कर सुनाया गया। यह एतिहासिक घोषणा–पत्र हिन्दुस्तान के भावी इतिहास में देशभक्त–भारतीय शहीदों के खून से लिखा जाएगा। मैं इसे पूरा का पूरा अपनी ही डायरी में क्यों न उतार लूँ?

"१८५७ में अंग्रेजों के आगे बंगाल में पहिली पराजय के बाद भारतीयों ने सौ वर्षों तक एक के बाद एक—लगातार जबरदस्त अंग्रेजी की लड़ाइयाँ लड़ी हैं। यह सौ वर्षों का इतिहास बहादुरी और बलिदानों के बेमिसाल उदाहरणों से भरा पड़ा है। इतिहास के इन पृष्ठों में बंगाल के सिराजुद्दौला और मोहनलाल, दक्षिण के हैदरअली, टीपू सुल्तान और वेलु थंपी, महाराष्ट्र के पेशवा बाजीराव, अवध की बेगमें, पंजाब के

हुकूमत–ए–आज़ाद हिन्द

२१ ओक्टोबर, १९४३

१६ तारीख को फौज का एक नया ट्रेनिंग कैंप इपोह में खोला गया था।

आज का दिन चिर स्मरणीय है। आज़ाद हिन्द लीग द्वारा आयोजित और निमंत्रित महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सम्मेलन आज साढ़े दस बजे मे 'दई-तोआ-गेकिजो' स्थान पर प्रारंभ हुआ। समस्त पूर्वी एशिया से भारतीय प्रतिनिधियों ने इस में भाग लिया। श्री र...ने स्वागत भाषण पढ़ा और कर्नल च...ने मनी की रिपोर्ट। तब नेताजी मंच पर आगे आए और उन्होंने एक जोश भरा व्याख्यान दिया। पूरे डेढ़ घंटे तक। हजारों की संख्या में, जनता मंत्र-मुग्ध होकर सुनती रही मानो कोई जादू कर दिया गया हो। उन्होंने अस्थायी आज़ाद हिन्द सरकार की स्थापना का महत्व हिन्दुस्तानी में र॰ या। श्री स...ने उस का तामिल में अनुवाद कर के सुनाया।

जैसे ही नेताजी ने हिन्दुस्तान के प्रति वफादारी की शपथ ली-त्यों ही वह बड़ा हॉल तालियों की गड़गड़ाट से गूंज उठा और बहुत देर तक गूंजता रहा। एक बार तो वे इतने आर्द्र हो उठे कि कुछ क्षणों तक उनके मुंह से एक शब्द भी नहीं निकल सका। उस समय तक उन का गला रुध चुका था और वे अपने हृदयगत भावना के आवेग पर विजय नहीं प्राप्त कर सके थे। जब भावोद्रेक शिथिल पड़ा तब लोगों को पता चला कि शपथ के एक एक शब्द और इस अवसर की पवित्रता ने उन के हृदय पर कितना गहरा प्रभाव डाला है। कभी तेज और कभी धीमे पर प्रतिध्व॰ऽद स्वरों में उन्होंने पढ़ा:

> "मैं, सुभाष चन्द्र बोस, भगवान को साक्षी रखकर यह पवित्र शपथ ले रहा हूँ कि अपने मुल्क हिन्दुस्तान और अपने अड़तीस करोड़ देशवासियों को मुक्त करने के लिए स्वाधीनता का यह धर्म-युद्ध अपने आखिरी दम तक जारी रखूंगा।"

और अचानक ही वे रुक गए। ऐसा मालूम हुआ कि अब उन की वाणी जवाब दे देगी। वे नहीं बोल सकेंगे। हम सभी लोग शपथ का एक एक शब्द मन ही मन दुहरा रहे थे। हम सब लोग सरक सरक कर आगे बढ़ रहे थे-स्वभावतः उन के पास पहुँचने का हमारा यत्न हो रहा था। सम्पूर्ण जनता अपने आप को नेताजी मे देख रही

थी। चारों ओर स्तब्धता का अखण्ड साम्राज्य था। ओठों को दबाए हुए, चमकती आँखों से, तने हुए शरीर के साथ हम उनके भावावेग पर विजय प्राप्त करने के बेला की प्रतीक्षा कर रहे थे। हम सचमुच बहुत उत्सुक थे कि इतने में ही थोड़ी देर बाद मंगल और गंभीर वाणी में उन्होंने बोलना शुरु किया:

> "हिन्दुस्तान का मैं सदैव एक विनम्र सेवक रहूँगा और अपने अड़तीस करोड़ भाई बहनों के कल्याण का सदा-सर्वदा ध्यान रक्खूंगा। यह मेरे लिए मेरा सब से महान कर्तव्य होगा।
>
> "स्वाधीनता प्राप्त करने के बाद भी, उस स्वाधीनता को अक्षुण्ण रखने के लिए मैं अपने रक्त की अंतिम बून्द तक बहाने के लिए प्रस्तुत रहूँगा।"

अब हम आराम से बैठ सके-उन्मुक्त हो कर सांस ले सके।

अस्थाई सरकार का प्रत्येक सदस्य तब बारी बारी से जनता के सामने उपस्थित हुआ और हर एक ने अलग अलग शपथ ली:

> "भगवान को साक्षी रख कर-मैं यह पवित्र शपथ लेता हूँ कि अपने मुल्क हिन्दुस्तान और अपने अड़तीस करोड़ देशवासियों की आजादी के लिए, अपने नेता सुभाष चन्द्र बोस के प्रति सर्वदा वफादार रहूँगा और अपने इस उद्देश्य के लिए अपने प्राण और अपना सर्वस्व तक बलिदान करने के वास्ते हरवक्त तैयार रहूँगा।"

इसके बाद आजाद हिंद सरकार का घोषणा-पत्र हमें पढ़कर सुनाया गया।

यह एतिहासिक घोषणा-पत्र हिन्दुस्तान के भावी इतिहास में देशभक्त-भारतीय शहीदों के खून से लिखा जाएगा। मैं इसे पूरा का पूरा अपनी ही डायरी में क्यों न उतार लूँ?

> "१८५७ में अंग्रेजों के आगे बंगाल में पहिली पराजय के बाद भारतीयों ने सौ वर्षों तक एक के बाद एक—लगातार जबरदस्त खूरेजी की लड़ाइयां लड़ी हैं। यह सौ वर्षों का इतिहास बहादुरी और बलिदानों के बेमिसाल उदाहरणों से भरा पड़ा है। इतिहास के इन पृष्ठों में बंगाल के सिराजुद्दौला और मोहनलाल, दक्षिण के हैदरअली, टीपू सुल्तान और वेलू थम्पी, महाराष्ट्र के पेशवा बाजीराव, अवध की बेगमें, पंजाब के

हुकूमत-ए-आज़ाद हिन्द

२१ ओक्टोबर, १९४३

१६ तारीख को फौज का एक नया ट्रेनिंग कैंप इपोह में खोला गया था।

आज का दिन चिर स्मरणीय है। आजाद हिन्द लीग द्वारा आयोजित और निमंत्रित महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सम्मेलन आज साढ़े दस बजे से 'दई-तोआ-गेकिजो' स्थान पर प्रारंभ हुआ। समस्त पूर्वी एशिया से भारतीय प्रतिनिधियों ने इस में भाग लिया। श्री र ने स्वागत भाषण पढ़ा और कर्नल च ने मंत्री की रिपोर्ट। तब नेताजी मंच पर आगे आए और उन्होंने एक जोश भरा व्याख्यान दिया। पूरे डेढ़ घंटे तक। हजारों की संख्या में, जनता मंत्र-मुग्ध होकर सुनती रही मानो कोई जादू कर दिया गया हो। उन्होंने अस्थायी आजाद हिन्द सरकार की स्थापना का महत्व हिन्दुस्तानी में र ाया। श्री स...ने उस का तामिल में अनुवाद कर के सुनाया।

जैसे ही नेताजी ने हिन्दुस्तान के प्रति वफादारी की शपथ ली—त्यों ही वह बड़ा हॉल तालियों की गड़गड़ाट से गूंज उठा और बहुत देर तक गूंजता रहा। एक बार तो वे इतने आर्द्र हो उठे कि कुछ क्षणों तक उनके मुंह से एक शब्द भी नहीं निकल सका। उस समय तक उन का गला रुध चुका था और वे अपने हृदयगत भावना के आवेग पर विजय नहीं प्राप्त कर सके थे। जब भावोद्रेक शिथिल पड़ा तब लोगों को पता चला कि शपथ के एक एक शब्द और इस अवसर की पवित्रता ने उन के हृदय पर कितना गहरा प्रभाव डाला है। कभी तेज और कभी धीमे पर प्रतिपन्न दृढ़ स्वरों में उन्होंने पढ़ा .

> "मैं, सुभाष चन्द्र बोस, भगवान को साक्षी रखकर यह पवित्र शपथ ले रहा हूँ कि अपने मुल्क हिन्दुस्तान और अपने अड़तीस करोड़ देशवासियों को मुक्त करने के लिए स्वाधीनता का यह धर्म-युद्ध अपने आखिरी दम तक जारी रखूंगा।"

और अचानक ही वे रुक गए। ऐसा मालूम हुआ कि अब उन की वाणी जवाब दे देगी। वे नहीं बोल सकेंगे। हम सभी लोग शपथ का एक एक शब्द मन ही मन दुहरा रहे थे। हम सब लोग सरक सरक कर आगे बढ़ रहे थे-स्वभावतः उन के पास पहुंचने का हमारा यत्न हो रहा था। सम्पूर्ण जनता अपने आप को नेताजी में देख रही

थी। चारों ओर स्तब्धता का अखण्ड साम्राज्य था। ओठों को दबाए हुए, चमकती आँखों से, तने हुए शरीर के साथ हम उनके भावावेग पर विजय प्राप्त करने के वेला की प्रतीक्षा कर रहे थे। हम सचमुच बहुत उत्सुक थे कि इतने में ही थोड़ी देर बाद मगल और गंभीर वाणी में उन्होंने बोलना शुरु किया

"हिन्दुस्तान का मैं सदैव एक विनम्र सेवक रहूगा और अपने अड़तीस करोड़ भाई बहनों के कल्याण का सदा-सर्वदा ध्यान रक्खूगा। यह मेरे लिए मेरा सब से महान कर्त्तव्य होगा।

"स्वाधीनता प्राप्त करने के बाद भी, उस स्वाधीनता को अक्षुण्ण रखने के लिए मैं अपने रक्त की अंतिम बून्द तक बहाने के लिए प्रस्तुत रहूँगा।"

अब हम आराम से बैठ सके-उन्मुक्त हो कर सांस ले सके।

अस्थाई सरकार का प्रत्येक सदस्य तब बारी बारी से जनता के सामने उपस्थित हुआ और हर एक ने अलग अलग शपथ ली :

"भगवान को साक्षी रख कर-मैं यह पवित्र शपथ लेता हूँ कि अपने मुल्क हिन्दुस्तान और अपने अड़तीस करोड़ देशवासियों की आजादी के लिए, अपने नेता सुभाष चन्द्र बोस के प्रति सर्वदा वफ़ादार रहूगा और अपने इस उद्देश्य के लिए अपने प्राण और अपना सर्वस्व तक बलिदान करने के वास्ते हरवक्त तैयार रहूँगा।"

इसके बाद आजाद हिंद सरकार का घोषणा-पत्र हमें पढ़कर सुनाया गया।

यह एतिहासिक घोषणा-पत्र हिन्दुस्तान के भावी इतिहास में देशभक्त-भारतीय शहीदों के खून से लिखा जाएगा। मैं इसे पूरा का पूरा अपनी ही डायरी में क्यों न उतार लूँ?

"१८५७ में अंग्रेजों के आगे बंगाल में पहिली पराजय के बाद भारतीयों ने सौ वर्षों तक एक के बाद एक—लगातार जबरदस्त खूनी की लड़ाइयां लड़ी है। यह सौ वर्षों का इतिहास बहादुरी और बलिदानों के बेमिसाल उदाहरणों से भरा पड़ा है। इतिहास के इन पृष्ठों में बंगाल के सिराजुद्दौला और मोहनलाल, दक्षिण के हैदरअली, टीपू सुल्तान और वेलु थम्पी, महाराष्ट्र के पेशवा बाजीराव, अवध की बेगमें, पंजाब के

के सरदार श्यामसिंह अटारी वाले और अभी अभी तो झाँसी की बहादुर रानी लक्ष्मी बाई, तांतिया टोपी, डुमरॉव के कुंवरसिंह और कानपुर के नाना साहब आदि के नाम सदैव के लिए स्वर्ण अक्षरों में अंकित हैं। अपना दुर्भाग्य ही समझिए कि हमारे पूर्वजों ने इस बात का पहिले कभी ख्याल ही नहीं हो सका कि य अंग्रेज तमाम हिन्दुस्तान के लिए एक भयंकर खतरा है और इसी लिए उन्होंने कभी भी एक साथ मिल कर इन के खिलाफ संयुक्त मोर्चा नहीं लिया। अन्त में जब हिन्दुस्तानियों को असलियत का भान हुआ तब उन्होंने अंतिम मुगल सम्राट बहादुर-शाह के झंडे के नीचे सामूहिक रूप में खड़े हो कर सन् १८५७ में स्वाधीनता के शहीदों की तरह अंतिम लड़ाई के लिए उन्हें पर चोट दी।

"१८५७ के बाद अंग्रेजों ने हिन्दुस्तानियों के हाथों से जबरदस्ती हथियार छीन लिए, और जनता पर दमन और आतंक का चक्र चलाया। हिन्दुस्तान की जनता कुछ समय के लिए इस से दबी रही, परन्तु १८८० में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के जन्म के साथ २ कौम में नया जागरण पैदा हो गया। १८८१ से लेकर प्रथम महायुद्ध तक कौम न खोई हुई स्वाधीनता को प्राप्त करने के लिए सभी तरह के उपायों का अवलम्बन कर के देख लिया—उदाहरण के लिए आन्दोलन, प्रोपेगेंडा, प्रचार, अंग्रेजी माल का बहिष्कार, आतंक, तोड़फोड़, गुप्त हत्याएं और अंत में सशस्त्र क्रांति भी। पर कुछ समय के लिए ये सारे उपाय असफल रहे। अत में १९२० तक जब कि भारतीय राष्ट्र असफलताओं का प्रत्यक्षीकरण करते करते थक कर कोई नवीन योजना के निर्माण में चिंतित था, उस समय महात्मा गांधी अपने असहयोग और सत्याग्रह के नए हथियार को लेकर उसकी रक्षा के लिए आगे आए।

"इस प्रकार हिन्दुस्तानी जनता में न सिर्फ राजनैतिक चेतना का ही पुनः जागरण हुआ बल्कि उसने फिर से एक बार अपना राजनैतिक व्यक्तित्व भी प्राप्त कर लिया। अब हिन्दुस्तानी एक स्वर में अपनी आवाज बुलन्द करने लगे। और एक ही सर्वमान्य ध्येय के लिए संगठित होकर निश्चय-बल से आन्दोलन करने लगे। १९३७ से १९३९ तक आठ प्रांतों में कांग्रेस मंत्री मंडल के समय उन्होंने स्व-शासन की योग्यता का खासा अच्छा सबूत

दे दिया। इस तरह इस दूसरे महायुद्ध के शुरु होने के वक्त तक, भारत की स्वाधीनता के लिए हम अपनी तैयारी पूरी कर चुके थे।

"अंग्रेजी हुकूमत ने अपनी धोखेबाजी से हिन्दुस्तानियों को भुलावे में डाले रक्खा है और अपनी लूट और शोषण की वृत्ति से उन्हें भूख से तड़फा तड़फा कर मौत के मुँह में धकेल दिया है। इसी लिए वे आज भारतीय जनता की शुभेच्छा को खो चुके हैं। उनकी हुकूमत अब अपनी अंतिम घड़ियें गिन रही है। इस अभागे शासन के अंतिम अवशेष को नष्ट करने के लिए सिर्फ एक ही ज्वाला की जरूरत है। इस ज्वाला को सुलगाने का काम होगा भारत की स्वाधीनता के लिए लोहा लेने वाली इस फौज का।

"अब जब कि स्वाधीनता की उषा के उदय होने का वक्त आ पहुंचा है—उस समय भारतीय जनता का यह कर्त्तव्य होजाता है कि वह अपनी एक अस्थायी सरकार संगठित करके—उस सरकार की अध्यक्षता में ही अपना अंतिम जंग शुरु कर दे। परन्तु सभी भारतीय नेताओं के इस समय जेल में बन्द होने के कारण और सभी हिन्दुस्तानियों को जबरदस्ती निशस्त्र बना दिए जाने के कारण—देश में इस प्रकार की अस्थायी सरकार का बनाना अथवा उसकी अध्यक्षता में एक सशस्त्र संघर्ष पैदा करना असम्भव है। इसलिए पूर्वी एशिया की आज़ाद हिन्द लीग को, जिसे देश में और देश के बाहिर सभी देशभक्तों का समर्थन प्राप्त है, यह काम हाथ में ले ही लेना चाहिए और इस लीग द्वारा संगठित **आजाद हिन्द फौज** की सहायता से उसे आजादी का अंतिम युद्ध लड़ ही लेना चाहिए। यह इसका पवित्र धर्म है। महान कर्तव्य है।

"अस्थायी सरकार को यह अधिकार है और इस लिए वह प्रत्येक भारतवासी से वफादारी की माँग करती है। यह हुकूमत अपने सभी नागरिकों को धार्मिक स्वतन्त्रता के साथ साथ समान अधिकार और आगे बढ़ने के सभी समान अवसरों को प्रदान करने का विश्वास दिलाती है। यह हुकूमत सम्पूर्ण राष्ट्र और उसके सभी भागों के कल्याण और वैभव में वृद्धि करने के कार्य करने के अपने दृढ़ निश्चय की घोषणा करती है। यह राष्ट्र की सभी सन्तानों के समान लालन पालन का जिम्मा लेती है और विदेशी शासन द्वारा धूर्ततापूर्वक पैदा

किए गए सभी मतभेदों को न्याय-पूर्ण तरीकों से मटियामेट करने की प्रतिज्ञा करती है।

"हम ईश्वर के नाम पर—अपनी उस पुरानी पीढ़ी के नाम पर—जिसने भारत को एक राष्ट्र में परिवर्तित किया है—और हमारे उन शहीदों के नाम पर—जिन्होंने हममें वीरता और बलिदानों की परिपाटी पैदा कर दी है—हम भारतीय जनता को ललकार रहे हैं कि वह हमारे भंडे के नीचे आए और स्वाधीनता के लिए अपनी कुर्बानियों से हमारा पथ प्रशस्त करें। हम अंग्रेजों और भारत में रहने वाले उन के मित्रों के खिलाफ जिहाद बोलने के लिए अपने देशवासियों का आह्वान करते हैं। हमें विश्वास है कि इस अंतिम युद्ध में विजय का दृढ़ निश्चय ले कर हिन्दुस्तान से जबतक अंग्रेजों को नहीं भगा दिया जाएगा और जबतक हिन्दुस्तान को फिर से एक आजाद राष्ट्र नहीं बनादिया जायेगा तबतक हमारे देशवासी इस आजादी के जंग को हिम्मत, धैर्य और बहादुरी के साथ अंत तक चालू रक्खेंगे।"

आजाद हिन्द की अस्थायी सरकार की तरफ से इस घोषणा-पत्र के नीचे निम्न लिखित अधिकारियों के हस्ताक्षर थे।

१ सुभाष चन्द्र बोस	—	राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री, युद्ध मंत्री-विदेश मंत्री
२. कैप्टिन श्रीमती लक्ष्मी	—	महिला संगठन विभाग
३. एस. ए. ऐयर	—	प्रचार और प्रोपेगेंडा विभाग
४. लैफ्टिनेंट कर्नल ए सी चैटर्जी		अर्थ विभाग
५. ,, ,, अजीज अहमद		आजाद हिन्द फौज के प्रतिनिधि
६. ,, ,, एन. एस. भगत		
७. ,, ,, जे. के. भोंसले		
८. ,, ,, गुलजारा सिंह		
९. ,, ,, ए. डी. लोगनादन		
१०. ,, , इशान कादिर		
११. ,, ,, शाहनवाज		
१२. ए. एन सहाय	—	सेक्रेट्री-(मंत्री के अधिकारों वाला)
१३. रास बिहारी बोस	—	प्रधान परामर्शदाता

१४. करीम गनी
१५. देबनाथ दास
१६. डी. एम. खान
१७. ए येलप्पा
१८. जे. थिवी
१९ सरदार ईशरसिंह

(परामर्शदाता)

२०. ए. एन सरकार— वैधानिक सलाहकार

मुझे नेताजी के भाषण में से भी कुछ अंश यहा उद्धृत कर लेने चाहिए।

"पिछले कुछ महीनों से हिन्दुस्तान में बेशक हमारे उद्देश्यों के अनुकूल स्थिति पैदा होती जा रही है लेकिन जनता के लिए वह अधिक से अधिक उत्पीड़न पैदा करने वाली परिस्थिति है।

"देश के विभिन्न भागों में और खास कर बंगाल में–भयंकर अकाल उत्पन्न होने से भारत में राजनैतिक संघर्ष अधिक तीव्र हो उठा है। इसमें शक करने की जरा भी गुंजाइश नहीं कि इन अकालों का स्पष्ट कारण अंग्रेजों द्वारा पिछले चार वर्षों तक लगातार हमारे अन्न स्रोतों का क्रूरतापूर्ण शोषण करना मात्र है। आप लोग तो जानते ही है कि मैंने हमारी लीग की ओर से, हमारे भूखे देश भाइयों के लिए पहिलीबार में ही एक लाख टन चावल, बिना किसी शर्त के बिलकुल मुफ्त, मुल्क को भेजने की 'ऑफर' की थी। लेकिन देश में ब्रिटिश अधिकारियों ने इस भेंट को केवल नामंजूर ही नहीं किया बल्कि इसके लिए हमें उल्टी सीधी गालियाँ भी सुनाई।

"आप लोग यह बात भी शायद जानते है कि पिछली जुलाई के बाद मैंने बहुत बार मलाया, थाईलेंड, बर्मा और इंडोचीन के दौरे किए है। प्रत्येक जगह जो उत्साह मैंने अपने साथियों में पाया है उस के कारण मैं सिर्फ प्रभावित ही नहीं हुआ हूँ बल्कि मेरे आशावाद और विश्वास की भावना को बहुत अधिक ताकत और दृढ़ता मिली है।

"मैं आप को यह भी बतादूँ कि हम लोग केवल इस संघर्ष की ही तैयारी और योजना बना के चुप नहीं हो गए है पर साथ ही युद्धोत्तर

निर्माण के लिए भी आयोजना और तैयारी कर रहे हैं। हम अंग्रेजों और उन के साथी अमेरिकनों को भारत से निकाल देने के बाद पैदा होनेवाली स्थिति का अभी से लेखा जोखा करने लगे हैं। इस वास्ते हमने प्रधान कार्यालय में एक नव निर्माण के महकमे को भी स्थापित किया है—जहाँ युद्धोत्तर पुन-निर्माण की समस्याओं का पूरी तरह से अध्ययन किया जा रहा है। सैनिक प्रवृत्तियों के शिक्षण के साथ साथ, हमारे आदमी भारत में नव निर्माण के कार्य का संयोजन करने के लिए भी द्रुत गति से शिक्षित किए जा रहे हैं। संक्षेप में मैं इतना ही कहूँगा कि हम आने वाले जंगे-आजादी की तैयारी में और उस के बाद के काम की तैयारी में किसी तरह की कसर बाकी नहीं छोड़ रहे हैं।

"यदि देश के अन्दर ही हम अपनी सरकार कायम कर सकते, और फिर वह सरकार हमारे इस आखिरी जंगे-आजादी को आरंभ करती तो स्वतः ही कितनी अच्छी बात होती। पर देश की इस विषम परिस्थिति में जब कि सारे के सारे नेता जेल के सीकचों के पीछे बन्द हैं—किसी अस्थायी सरकार को वहीं कायम करने की बात सोचना दुराशा मात्र है—और दुराशा मात्र ही है जंगे-आजादी की इस आखिरी जिहाद को देश से प्रारंभ करना या संगठित करने का विचार तक करना भी। इस वास्ते इस महत्वपूर्ण काम का जिम्मा पूर्वी एशिया के हम भारतवासियों पर ही है।

"हमें इस बात में अब जरा भी सन्देह नहीं है कि जब हम अपनी फौज के साथ भारत की सीमा को पार कर के अपने मुल्क पर अपना तिरंगा झंडा गाड़ देंगे उस समय हमारे मुल्क में सच्चा इनकलाब उठ खड़ा होगा—वह इन्कलाब जो अन्त में ब्रिटिश हुकूमत को मौत के घाट पहुँचा कर ही दम लेगा।

"राष्ट्रीय फौज के निर्माण ने पूर्वी एशिया में स्वाधीनता के हमारे इस समूचे आन्दोलन को एक गंभीर और वास्तविक रूप दे दिया है। यदि इस फौज का निर्माण न हुआ होता तो पूर्वी एशिया में आजाद हिन्द लीग केवल प्रचार का साधन मात्र रह जाती। फौज के निर्माण के कारण अब आजाद हिन्द की राष्ट्रीय सरकार कायम करना जरूरी और आसान भी हो गया है। आजाद हिन्द लीग द्वारा ही स्वाधीनता के इस अंतिम संग्राम

आजाद हिंद की अस्थाई सरकार का मंत्री-मंडल.

बाईं ओर से पहली पंक्ति में खडे हुए—(१) मेजर जनरल चैटर्जी; (२) मेजर जनरल भौसले; (३) सुभाष बोस-सिपह सालार; (४) मेजर डाक्टर लक्ष्मी स्वामीनाथन्; (५) श्री सहाय; (६) श्री एस. ए. एय्यर.

बाईं ओर से दूसरी पंक्ति में खडे हुए—(१) मेजर जनरल लोगनंदन्; (२) लेफ्टिनेंट कर्नल कादिर; (३) लेफ्टिनेंट कर्नल भगतसिंह; (४) लेफ्टिनेंट कर्नल कयानी; (५) लेफ्टिनेंट कर्नल अजीज अहमद; (६) लेफ्टिनेंट कर्नल शाहनवाज; (७) लेफ्टिनेंट कर्नल गुलजार सिंह.

फौज के सिपाही ब्रिटेन और अमेरिका के विरुद्ध युद्ध की घोषणा का स्वागत कर रहे हैं
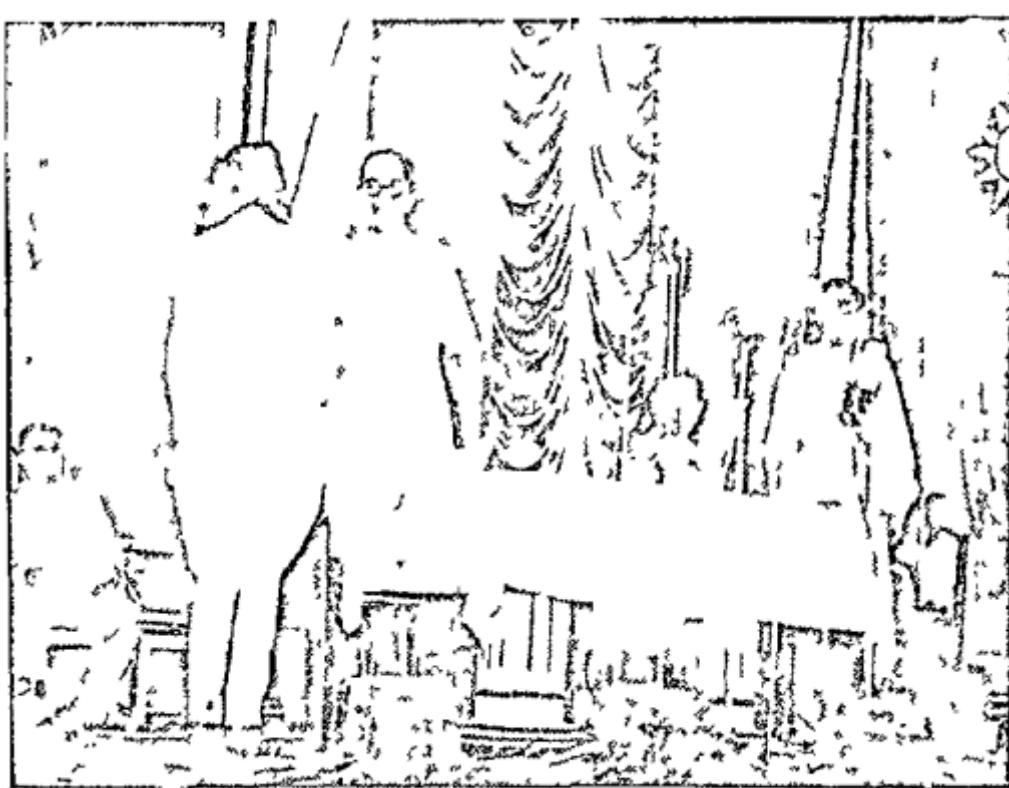
कैप्टन लक्ष्मी महिला विभाग के मंत्रीपद को ग्रहण करते वक्त शपथ ले रही हैं।

आजाद हिंद फौज के गांधी ब्रिगेड का फौजी मुआयना

"मैं, सुभाषचन्द्र बोस, स्वाधीनता के इस पावन संग्राम को अपनी
अंतिम सांस तक जारी रखूंगा।
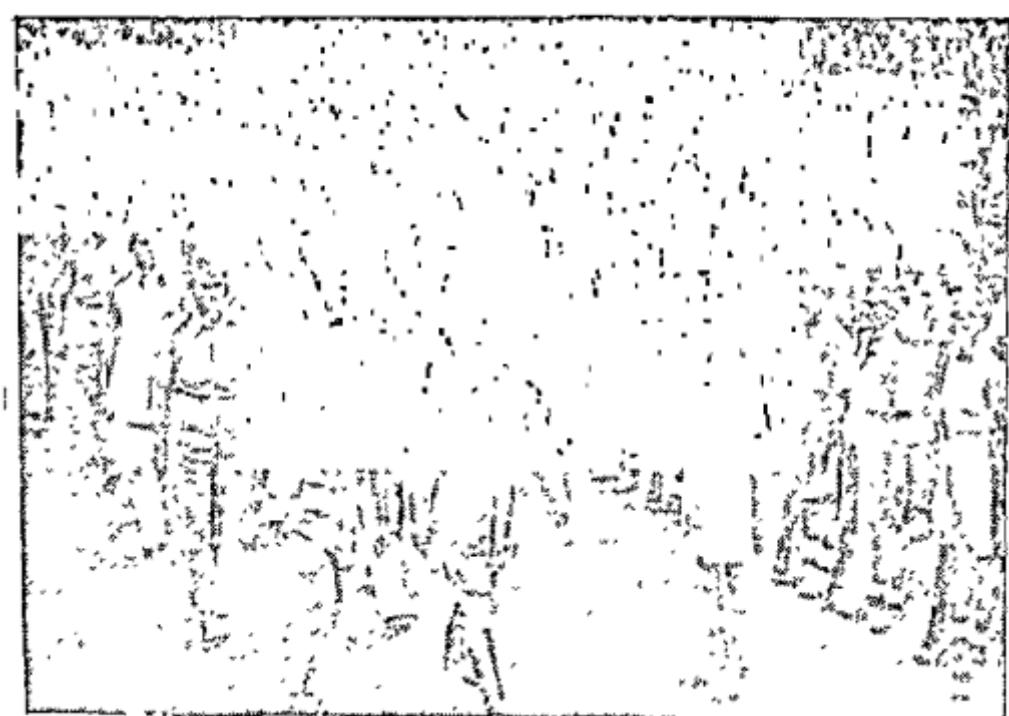
आज़ाद हिंद की अस्थाई सरकार के प्रति वफादारी की शपथ लेते हैं

(२१ अक्टूबर, १९४३)

मेजर जनरल ए डी लोगनदन
चीफ कमिश्नर,
शहीद द्वीप समूह

मेजर जनरल ए सी चैटर्जी
हिंदुस्तान में आजाद
प्रदेशों के गवर्नर,

आजाद हिंद की अस्थाई सरकार के चार स्तम्भ

मेजर जनरल जे के भोंसले
चीफ ऑफ स्टाफ

मेजर जनरल एम जॅड. क्यानी
सेनापति गाधी ब्रिगेड

को आरंभ करने और संचालन करने के लिए ही इस आजाद हिन्द सरकार का जन्म हुआ है।

अस्थायी सरकार कायम करके एक ओर तो हम देश की परिस्थिति की माँग को पूरा करते हैं और दूसरी ओर संसार के इतिहास को दुहरा भी रहे हैं। १९२६ में ही तो आयरों (Irish) ने अपनी अस्थायी सरकार को खड़ा किया था। पिछले युद्ध में जर्मनों ने भी ऐसी ही सरकार का निर्माण किया था। मुस्तफा-कमालपाशा के नेतृत्व में टर्कों ने भी अनातोलिया में अस्थायी सरकार बना डाली थी।"

इस के बाद लाखों कंठों से, गंभीर घोष के साथ राष्ट्रीय गीत फूट पड़ा

सब शुभ चैन का बरखा बरसे भारत भाग है जागा,

पंजाब, सिन्ध, गुजरात, मरहठा, द्राविड़, उत्कल, बंग
चंचल सागर विन्ध्य हिमालय नीली जमना गंग

तेरे नित गुण गाए,
तुझ से जीवन पाए,

सब तन पे आशा।
सूरज बनकर जग पे चमके भारत नाम सुभागा।
जय हो! जय हो! जय हो!
जय जय जय जय हो!

सब के दिल में प्रीत बसाए तेरी मीठी वाणी
हर सूबे के रहनेवाले, हर मजहब के प्राणी

सब भेद और फिरके मिटा के,
सब गोद में तेरी आ के,

गूंथें प्रेम की माला।
सूरज बन कर जग पे चमके भारत नाम सुभागा,
जय हो, जय हो, जय हो
जय जय जय जय हो।

जय हिन्द

सुबह सवेरे पंख पखेरू तेरे ही गुण गाएं
बास भरी भरपूर हवाएं जीवन में ऋतु लाएं

सब मिलकर हिन्द पुकारे
जय आज़ाद हिन्द के नारे

प्यारा देश हमारा!
सूरज बनकर जग पे चमके भारत नाम सुभागा
जय हो, जय हो, जय हो,
जय, जय, जय, जय हो
भारत नाम सुभागा!

२२ अक्टोबर, १९४३

आज हमारे भाग्य जगे। तिरंगे झंडे को उड़ाते हुए नेताजी ने झांसी की रानी रेजिमेंट के शिक्षण शिविर का उद्घाटन किया। आज का दिन तो जान बूझ कर ही चुना गया था। आज ही तो झांसी की रानी का जन्म दिन था। इधर इस युग की झाँसी की रानियों के जन्म दिवस के अवसर पर नेताजी ने मुस्तैदी से अपना काम पूरा कर दिया।

ठीक ५ बजे नेताजी पधारे। स्थानीय महिला परिषद् की प्रेसिडेंट कुमारी स...ने उन का स्वागत किया। जब नेताजी को 'गार्ड आफ आनर' दिया गया उस समय महिलाओं की ओर से कैप्टिन लक्ष्मी भी उन के साथ थीं। उन्होंने राष्ट्रीय झंडे को फहराया। हमने बन्दूकों को हाथ में थामे हुए ही उन का भाषण सुना। प्रतिमाओं की तरह हम खड़ी रहीं। न हिलीं न डुलीं न सांस तक जोर से लेने की हिम्मत कर सकीं। कहीं ऐसा न हो कि नेताजी हम पर जंगे-आजादी की लड़ाकू वीरांगनाएं होने में शक कर बैठें—या उन पर कुछ दूसरी तरह का असर न हो जाए। मेरे सामने जो नई जिन्दगी आ रही है उससे मैं सहमी जा रही हूँ। हे भगवन! मुझे इस जीवन के सर्वथा योग्य बना, मेरी कमजोरियों और कमियों को नष्ट कर दे—मैं एक क्षण भर के लिए भी अपनी दुर्बलताओं के आगे पराभूत हो कर झुकना नहीं चाहती। इस अपमान से मुझे मौत प्यारी है।

नेताजी बोले.

"बहिनो ! पूर्वी एशिया द्वारा संचालित इस आन्दोलन की प्रगति में हम ने झांसी की रानी रेजिमेंट-शिक्षण-शिविर की स्थापना कर के एक नया अध्याय जोड़ दिया है।

"हम राष्ट्र के पुनर्निर्माण जैसे महान कार्य में दत्तचित्त है और इस अवसर पर हमारी महिलाओं में भी नए प्राणों का संचार होना सर्वथा समयानुकूल और स्वाभाविक ही होगा।

"हमारा अतीत यशस्वी और प्रतापी रहा है। यदि हिन्दुस्तान में पराक्रम पूर्ण परंपरा को स्थान न रहा होता तो हमारा देश झांसी की रानी सरीखी वीरांगनाएं कभी उत्पन्न नहीं कर सका होता। जिस प्रकार प्राचीन भारत में मैत्रयी सरीखी विदुषियाँ थी वैसे ही ब्रिटिश शासन के प्रारंभ से पहिले हिन्दुस्तान ने महाराष्ट्र में अहिल्याबाई, बंगाल में रानी भवानी, दिल्ली के सिंहासन पर रजिया बेगम और नूरजहां सी योग्य शासिकाओं को जन्म दिया था। मुझे पक्का विश्वास है कि भारत-माता फिर ऐसी ही पुत्रियां को अपनी कोख से फिर जन्म देंगी जो गौरवमयी विदुषी और वीरांगनाओं को अतीत के दिनों में उत्पन्न करती रही है।

"यहाँ मैं झांसी की रानी के विषय में कुछ कहे बिना आगे नहीं बढ़ सकूंगा। जब भारत माता की उस वीर लाडली ने स्वाधीनता के संग्राम का श्री गणेश किया था, जानती हैं आप—उस की उम्र केवल बीस वर्ष की थी। क्या आप बीस वर्ष की उस तरुणी के घोड़े पर सवार हो कर रणभूमि में अपनी तलवार के जौहर दिखाने के उमंग की कल्पना कर सकती हैं? इसी से उस वीरांगना के उत्साह और हिम्मत का आसानी से आप अंदाजा लगा सकेंगी। उसके शूरवीरों की शत्रुओं द्वारा भी प्रशंसा करने की बात को उन अंग्रेज जनरलों ने भी जो रानी के खिलाफ मोर्चा लेने गए थे यह कह कर सत्य कर दिया है कि "रानी विद्रोहियों में से सब से जबरदस्त और प्रतापी थी।"—पहिले उसने झांसी के दुर्ग में रह कर लोहा लिया परन्तु जब दुर्ग घेर लिया गया तब वह अपने चुने हुए सैनिकों को ले कर कालपी पर जा डटी और वहाँ पर अपनी तलवार का पानी दिखाया। कालपी में पराजित हो कर भी उसने हिम्मत नहीं हारी। उसे पीछा

हटना पड़ा फिर भी उसने तातिया टोपी का सहयोग लिया और उसके साथ कंधे से कंधा मिला कर युद्ध करती हुई आगे बढ़ी और ग्वालियर के किले को अपने अधिकार में कर लिया। इस किले को उसने अपना प्रधान शिविर बनाकर जग-आजादी के पौधे को अपने खून से सींचती रही और अंत में अपने रण-पराक्रम दिखाती हुई अपने प्राणों की आहुति दे गई।

"दुर्भाग्य था कि रानी हार गई। यह हार रानी की नहीं थी, यह मुल्क की हार थी। रानी-झुक गई पर उस का खून जरूर रंग लाएगा। शहीदों का खून कभी व्यर्थ नहीं जाता। उस का बल हौसला हमेशा कायम रहेगा। और मुल्क आज फिर झांसी की रानियों को पैदा करेगा जो उसे आजादी की राह पर आगे बढ़ाती रहेंगी।"

आज शिक्षण शिविर में हम एक सौ और छप्पन महिलाएं हैं। यह तो प्रधान शिक्षण केन्द्र है। बर्मा और थाईलैंड में महिलाओं के शिक्षण के लिए और भी केन्द्र हैं। लेकिन हमने तो एक हजार महिला सैनिकाएं-केवल मलाया से ही, इन का निश्चय प्रगट कर दिया है।

आज रात को तो मैं शायद मोर की तरह पंख पसार कर गर्व से सर ऊँचा किए हुए घर में कदम रखती, पर घर पहुँचते ही मेरे प..न मेरी थोड़ी मजाक उड़ानी शुरू कर दी। मैं भी इन की परवाह कब करने वाली हूं। यह तो उन में 'मर्दों का बड़प्पन' है जो स्त्री-सैनिका के प्रति एक दकियानूसी विचार रखने के लिए बाधित करता है। जनाब, जरा ठहरिए तो सही आप। फिर पता लगेगा हमारी दृढ़ता का और हम में पनपते हुए दृढ़ सैनिकत्व का! दांतों तले अंगुली न रख दो तो कहना मुझ से! उस दिन मालूम होगा कि जरा से चूहे से डर कर चिल्ला देने वाली भीरु पत्नी झांसी की रानी भी बन सकती है जो वक्त आने पर किसी का खून करने से भी नहीं हिचकेगी क्योंकि देश का देश, और देश-प्रेम इस खून की माँग करता है।

२३ अक्टूबर, १९४३

जापान सरकार ने हमारी अस्थायी सरकार को सरकारी तौर पर मान लिया है और उसे अपने उद्देश्य—देश की पूर्ण आजादी को प्राप्त करने में हर तरह से सहायता और सहयोग देने का वचन दिया है।

हुकूमत-ए-आज़ाद हिन्द

मैं अब बैंग में रहने लगी हूँ। ड्रिल, भाषण और घुड़सवारी की शिक्षा शुरु हो गई है। मुझे शिक्षण में कुछ अधिक समय लगा कर 'अफसरी' की शिक्षा ग्रहण करने को कहा गया है। मैं यह जरूर करूँगी।

जैसे जैसे हमारी फौज मुल्क में घुसती जायगी वैसे वैसे मुल्क में अमन चैन कायम करने की आवश्यकता होगी और इस काम को योग्यता पूर्वक निबाहने के लिए-'शासन संचालन की शिक्षा देने वाला स्कूल' खोल दिया गया है। यहा के शिक्षित अफसर आज़ाद किए हुए हिन्दुस्तान के शासन का भार सम्हालेंगे। इस स्कूल में केवल उच्च शिक्षित लोगों को ही भर्ती किया जाता है। इनमें अपने अपने काम के दक्ष लोग है-टेकनिशियन भी है और शासन करने वाले भी।

२० ओक्टोबर, १९४३

आज़ाद हिन्द सरकार के मंत्री परिषद की दूसरी बैठक जो कल आधी रात के बाद तक होती रही, रात के ०-१५ पर-ब्रिटेन और-अमेरिका के विरुद्ध युद्ध-घोषणा का प्रस्ताव पास कर के उठी। अब हम, हमारी सरकार और हमारा मुल्क ब्रिटेन और अमेरिका को वैध रूप में दुश्मन मानेंगे।

नेताजी ने जब इस बात की घोषणा म्युनिसिपैलेटी की भव्य इमारत के सामने वाले मैदान में पेडाग की बड़ी रैली के अवसर पर कल शाम को की उस समय जयनाद से आकाश गूंज उठा और तालियों कि तुमुल ध्वनि ने बार बार रुक रुक कर इस घोषणा का हृदय से स्वागत किया। पंद्रह मिनिट तक पचास हजार मनुष्यों का यह विशाल जनसमूह इस घोषणा से उन्मत्त हो कर नाचता रहा और बेक़ाबू सा नजर आने लगा। सभा मंच के निकट तक पहुँचने के लिए वह स्थान स्थान पर अपनी सीमाओं से आगे बढ़ता गया। जब नेताजी ने उन्हें जहा वे थे वहीं पर रुक कर सम्मतिसूचक हाथ उठाने को कहा, उस समय, बाप रे बाप! ऐसा मालूम होने लगा मानो हाथों का एक विशाल जंगल ही खड़ा हो गया हो। फौज के सिपाही भी कब पीछे रहने वाले थे। उन्होंने अपनी संगीनों को बंदूकों पर लगाया और सम्मति के रूप में उन्हें ऊपर उठा दिया। चारों ओर चमचमाती संगीनों का समुद्र सा लहरा पड़ा। यह दृश्य मैं जीवन भर भूलने की नहीं। मैंने भी अपनी संगीन म्यान से बाहिर निकाली और उसे बंदूक पर लगा कर ऊपर उठा दिया। हम 'चलो दिल्ली' व जयनाद का नारा पागलों की तरह जोरों से लगाए जा रहे थे, न थकते थे-न रुकते थे।

कल प्रात पेडा पर, टाकुनेटुगी के सामने फौज की सैनिक परेड हुई। ठीक साढ़े दस बजे नेताजी पधारे। वे वक्त के बड़े पाबन्द हैं। अपने मन्त्रीमंडल के साथ उन्होंने फौज का निरीक्षण किया और सलामी ली। उन्होंने एक दिल हिला देने वाला भाषण दे कर, सिपाहियों के जोश को आसमान तक उठा दिया। हमारी टुकड़ी भी वहां थी। यदि नेताजी ने उस समय मुझ से झुक के रस्ते गला काट कर रख देने को भी कहा होता तो सच मानना आप, मैं अविलम्ब अपनी गर्दन काट कर उन के आगे हाजिर कर देती।

नेताजी ने बताया कि फौज का एक, और केवल एक ही उद्देश्य है—मुल्क की आजादी, फौज का सिर्फ एक और केवल एक ही लक्ष्य है—और वह है पुरानी दिल्ली का लाल किला। नेताजी ने प्रश्न किया—क्या कोई ऐसा आदमी भी है जो जोश के एक ही झपट में पड़ कर फौज में भर्ती हो गया हो पर कुछ सोच विचार के बाद उसने अपना मत बदल लिया हो। ऐसा आदमी निडर हो कर मेरे सामने आ सकता है। मैं उसे फौज से चले जाने की खुशी से आज्ञा दे सकता हूं। इस बात को सत्य प्रमाणित करने की कभी जरूरत ही नहीं पड़नी चाहिए कि फौज सिर्फ स्वयंसेवकों की सेना है और ऐसी ही आगे भी रहेगी। इस में भर्ती होने के लिए रत्ती मात्र प्रभाव या जबरदस्ती की हमें जरूरत नहीं है। उन्होंने सवार को ताल ठोंक कर बताया कि देश एक भी नामर्द फौज से विमुख होने को तैयार नहीं है। उन्होंने कहा

> "जब आजाद हिन्द फौज आक्रमण करेगी तो वह अपना आक्रमण अपनी खुद की सरकार की ही देखरेख में करेगी। जब यह अपने मुल्क हिन्दुस्तान में प्रयाण करेगी तो स्वतन्त्र की हुई आजाद हिन्द की भूमि पर अपने आप ही हमारा कब्जा हो जायगा.. . हिन्दुस्तान की आजादी हिन्दुस्तानियों के प्रयत्नों और कुर्बानियों से, हमारी ही फौज द्वारा होगी।"

२६ ओक्टोबर, १९४३

जालान और बेसर स्टेडियम में कल नेताजी ने एक दूसरे मोर्चे पर जो भव्य सफलता प्राप्त की है—जरा उन का अब बयान कर दूं।

जब से नेताजी स्योनान में आए हैं तब से धन और माल के भेंटों की तो वर्षा सी हो रही है। पर उन्हें इतने म समह से सन्तोष नहीं था। इस वास्ते

नेताजी ने एक मास अपील निकाली और स्टेडियम पर उन्होंने हिन्दुस्तानी पूंजीपति व्यापारियों को भी खास तौर से इस काम में हाथ बटाने के लिए जोर दिया।

नेताजी ने गर्जना की :

"जरा उन लोगों की तरफ आँख उठाकर देखिए जो स्वेच्छा से आजाद हिन्द फौज में सम्मिलित होकर यहाँ आवश्यक शिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। वे नहीं जानते कि उन में से हिन्दुस्तान को आजाद देखने के लिए कौन जीवित रहेगा? वे अपने रक्त की अंतिम बूंद तक अपने राष्ट्र देवता के चरणों में अर्पित करदेने के एक मात्र उद्देश्य से कमरिया पहन कर आज तैयार हो रहे हैं। वे इसी निश्चित इरादे के साथ आज खड़े हुए हैं कि हिन्दुस्तान में उन्हें यदि जाना पड़े तो वे आजाद हिन्दुस्तान की धरती पर ही अपने पैर रखेंगे अन्यथा स्वाधीनता की राह पर झूमते झूमते ही अपने प्राण दे देंगे। मैदान छोड़कर पीछे हटने का उनके लिए कोई कार्यक्रम नहीं है।

"जिस समय आजाद हिन्द फौज इस ध्येय के लिए शिक्षण ले रही है कि या तो विजय का वरण करना या फिर अपने रक्त की अंतिम बूंद बहाकर शहीद हो जाना, उस समय पैसे वाले लोग मुझे पूछ रहे हैं कि इस जंग के लिए साधनों का सर्वांगी संगठन करने का अर्थ उनकी संपत्ति का पांच या दस प्रतिशत ही है या और ज्यादा? अपनी संपत्ति के संबंध में 'प्रति सैकड़ा' की बातें करने वाले इन व्यक्तियों से मैं पूछता हूँ कि क्या हम अपने सैनिकों से यह कह सकते हैं कि तुम युद्ध करते समय अपने रक्त का केवल दस प्रतिशत खून ही युद्ध में बहाना और बाकी का अपने लिए बचा लेना?

"हमारी कौम के गरीब से गरीब लोग स्वेच्छा से दौड़े दौड़े आगे आ आ कर उत्साह के साथ अपना सर्वस्व अर्पण कर रहे हैं। चौकीदार, धोबी, नाई, फुटकर-दुकानदार और ग्वालों जैसे निर्धन वर्ग के भारतीयों ने अपनी पसीने की कमाई का जो कुछ अपने पास था उसे देश के नाम पर आजाद हिन्द फौज के संगठन के लिए भेंट कर देने का साहस दिखाया है और उनमें से कई एक तो फौज में भी भर्ती हो गए हैं. . .

"इन में से कई एक गरीब लोगों ने अपनी बची बचाई सारी रोकड़ रकम मुझे लाकर सौंप दी है। यहां तक ही नहीं—वे तो अपने सेविंग बैंक की पास बुकें तक मुझे देकर अपने जीवन भर की सारी कमाई और बचत मुझे सौंप चुके हैं। क्या मलाया के हिन्दुस्तानियों में ऐसा एक भी धनिक नहीं है जो आगे आकर कह दे कि लीजिए—हिन्दुस्तान की आजादी की प्रवृत्तियों के लिए—ये हमारे बैंक की पास बुकें हाजिर हैं?"

'तपस्या और बलिदान के आदर्श सिद्धान्तों पर भारतीय जनता की श्रद्धा है। त्याग की कसौटी पर हिन्दू-समाज में सन्यासी का आदर्श है और मुस्लिम सिद्धान्तों में फकीर का। मैं यह पूछता हूँ कि अड़तीस करोड़ मानव आत्माओं की मुक्ति से बढ़कर क्या कोई दूसरा अधिक महान, अधिक पुण्यशाली और अधिक पवित्र काम भी हो सकता है?

मलाया से मेरी पहली माँग दस करोड़ रुपयों की है। मेरा खयाल है कि मलाया की भारतीय सम्पत्ति का यह करीब दस प्रतिशत ही होगा।

जिस समय धन-संग्रह शुरू हुआ उस समय देखते ही देखते सित्तर लाख डॉलर एक ही बार में इकट्ठे हो गए। और उस से चौबीस घंटों के भीतर भीतर एकत्रित कुल रकम के आंकड़े एक करोड़ और तीस लाख डॉलर के नजदीक पहुँच गए थे।

जर्मनी के विदेश-मन्त्री हेर वॅान रिबनट्रॅाप ने नेताजी को एक सरकारी तार भेज कर सूचित किया है कि जर्मन सरकार हाल ही में स्थापित-आजाद हिंद सरकार के अस्तित्व को स्वीकार करती है। इसी तरह आजाद बर्मा और आजाद फिलीपाइन की सरकारों ने भी आजाद हिन्द सरकार को स्वीकार किया है।

२८ ओक्टोबर, १९४३

नेताजीने आज टोकियो के दुनियाँ के पत्रकारों को मुलाकात देते वक्त एक वक्तव्य दिया। वक्तव्य में नेताजी ने कहा—

"आजाद हिंद की अस्थाई सरकार स्थापित करने के बाद मेरे राजनैतिक जीवन का दूसरा स्वप्न पूरा हुआ है। पहला स्वप्न एक राष्ट्रीय

कार्यालयी मेज टेबल करने का था। अब कहा एक ही स्वतन्त्र राष्ट्र होने वाली है और वह है युद्ध करते जाते हमारी आजादी प्राप्त करना..

"देखने में यह मालूम होता है कि स्वतंत्र भारत एक लम्बे अर्से से बिना किसी उद्देश्य के घूमता रहा है लेकिन क्योंकि आजाद हिन्द के अस्थायी सरकार की पहली बार ही स्थापना हुई है इस लिए ब्रिटेन और अमेरिका के प्रति हमारे रवैये को प्रकट करने वाले घोषणा-पत्र को प्रकाशित करना आवश्यक हो गया है।

"युद्ध की इस घोषणा को केवल प्रचार कार्य का नुस्खा (Propaganda Stunt) ही मत समझिए। हम हमारी प्रवृत्तियों से यह सिद्ध कर देंगे कि हम जो कुछ कहते हैं वही हम करना चाहते हैं। इस निर्णय को कार्यान्वित करने की हमारी शक्ति में यदि मुझे विश्वास नहीं होता तो कम से कम-मैं तो-इस तरह के निर्णय से एकदम दूर ही रहता।"

८ नवम्बर, १९४३

नेताजी को आइरिश प्रजा-सत्ता-वादियों की तरफ से अभिनन्दन का एक सन्देश मिला है। उसे पढ़कर वे खुशी से उछल पड़े। सन्देश आया उस समय मैं ऑफिस में ही थी। नेताजी ने उसे पढ़कर हमें सुनाया और कहा कि यह तार देखकर आयरलैंड के नीलम द्वीप में रहने वाले अपने सभी पूर्व परिचित मित्रों की मेरी स्मृति एकबार फिर ताजी हो गई है और शहादत के स्मारकों से भरे हुए उस देश के सभी पवित्र स्थान मेरी आखों के आगे नाच रहे हैं जिन्हें कोई दिन मैंने प्रत्यक्ष घूम घूमकर बड़े चाव से देखा था। तार में उन्होंने कहा कि हमारा भी कार्य ठीक वैसा ही पवित्र और महान है। हमारी मांग भी हमारे जन्म-सिद्ध अधिकार के लिए है। उसके लिए अपने बलिदान से कीमत चुकाने को हम भी तैयार हैं। इसलिए हमारी विजय होनी ही चाहिए और जिस तरह आयरलैंड के लोगों को स्वाधीनता मिल गई थी उसी तरह हिन्दुस्तान के लोगों को भी आजादी मिल ही जानी चाहिए।"

मंगोलिया, चाइना और मंचुकुओ ने हमारे आजाद हिन्द की सरकार के अस्तित्व को स्वीकार कर लिया है।

८ नवम्बर, १९४३

नेताजी अपने स्टाफ के लोगों के साथ टोकियो गए है। मेरे पति प. .. भी इन के साथ हैं। वृहद् पूर्व एशिया के राष्ट्रों की परिषद वहा मिल रही है। नेताजी ने वहा प्रतिनिधि के रूप में जाने से इन्कार कर दिया है। 'निरीक्षक' होकर के ही वे वहा गए है।

हमारी सरकार इस समय तक एक अस्थाई सरकार ही है और हिन्दुस्तान की भावी आजाद सरकार पर आज से ही किसी प्रकार की जिम्मेदारी का बधन नहीं डालदिया जाए इस स्थिति को ध्यान में रखकर नेताजी ने जो कदम उठाया है वह एकदम उपयुक्त है।

परिषद ने अधिपाद डाक्टर मामो द्वारा रखे हुए उस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार करलिया जिसमें उन्होंने हिन्दुस्तान की आजादी के जग को पूर्ण सहयोग देने के लिए सुझाव रक्खा था। भारतीय समस्याओं के अधिकारी जानकार जापानी डाक्टर श्री शुमेरी ओकावा ने घोषणा की है कि पूर्वी एशिया को शाति के लिए हिन्दुस्तान की आजादी अनिवार्य रूप से आवश्यक है।

जापान की सरकार ने अडमन और निकोबार टापुओं को आजाद हिंद की अस्थाई सरकार के सुपुर्द करदिया है। जनरल टोजो सरकारी तौर पर इस बात की घोषणा परिषद में कर चुके है।

नेताजीने यहा पत्रकारों को एक मुलाकात दी है। उन्होंने कहा है:

"अडमन द्वीप समूह हमें मिल गए। ब्रिटेन की गुलामी के जुए से मुक्त होने वाले प्रथम प्रदेश की तरह इन द्वीप समूहों का भारतीयों के लिए बहुत महत्व है। इस प्रदेश के प्राप्त हो जाने से आजाद हिन्द की अस्थाई सरकार को उसके नाम और उसी तरह वास्तविक दृष्टि से भी राष्ट्रीय स्वरूप हासिल हो रहा है। अन्डमन द्वीप समूह की मुक्ति हमारी आगे की सफलता के लिए एक प्रतीक की तरह बहुत महत्व-पूर्ण है क्योंकि ये टापू ही अंग्रेजों द्वारा हिन्दुस्तान के राजनैतिक कैदियों के लिए सख्त से सख्त जेल के तरीके पर काम में लाए गए थे। देश निकाले के राजनैतिक कैदी भी यहीं रक्खे जाते थे। अंग्रेजों की हुकूमत को खत्म कर देने के 'षडयत्र करने के अपराध में आजीवन कारावास की सजा पाए हुए अधिकाश राज-नैतिक कैदी-जिनकी सख्या हजारों के नजदीक है-उन सबको इसी टापू में बद करके

रक्खागया था। जिस तरह से फ्रांस की राज्यक्रांति के वक्त वहाँ के राजनैतिक कैदियों को बंद रखेजाने वाले पेरिस के 'बैस्टाइल' किले को ही सबसे पहले अधिकार में लेकर सभी राजनैतिक कैदियों को एक साथ मुक्त किया गया था ठीक उसी तरह हिंदुस्तान की आजादी के जंग में अंडमन द्वीप ही सब से पहले अधिकार में किया गया है जहाँ हमारे देशभक्तों को बहुत अधिक यातनाएं सहन करनी पड़ी थीं। अब एक एक करके गुलाम हिन्दुस्तान की सारी भूमि मुक्त होती रहेगी लेकिन सबसे पहले अधिकार में किया हुआ प्रदेश बहुत अधिक महत्व का होता है— इस लिए हमने 'अंडमन' टापुओं का नाम हमारे मैंकड़ों शहीदों की यादगार में 'शहीद द्वीप समूह' रखा है और निकोबार टापू को 'स्वराज्य टापू' का नाम दिया है।...

हम अभिमान के साथ अपने मस्तक को ऊँचा उठा कर खड़े हुए है। हम पूर्व या पश्चिम में अपनी स्थिति किसी से भी कम नहीं समझते।

इटली की सरकारने हमारी अस्थाई आजाद हिन्द सरकार को स्वीकार कर लिया है।

२ दिसम्बर, १९४३

मलाया शाखा के प्रमुख श्री र...के साथ में पंद्रह दिन के लिए दौरे पर गई थी।

हमारे जंग की इस अंतिम अवस्था में मलाया के संघ को बहुत ही महत्व का भाग अदा करना पड़ेगा। हमारी फौज की कुछ विशिष्ट टुकड़िया उत्तर की तरफ भेजी जा चुकी है। उन्हें बर्मा में ठहरने का आदेश है।

हमारी सरकार ने ब्रिटेन और अमेरिका के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी है और 'समझौता' शब्द हमारे कोष से निकाल बाहर फेंक दिया गया है।

मलाया अब हमारे मोर्चे से निकट तम पिछला सदर मुकाम रहेगा। यहाँ से हमारी सरकार के लिए धन और फौज के लिए स्वयंसेवकों का प्रवाह निरंतर बहता रहना चाहिए कि जिस से उस के काम में जरा भी बाधा न आने पाए। नेताजी के आजाने के बाद आजाद हिन्द लीग के काम में जरा चुस्ती और मुस्तैदी आ गई है। आजाद हिन्द लीग की शाखाओं और उप-शाखाओं का पूरी तरह से पुनर्संगठन कर डाला गया है। आने वाले वर्ष में नेताजी मलाया से बीस हजार स्वयं-सेवक फौज के लिए चाहते हैं। अब तो हमने प्रत्येक हिन्दुस्तानी को फौजी शिक्षण देना आरंभ कर दिया है चाहे वह फौज में जाने का इरादे रक्खे अथवा

नहीं। जिस फौजी शिक्षण को भी वर्षों तक अंग्रेजों ने हम से कोसों दूर रक्खा था उसे हमारी जनता की सरकार ने बिना किसी प्रकार की फीस लिए ही मुफ्त में देने की व्यवस्था कर डाली है। हिन्दुस्तानियों को हमें स्वतन्त्र राष्ट्र के युद्ध-प्रिय नागरिक बनना है। अंग्रेजों ने जो नामर्दगी और बुजदिली हमारे भीतर जबरदस्ती पैदा करदी है उस हमें नेस्त-ओ-नाबूद कर डालना है। मुझे तो अभी भी नशा हो रहा है कि अब हम हर तरह की मुसीबतों को झेलने की पूरी तैयार कर रहे हैं।

आजाद हिन्द लीग के सदस्यों की संख्या में काफी तरक्की हुई है। नेताजी हर हिन्दुस्तानी को इस का सदस्य हुआ देखना चाहते हैं। स्योनान, जोहोर और मल्लाका में हिन्दुस्तानियों की आबादी के क्रमशः [illegible]४, [illegible]६ और ६० प्रतिशत लोग ही अब तक लीग के सदस्य हो सके हैं।

आजाद हिन्द लीग की शाखाओं का काम सामाजिक कल्याण, राजनैतिक प्रचार, फौज के लिए स्वयं सेवकों की भर्ती, धन इकट्ठा करना और सांस्कृतिक कार्य आदि है। मेरे पिछले दौरे से अबतक हिन्दुस्तानी भाषा सीखने की शौक बहुत अधिक बढ़ गई है। हिन्दुस्तानियों के प्रत्येक मुहल्ले में हिन्दुस्तानी की क्लास खुल चुकी है। मुझे तो एक भी स्थान ऐसा नहीं दिखाई पड़ा जहाँ मैंने औरतों और मर्दों को हिन्दुस्तानी सीखने के लिए दिलचस्पी लेते और प्रसन्न करते हुए न पाया हो। मलाया के भीतरी भाग की आबादी तामिलों की है। उन का हिन्दुस्तानी के प्रति यह प्रेम निसंदेह राष्ट्रीयता का द्योतक है। कुआलालम्पुर में तो रेडियो पर हिन्दुस्तानी में सबक सिखाने तक की सुन्दर व्यवस्था कर डाली गई है।

इस का अर्थ यह न समझें कोई कि तामिल सिखाने के लिए हमारे यहाँ बच्चों की स्कूलें हैं ही नहीं। श्री रामकृष्ण मिशन के लोग हिन्दुस्तानी के प्रचार का काम करते हुए आजाद हिन्द लीग को हर तरह से सहायता कर रहे हैं। हिन्दुस्तान के ये मिशनरी सचमुच ही देशप्रेम से ओतप्रोत हैं और पीड़ित मानवता के प्रति उनकी श्रद्धा और भक्ति उच्च कोटि के योरोपियन मिशनरियों के लिए भी ईर्षा की वस्तु है।

जोहोर और मल्लाका की यात्रा में श्री क. हमारे साथ हो गए थे। वे बहुत ही बढ़िया वक्ता हैं। उन्होंने मुझे बताया कि सब से मददगार फौजों की माँग एक दम बढ़ गई है। करीब दो लाख और पचीस हजार मेम्बर बन

चुके हैं । आजाद हिन्द लीग के क्रियाशील कार्यकर्त्ताओं के लिए एक विशिष्ट प्रकार का "कार्यकर्त्ता का बैज" तैयार किया गया है । इस बैज के आसमानी रंग में मणी इस की पहचान है । उन्होंने बताया कि सिर्फ मलाया मलाया में ही करीब पन्द्रह हजार बैज बँटे जा चुके हैं । यह बैज चौबीस घंटे काम करने वालों के लिए ही हैं । इस बैज को पहनने वाला व्यक्ति अपने हर कार्यकर्त्ता को अपना भाई और बराबरी का मानता है चाहे वह कितने ही महत्त्व का काम क्यों न कर रहा हो । यह भाईचारे का सम्बन्ध अवश्य ही सराहनीय है ।

आजाद हिन्द लीग ने यहाँ लका मयघी एक महकमा भी खोल दिया है और इस का काम भी अच्छे ढंग से होने लग गया है ।

'पूर्ण स्वराज्य' नामक हमारा दैनिक पत्र अत्यन्त लोक-प्रिय है । इस की पहुंच ऐसे हर कोने तक है जहाँ एक भी हिन्दुस्तानी उसे पढ़ सकता है । साप्ताहिक 'जय हिन्द' का भी काफी नाम है । मुझे पेनाग की एक सभा याद है जहाँ दस मिनिट में अकेली मैंने सौ प्रतियां बेच डाली थीं जब कि मेरी तरह अखबार बेचने वाली इस टोली में और भी बहुत सी अन्य लड़कियाँ थीं ।

१० दिसम्बर, १९४३

यदि हम आजाद हिन्द लीग में काम करने वाली भिन्न भिन्न जातियों और सम्प्रदायों के लोगों की तरफ ध्यान दें और—फिर उन के विशुद्ध प्रेम और अनुभाव पर मनन करें तो सचमुच हमें दांतों तले अंगुली दबाकर रह जाना पड़ता है । यहाँ न जरा भी साम्प्रदायिकता है और न रत्ति मात्र संकीर्णता । मुसलमान, हिन्दू, ईसाई, यहूदी और दूसरे सभी मिल कर सगे भाइयों की तरह रहते हैं और कामकाज करते हैं ।

हमारे शिक्षण शिविर में भी हमने साम्प्रदायिकता की समस्या का एक जादू भरे तरीके से हल कर डाला है । हमारे झांसी की रानी-शिक्षण-शिविर में सब एक साथ बैठ कर भोजन करते हैं । पहिले निरामिष भोजन परोसा जाता है और फिर जो मांस खाते हैं उन्हें मांस भी परोस दिया जाता है । पर मजा तो यह है कि बैठने सब साथ साथ हैं । भोजन सम्बन्धी पाखण्ड को हमने पूरी तरह से धता बता दिया है । पहिले तो यह समस्या जरा कठिन सी मालूम पड़ी, पर आजाद हिन्द लीग ने सभाएं और तरह तरह की चर्चाएं कर के राष्ट्रीयता का

खूब जोर दिया और आम जनता को खूब अच्छी तरह से इस भेद और पाखंड की पोल खोल कर समझा दी। हिन्दुस्तान में जो अंग्रेजों की भेद नीति के शिकार हैं—उन के लिए हमारी सफलता अवश्य ही आँखें खोल देने वाली चीज है। स्वाधीनता के आदर्श के सामने साम्प्रदायिकता अपनी मौत को अपने आप ही निमंत्रित कर देगी। १६२१ के खिलाफत और असहयोग आन्दोलन में क्या मुसलमान भाइयों ने हिन्दू भाइयों को मस्जिदों में निमंत्रित नहीं किया था? और क्या मुसलमान हिन्दुओं के उत्सवों में शरीक नहीं होते थे? साम्प्रदायिकता का प्रचार सिर्फ उन्हीं गुलामों में हो सकता है जिन के सामने कोई राजनैतिक आदर्श नहीं होते—आजाद होने की कोई हौंस नहीं होती। साम्प्रदायिकता उन आलसी पूँजीपतियों के मन बहलाव और नेतागिरी स्थिर रखने का साधन है जो हमारे मुल्क और हमारी कौम के जानी दुश्मन हैं।

मेरे कान में कुछ अशुभ खबरों की भनक आई है। श्री क ने मुझे यह खबरें दी हैं इसवास्ते उन पर अविश्वास नहीं किया जा सकता। श्री सुभाष के नेतृत्व में आजाद हिन्द लीग ने जो संगठित शक्ति प्राप्त करली है। उससे जापानी आतंकित हो गए हैं। उन्होंने कभी भी स्वप्न तक में यह ख्याल नहीं किया था कि नेताजी आजादी के लिए इस प्रकार के राष्ट्रीय दृष्टिकोण से विचार करेंगे। हमें कठपुतली बनाकर नचाने वाले उनके किसी भी इशारे को जिस योग्यता से नेताजी काट करते है उसे देख कर जापानी असमंजस में पड़ जाते हैं। पर इस का फल भी हमें भोगना ही पड़ रहा है। अब तो हमारी समझ में अच्छी तरह से आ गया है कि क्यों नहीं जापानी हमारी आजाद हिन्द फौज में ४० हजार सिपाहियों से अधिक भर्ती होने देते? जापानियों ने इस से अधिक संख्या पर प्रतिबन्ध लगाया है। फौज के रोजमर्रे की जरूरतों को भी वे ठीक तरह से पूरा नहीं होने देते। उन का बहाना है कि उन के खुद के सिपाही अपनी साधारण आवश्यकताओं से वंचित हैं। पर नेताजी को भुलावे में डालना कोई हँसी खेल नहीं। उन्होंने बाजार में धान से भरे गोदामों की ओर संकेत किया। फिर तो जापानियों ने दूसरा बहाना ढूंढा और नागरिकों की आवश्यकताओं पर जोर दिया तथा बाजार के लिए रेशनिंग और कन्ट्रोल की जरूरतें बताईं। श्री क. ने बताया कि इस समस्या के कारण नेताजी बहुत अधिक परेशान हैं। झांसी की रानी रेजिमेंट के लिए जो अभी अभी कम्बलें खरीदी गई हैं—सच मानना—उन्हें भी काले बाजार से लाना पड़ा है।

२७ दिसम्बर, १९४३

नेताजी, ९ नारिस रोड पर, स्योनान राष्ट्रीय-विद्यालय के पारितोषिक वितरण के उत्सव में शरीक होने गए। उस समय एक छोटा सा पैम्फलेट बाँटा गया था उस में विद्यालय के राष्ट्रीय-दृष्टि-कोण और वहां पढ़ाए जाने वाले विषयों की सम्पूर्ण चर्चा की गई है

हिन्दुस्तानी, हिन्दुस्तान का राष्ट्रीय इतिहास, भारत राष्ट्र निर्माताओं के जीवन-चरित जैसे गान्धीजी, तिलक, नेहरू-द्वय, स. आर. दास, आदि, भारतीय भूगोल, संगीत तथा राष्ट्रीय-गायन, प्राकृतिक विज्ञान, चित्रकारी तथा हाथ का काम, गणित स्वास्थ्य-विज्ञान अंगरेज़ी, नैतिक-विज्ञान, खेलकूद तथा व्यायाम, साबुनसाजी, स्याही बनाना, बिजली द्वारा कलई करना, पानी साफ करना; साइकिल, ग्रामोफोन, और घड़ी की मरम्मत करना आदि। साधारण फौजी क्वायाद तो ड्रिल में आ ही गई है।

विद्यालय में सह-शिक्षण होता है। यहां ५ वर्ष और इस से ऊपर के लड़के लड़कियों को बिना किसी प्रकार के भेदभाव के भर्ती कर लिया जाता है। शाम को प्रौढ़-शिक्षण के लिए दो घंटों तक क्लास हुआ करती है।

पहिले तो एक डॉलर की न्यून स फीस रक्खी गई थी पर अब फीस उठा दी गई है और समूची शिक्षा निःशुल्क कर दी है।

क्रांतिकारी और राष्ट्रीय सेना होने के नाते हमारी फौज अत्यन्त मितव्ययता से काम चलाती है। कर्नल का मासिक वेतन २५०) है और मेजर का १८५) मात्र। फौज कपड़ा और खाना देती है। पर हम सचमुच ही क्रांतिकारियों की तरह जीवन यापन कर रहे हैं और अपनी बचत की पाई पाई आज़ाद हिन्द लीग के कोष में पीछे लौटा देते हैं।

इस वर्ष का हमारा कुल चन्दा ७७,२७,९४७ डॉलर हुआ है। मलाया में स्योनान सब से आगे रहा है। इस शहर की तरफ से कुल चन्दा २९ लाख ६४ हजार डॉलर है।

पर इस में चाँदी और जवाहरात शामिल नहीं हैं। जो भेंट के रूप में प्राप्त होते रहे। उन की कीमत करीब ८५ हजार डॉलर है। ये सब आंकड़े मैंने श्री म...से प्राप्त किए हैं जो हमारे हिसाब-किताब के निरीक्षक हैं।

थोड़े दिन पहिले नेताजी पेनाँग गए। वहाँ उन्होंने अस्थायी सरकार के वास्ते धन की अपील की। घरेलू नौकर की जिन्दगी बसर करने वाले एक नौजवान ने एक चाँदी का फूलदान नेताजी को भेंट किया और फिर उस ने जनता को बताया कि उस के पास यही एक मात्र धन था और अब वह इस से जुदा हो कर अपनी प्यारी स्वर्गस्थ माँ की दी हुई सौगात से बिछुड़ रहा है। नेताजी ने इस युवक की राष्ट्रप्रेम से कूट कूट कर भरी हुई कथा को बहुत ही मार्मिक शब्दों में जनता के आगे रक्खा और फिर उस फूलदान को नीलाम करने लगे। नेताजी का विचार पचीस हजार डॉलर्स में इस सौदे को निबटा देने का था, पर बोली बढ़ती ही गई। जरा भी तो नहीं रुकी। अन्त में वह फूलदान एक लाख और पाँच हजार डॉलरों की कीमत पर बिका।

३० दिसम्बर, १९४३

नेताजी ने आज पहली बार आजाद हिन्द की भूमि शहीद-द्वीप पर पैर रक्खा। पोर्ट ब्लेयर पर—उस पोर्ट ब्लेयर पर—जहाँ हिन्दुस्तान के क्रांतिकारियों को असीम अमानुषिक यातनाएं और यन्त्रणाएं सहन करनी पड़ी थीं। उन्होंने राष्ट्रीय तिरंगा झंडा फहराया। जय हिन्द!

४ जनवरी, १९४४

कर्नल ब. झाँसी की रानी रेजिमेंट के शिक्षण शिविर में आए। उन्होंने सैनिक-अनुशासन पर एक बढ़िया व्याख्यान दिया।

केप्टिन ल. ने शिक्षण शिविर में आए हुए लीग के प्रतिनिधियों से शिक्षित तरुणियों को अधिक से अधिक संख्या में झाँसी की रानी रेजिमेंट में भर्ती होने की अपील करने के लिए प्रार्थना की।

[illegible]गर स्टेट से छ नई युवतियाँ हमारे शिक्षण शिविर में फौजी तालीम लेने आई हैं। कोलालम्पुर से भी दो युवतियाँ अभी अभी आनुदी हैं। कोलालम्पुर में एक स्थानीय रक्षा केंद्र की स्थापना की गई है जहाँ एक हजार से अधिक मनुष्य मदद पा चुके हैं। सामाजिक कल्याण करने वाले अस्पताल में पिछले महीने ४४१ बीमार भर्ती किए गए थे। दवादारू के प्रबन्ध में हमारा खूब रुपया खर्च हो रहा है। कुनैन तो जैसे ही आता है तुरत ही रोगियों में खर्च हो जाता है।

"हमारा शिक्षण अब पूर्णतया समाप्त हो चुका...."

— झांसी की रानी रैजिमेंट —

"समझ में नहीं आता–युद्ध के मोर्चे पर जाने से हमें क्यों रोका जाता है? क्या अबलाएं समझ कर ही हमें सेवा शुश्रुषा के काम तक सीमित कर दिया गया है?–नहीं–यह ठीक नहीं!

"हमारे प्रथम शिक्षण-शिविर का उद्घाटन करते हुए आपने हमें विश्वास दिलाया था कि हमे झांसी के रानी की तरह भयंकर युद्ध में भी लड़सकेंगी... तो फिर....... !"

— झांसी की रानी रैजीमेंट —

"इस दरख्वास्त पर अपने खून से हस्ताक्षर कर के हम यह सिद्ध कर रही हैं कि भारतीय स्वाधीनता के *लिए* अपने प्राणों का उत्सर्ग तक करने को हम दृढमत हैं। फिर हम रण प्रयाण के *लिए*....!"
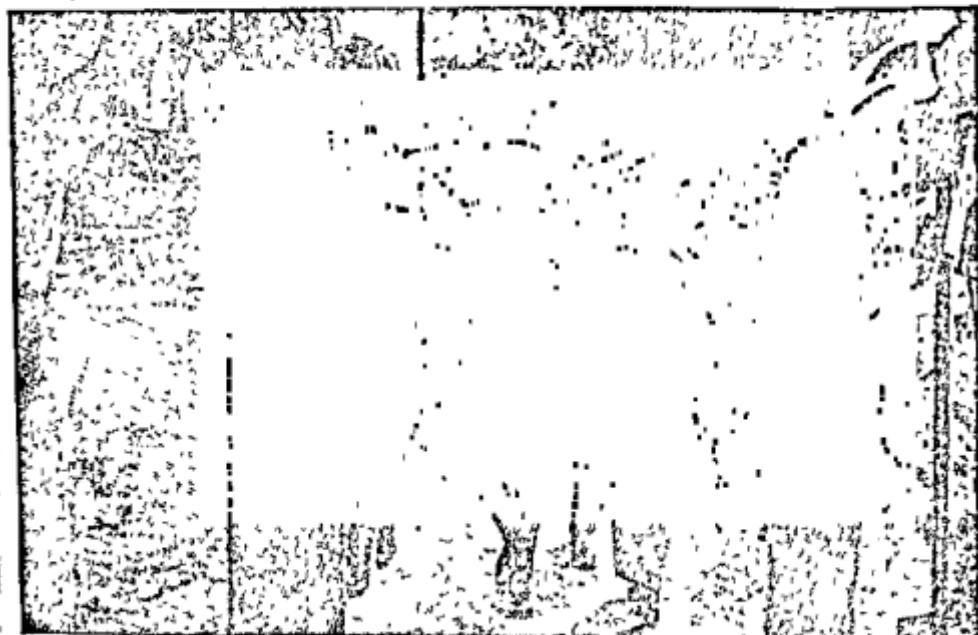
"इस समय तुम्हें भेंट करने के लिए भूख, प्यास, अपमान, अनिश्चित रण-प्रयाण, और दुखदाई मौत के अतिरिक्त मेरे पास कुछ नहीं है। चलो! इन्हीं के बल पर हिन्दुस्तान को आजाद करने के लिए आगे बढ़।"

— इम्फाल और आराकान के संघर्ष की तैयारी में आजाद हिंद फौज.

कदम कदम बढाए जा, खुशी के गीत गाए जा
। जिंदगी है कॉम की, तू कॉम पे लुटाए जा."
—आसाम के पहाडी प्रदेशमें आजाद हिंद फौज.

सैनिक योजनोंओं पर अपने फौजी अफसरों के साथ गंभीर मंत्रणा करते हुए श्री सुभाष बोस.

हुकूमत-ए-आज़ाद हिन्द

अपने काम में जरा लापरवाही रखने के कारण केप्टिन ल. की एक फटकार मुझे सहनी पड़ी। पर कप्टिन ल. बिलकुल ठीक थी और उन की फटकार मुझे मिलनी ही चाहिए थी। एक बात जरूर है कि मैंने पहिले कभी इस तरह का काम नहीं किया है। जब मैं अपने बीते दिनों की बात सोचती हूं तो मुझे खयाल होता है कि—कैसी तुनक मिजाज, स्वच्छंद तबियत वाली कॉलेज की शिक्षिता युवती में थी जो हर समय बनाव शृंगार में व्यस्त रहती और अपनी मेज पर अपने मन के राजा-अपने प्रियतम की तसवीर रख कर हर घड़ी एक टक उसे ही निहारती रहती। तब मैं बोली में बनावटी स्वर ला कर, अंग्रेजी उच्चारण में अंग्रेजों का अनुसरण कर के बनती, बिगड़ती, भाव भरी, मन मौजी मस्ती से जीती थी रहती। लेकिन अब न जाने क्या हो गया है? जीवन में एक इन्कलाब ही आ गया है। इतने कम समय में इतना अधिक परिवर्तन—मुझे इस की कल्पना तक नहीं थी। आज पहचानना तक कठिन है मुझे।

कल हमने 'चलो दिल्ली' नाम का एक छोटा सा प्रहसन देखा था। लेकिन के रंगरूटों द्वारा खेला गया था। 'भारतपुत्र' और 'जलियाँवाला बाग' के भी प्रदर्शन हुए थे। ये प्रचार के लिए बहुत ही शिक्षाप्रद नाटक है। नाटक में जनरल डायर के गोली चलाने के हुक्म को सुनकर खुद मुझे भी जोश आ गया था। अभिनय स्वाँग सपूर्ण था। मुझे ऐसा लग रहा है कि हमारे नाजवान लड़कों में एक साहित्यिक पुनरोत्थान शुरू हो गया है। जिन्हें कभी स्वप्न में भी लेखक या कवि होने का खयाल तक न था आज वे अत्यन्त ओजपूर्ण नाटक और कविताएं लिख रहे हैं। परिस्थितिएं अपने आप लेखक पैदा कर दिया करती है। मैं ताल ठोंक कर यह बात कह सकती हूँ—अन्य कोई कारण नहीं हो सकता।

आजाद हिन्द लीग पर जापानियों द्वारा यह पाबन्दी लगी हुई है कि फौज में चालीस हजार से अधिक सिपाही भर्ती नहीं किए जा सकते। लीग ने एक नया उपाय सोचा है। प्रत्येक भारतवासी से—मर्द और औरतों—दोनों से लीग ने, अपील की है कि कुछ समय के लिए वे आकर फौजी शिक्षण प्राप्त करें। मलाया, बर्मा और थाइलैंड में अनेक भारतवासी बिखरे पड़े हैं। उन सब हिन्दुस्तानियों को आधुनिक हथियार चलाने में प्रवीणता प्राप्त करनी ही चाहिए। हम में से हर एक व्यक्ति में, बालकों तक में युद्ध-प्रियता पनपनी ही चाहिए जिससे कि अंग्रेज हों या जापानी हमें अपने गुलाम बनाने के स्वप्न तक नहीं देख सकें।

चलो दिल्ली

८ जनवरी, १९४४

लो, हम रंगून में आ पहुँचे। हम मोर्च के निकट ही रह सकें इस लिए हमारे अग्रिम सदर मुकाम का दफ्तर बर्मा में बदल दिया गया है।

एक और भी कारण है। नेताजी और फौज के स्टाफ-अफसरों को हमेशा से इस बात का भय रहा है कि जापानी सेना के अधिकारी आजाद हिन्द फौज द्वारा बर्मा से हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने में शामिल होना नहीं चाहते। पर नेताजी चाहते थे कि फौज बिना किसी के सहार-सहयोग के भी खुद ही आक्रमण कर दे, अतः अग्रिम सदर मुकाम रंगून ले आए हैं। जापानियों का यह विचार है कि वे पहिले इम्फाल पर अधिकार कर लें और तब वे आजाद हिंद फौज को मदद करने के लिए बुलावें—कितनी बेहूदी और विचित्र बात है! यह केवल धोखा है! फौज को आक्रमण के समय सब से आगे रहना चाहिए। हिन्दुस्तान पर आक्रमण तो फौज ही को करना होगा। हमारी अपनी आजादी की लड़ाई और किसी को क्यों सौंप दें लड़ने के लिए? यह हमारी आजादी का जंग है। इसे हमें ही लड़ना चाहिए। दूसरों को नहीं।

हमारी अस्थायी सरकार की ओर से जनेरल लोगनादन शहीद द्वीप के चीफ कमिश्नर तैनात किए गए हैं।

२६ जनवरी, १९४४

आज हमने स्वतंत्रता दिवस मनाया। साठ हजार की अपार भीड़ के सामने नेताजी ने एक जोश भरा मर्मस्पर्शी व्याख्यान दिया। इस सभा में सम्मिलित होने के लिए लोग आठ आठ, दस दस मील से पैदल चल कर आए थे।

वहाँ की एक घटना मुझे यहां अवश्य ही लिख लेनी चाहिए।

सभा शुरु होते ही नेताजी को फूल माला अर्पित की गई। जब वे बोलने लगे तो उन्होंने माला को अपने हाथ पर लपेट लिया। जिस समय उन का हृदय-द्रावक व्याख्यान समाप्त हुआ उस समय लोगों की भावना पराकाष्ठा पर पहुँच चुकी थी। अचानक उन्हें एक विचार सूझा। उन्होंने पूछा, "क्या इस माला को कोई व्यक्ति खरीद सकता है? इस की कीमत फौज के कोष में जमा की जावेगी।"

पहिली बोली एक लाख की पड़ी। कुछ ही क्षणों में बोली एक दम ऊँची चढ़ गई। एक लाख, दो डेढ़ लाख, मेरे तीन लाख, मैं चार—हाँ चार लाख कहता हूँ। बस-बस मैं सवा चार लाख दूँगा। पर मैं पाँच लाख पर भी इसे नहीं छोड़ने वाला। पर इनकी कौन सुनता। बोली छः लाख पर चली गई और तुरत ही सात लाख पर जा कर रुकी। सात-हाँ सात लाख डॉलरों पर।

एक लाख की पहिली बोली बोलने वाला एक पंजाबी नौजवान था। जब बोली चार लाख से ऊपर चढ़ गई तो उसने कहा था 'पर मैं इसे पाँच पर भी नहीं छोड़ने वाला'। पर जब बोली सात पर जा रुकी तो उस के चेहरे पर कुछ झुंझलाहट सी दिखाई दी। किसी अन्तर्द्वन्द में वह फँसा सा दिखने लगा। जब कि माला की कीमत सात लाख मंजूर होने ही वाली थी कि वह झपाटे के साथ अपने स्थान से मंच पर जा खड़ा। उसने चिल्ला कर कहा, "मैं अपनी सारी सम्पत्ति देता हूँ—मेरे पास जो कुछ भी है—वह सब अर्पण करता हूँ—मेरा सर्वस्व इस माला के लिए।" आवेग में काँपते हुए उस युवक को श्री सुभाष ने अपनी भुजाओं में भर लिया। "बस! बस! हो चुका।" उन्होंने कहा। "यह माला तुम्हारी है। तुम्हारे जैसे देशभक्त नौजवानों के सिर पर ही हमारी फौज के विजय और अमर कीर्ति का सेहरा बाँधा जाएगा।"

पर युवक ने कुछ नहीं सुना—सुनने के लिए उस के पास मानो कान ही नहीं थे। वह माला को अपनी अंजली में लेकर हृदय और आँखों से लगाने लगा। उसने कहा, "अब मैं संसार से मुक्त हो गया। माया के बंधन से मुझे छुटकारा मिल गया। मैं फौज में भर्ती होना चाहता हूँ। मैं अपने मुल्क की आजादी के लिए अपने प्राणों की भेंट ले कर खड़ा हूँ नेताजी! आप इसे भी स्वीकार कीजिए।"

ऐशो-आराम में पले हुए पूँजी-पति घर के एक आलसी युवक में यह कैसा जादूभरा हृदय-परिवर्तन है? नेताजी के कारण ही उस में यह स्फूर्ति और तबदीली आ सका। अब तक उस माला के फूल सूख चुके होंगे। पंखुड़िए मुर्झा कर बिखर गई होंगी, सुगन्ध भी उड़ चली होगी। कौन जाने माला के फूलों की तरह शायद इस युवक के भाग्य भी कब बिखर कर मुर्झा जाए—पर उस से क्या? उसे तो उस समय अपार हर्ष था! बाँसों उछल रहा था उस का हृदय! जैसे ही वह माला ले कर चला—उसकी आँखों में एक चमक—एक क्रांति फूट निकली थी।

मुझे मेमियो मैनिक अस्पताल पर लगाया गया है। झांसी की रानी रेजिमेंट की घायलों की मरहम पट्टी और सेवा-सुश्रूषा का काम सौंपा गया है। इस विषय में शाम को हमने एक सभा की। कप्तान ल ने सभानेत्री का पद ग्रहण किया। मोर्चे पर जाने के लिए हम फौज में भर्ती हुई हैं—दुश्मनों से लड़ने के लिए, मोर्चे के पीछे बैठकर घायलों की सेवा मात्र करने के लिए नहीं। पर अन्त में हमने मेमियो जाकर फिलहाल सेवा सुश्रूषा का ही काम शुरू करने का निश्चय किया है। पहिले हम अनुशासन पूर्वक आज्ञा का पालन करेंगी और इस के बाद नम्रतापूर्वक अपना विरोध प्रदर्शन।

प का मन था कि मैं युद्ध में जाना तो चाहती नहीं हूँ और ऊपर से युद्ध में झूझने के बहाने मात्र कर रही हूँ। इस बात से मुझे चढ़ाने का क्या अर्थ? मैं तो एकदम चिढ़ गई। झगड़ा होते होते बचा। मैं अत्यन्त विक्षिप्त सी हूँ। पर मुझे संयत रहना सीखना चाहिए। अपने पर अंकुश रख कर आत्म-निग्रह करना चाहिए मुझे।

१० फरवरी, १९४५

हम मेमियो अस्पताल में काम सम्हाल चुकी हैं। हमारी फौज मैदाने-जंग में जा चुकी है। रण चण्डी का ताण्डव नृत्य शुरु हो गया है। घायलों का पहिला समूह आ पहुंचा है। फौज सफलतापूर्वक आगे बढ़ रही है। चार फरवरी के दिन पहिला आक्रमण शुरु हुआ है। अब तक तो फौज आशातीत प्रगति कर चुकी है ..

हमने नेताजी को एक प्रार्थना पत्र भेजा है :

"हमारा सैनिक शिक्षण सन्तोषजनक और सम्पूर्ण हो चुका है। फिर क्यों हमें मोर्चे पर जाने से रोका जाता है? क्या हमें सिर्फ घायलों की सेवा-चाकरी के योग्य ही माना गया है? समझ में नहीं आता हमारे साथ इस तरह की भेद-नीति का क्यों व्यवहार किया जा रहा है। आपने हमारी रेजिमेंट के लिए नाम तो पसन्द किया रणचण्डी झांसी की रानी का और जब आपने हमारे सैनिक-शिक्षण शिविर का उद्घाटन किया था तब खुद आपने ही हमें विश्वास दिलाया था कि हम भी झांसी की रानी की तरह ही मैदाने-जंग में जा कर शत्रुओं से युद्ध कर सकती हैं। मैदाने-जंग में हमारी उपस्थिति शत्रुओं की हिम्मत को पस्त कर देगी और ब्रिटिश भारतीय सेना के भारतीय हमें लड़ते देख कर हमारी फौज में आ मिलेंगे।

इसलिए हम आप से अनुरोध करती हैं कि आप हमें मैदाने-जंग में लड़ने के लिए जाने की आज्ञा दें।

"हमने इस प्रार्थना-पत्र पर अपने ही खून से हस्ताक्षर किए हैं। इस से हम यह सिद्ध कर रही हैं कि अपनी मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए अपने प्राणों को होम देने तक के लिए हम उद्यत हैं। आप हमें किसी भी कसौटी पर कस कर देखेंगे, हमारे नेताजी! हमें आप खरा सोना ही पाएंगे।"

प्रार्थना-पत्र पर दो महाराष्ट्री ब्राह्मण युवतियों ने, दो बंगाली ब्राह्मण तरुणियों ने और दो गुजराती वणिक कन्याओं ने—जो कि सब 'अमैनिक जातियों' में से थीं अपनी अंगुलियों को काटकर अपने रक्त से हस्ताक्षर किए थे।

हमें उत्तर की शीघ्र आशा है। हमें अपने नेताजी में पूरा विश्वास है। वे कभी भी हमें इस तरह से अपमानित नहीं होने देंगे।

७ मार्च, १९४४

अपार हर्ष! आज हम विदा ले रही हैं। झांसी की रानी रेजिमेंट की दो टुकड़ियों को मैदाने-जंग में लड़ने के लिए जाने की आज्ञा मिल गई। हमें यह चेतावनी दे दी गई है कि युद्ध मोर्चे की परिस्थिति अत्यन्त संगीन है।

मेरे देव! मेरे स्वामी! विदा दो मेरे प्राण! यदि मैं मैदाने जंग से न लौट सकूं तो खतम न होना—दुखी न करना अपने जी को। मेरी एक अंतिम इच्छा है। उसे पूरा कर दोगे न? इतना ही कहना—कि मेरी मृत्यु के बाद विवाह कर लेना दूसरी बार। पर अपनी साथिन का चुनाव झांसी की रानी रजिमेंट की सक्रिय सैनिकाओं में से ही करना। लिप स्टिक से ओठों को लाल कर के सिंगार-सजाव करने वाली कोई गुड़िया तुम्हें इस जिंदगी के बाद कभी भी सन्तोष नहीं दे सकेगी। बस विदा! अलविदा मेरे देव! जीवन और मृत्यु की यह अंतिम अलविदा!! और, तुम्हें भी अलविदा—यहां से दूर—दूर—पंजाब की धरती पर फूल की तरह खिले हुए मेरे पुत्र! तुम्हें भी अलविदा।

२६ मार्च, १९४४

हमारी अस्थायी आजाद हिन्द सरकार ने कर्नल चैटर्जी को फौज द्वारा जीती हुई हमारी विजित भूमि का गवर्नर नियुक्त कर दिया है।

कुछ रंज पैदा करने वाली खबरें आई हैं। जापानियों का व्यवहार सभ्यता की सीमा पार कर रहा है। इस समय फौज के बीस हजार सैनिक बर्मा में मौजूद हैं। पर इन में से दस हजार ही मोर्चे पर हैं। असल में युद्ध तो सिर्फ पाँच हजार ही कर रहे हैं। टामू, कोहिमा, पलेल और टिड्डिम आदि आधे दर्जन मोर्चों पर वे बाँट दिए गए हैं। क्यों नहीं फौज को एक ही मोर्चे पर अपना बल अजमाने दिया जा रहा है कि जिस से हम आसाम या बंगाल में आसानी से घुस सकें। जब हमारे सैनिक युद्ध करने के लिए इतने लालायित हैं तब क्यों उन्हें व्यर्थ पैर पकाने के लिए इधर से उधर दौड़ाया जा रहा है।

मोर्चे के जीवन के सबंध में एक भी लाइन मैंने अब तक नहीं लिखी है। मेरे हाथ और सिर के घाव के कारण मैं ऐसा लिख नहीं सकी थी। वे दिन तो आंधी और तूफान के दिन थे। जरा याद कर लू ।

जब हम मोर्चे पर पहुँचे उस समय वहाँ पर रहने की स्थिति अत्यन्त कठिन और गम्भीर थी। हमारे पास खाने की कमी, कपड़ों की कमी और गोलाबारूद की कमी थी। पर हमें इन बातों का तो जरा भी भय नहीं था।

मोर्चा जंगल में था। घाटियें और पहाड़ियें चारों ओर इधर उधर बिखरी पड़ी थी। जिस गाँव में हमारा सदर मुकाम था वहाँ के निवासियों ने कभी भी महिला सैनिकाओं के दर्शन तक नहीं किए थे। सोच तक नहीं सके थे वे लोग कि महिलाएं महलों से निकल कर वीरांगनाए तक बन सकती हैं। हम उन के लिए एक अचरज भरी चीज थीं और नुमाइश की तरह हमें देखने वालों की भीड़ हमारे इर्द गिर्द जमा हो जाया करती थी। जैसे ही हमारे मोर्चे पर पहुँचने की खबर इधर उधर फैली कि दूर दूर से औरतें और मर्द हमें देखने के लिए लालायित हो कर आने लगे। हमारी युद्ध-प्रियता की खबर शत्रुओं तक भी जा पहुँची। इस बात की खबर हमें शत्रुओं के पकड़े हुए युद्ध-बंदियों द्वारा बाद में लगी थी।

कई दिनों तक इस गाँव में कवायद करने के बाद वहीं एक दिन जाकर हमारे भाग जगे। हमें युद्ध में जाने की आज्ञा मिली। हमें काफी-लम्बी मंजिल पार करनी थी। इसवास्ते हम रात के तीन बजे प्रयाण पर चल पड़ीं। जरा भी प्रकाश नहीं— बिल्कुल अंधेरा-घुप्प था, हमें जरा भी अनावश्यक आवाज करने की सख्त मनाई थी, न नारा लगाने का भी हुक्म था, बस फुर्ती से कदम बढ़ाए जाना—यही एक मात्र काम था।

न खत्म होने वाला-यह सफर, मीलों पर मील चलकर हम एक पहाड़ी पर पहुँचे। हमें मोर्चा बंधने का हुक्म मिला। एक मील के फासले पर सामने ही अंग्रेजों की सेना मोर्चा लगाए छिपी हुई थी। उन्हें हमारे इतने नजदीक होने का जरा भी पता नहीं था। वे सीधे हमारे मोर्चे की घाटी में बेखबर से होकर बढ़ आए। हमें उत्सुकता हो रही थी कि कब हमें गोलियें दागने का हुक्म मिलेगा। ऐसा मालूम हो रहा था कि मौका हाथ से निकला जा रहा है। आखिर गोली चलाने की आज्ञा मिली—फायर. . .

मेरा पक्का विश्वास है कि उस समय हम सब यह बिलकुल ही भूल गई थीं कि हम औरतें हैं। मर्दों की कहलाए। हम एकदम स्वतंत्र मशीनें थीं। हमने गोलियें दागीं, बन्दूकें भरी, फिर गोलियें दागीं और फिर दना दन-दनन दन—चलाती ही गई, न रुकी न विश्राम लिया। फिर हुक्म हुआ 'संगीनें तान लो', और फिर—अंतिम हुक्म मिला 'हमला कर दो।'

मैं उछल कर आगे बढ़ी। पहाड़ी के नीचे की ओर दौड़ कर उतरने लगी। मेरे आगे की सैनिका दौड़ती दौड़ती गिर पड़ी। मैं रुक नहीं सकी। आंधी का वेग कभी रुकता है? मेरे पैरों के नीचे उस का फैला हुआ हाथ कुचल गया!! 'जय हिन्द' के पागल बना देने वाले नारों के साथ मैं बराबर पहाड़ी से उतरती हुई आगे बढ़ रही थी। उस समय तक और गहरे जंगल में पास की घाटियों और पहाड़ियों में हमारे सिपाही छिपे हुए थे। जैसे ही हम आगे बढ़ीं कि उन के नारों ने हमारा स्वागत किया। 'इन्कलाब जिन्दाबाद' और 'आजाद हिन्द जिन्दाबाद' के नारों से दिशाएं गूंज उठीं। और तब अचानक ही मालूम हुआ कि मुझे कोई चोट लग गई। मैं अवश्य ही बेहोश हो गई होऊंगी। जब मुझे होश आया तो मैं डोली द्वारा-पिछली पंक्ति में भेजी जा रही थी। मैंने दाँतों को जोर से दबा लिया-कहीं दर्द से रो न पड़ूं। दर्द के कारण मेरा सर चक्कर खा रहा था। पर मेरा आत्माभिमान तो उस से भी बड़ा था। उस पर यातना और पीड़ाएं विजय नहीं पा सकीं।

मैंने आंखें बन्द कर लीं। मुझे ऐसा खयाल होने लगा कि डोली उठाने वाले सैनिक गँवार थे। वे मुझे बुरी तरह से हिला रहे थे। एक युग के समान लम्बे वक्त के बाद उन्होंने डोली को जमीन पर रक्खा। वे मुझे मोर्चे के अस्पताल में ले आए थे। अब मेरे घाव भर गए हैं। मैं आराम से चल फिर सकती हूँ। पीछे से मुझे पता लगा कि संगीनों के आक्रमण की जरूरत ही नहीं थी। दुश्मनों ने

आत्म-समर्पण कर दिया था। हम में घायलों की संख्या अधिक जरूर थी पर हमने एक मार्के का मोर्चा फतह कर लिया था। हम हिन्दुस्तान और बर्मा के सीमात पर थीं और उस दिन की विजय के कारण हम अपनी जननी जन्मभूमि की गोद में पहुंच गई थीं।.....

मेमियो अस्पताल में मुझे रगून बदल दिया गया है। मुझे रगून में मदर मुराम पर जाने का हुक्म मिला है।

पिछली बार जो डायरी मैंने लिखी थी उसमें अबतक के दिनों में काफी परिवर्त्तन हो चुके हैं।

१८ मार्च को फौज ने सीमान्त पार कर के भारतभूमि में प्रवेश किया। मुझे ऐसा बतलाया गया है कि उस दिन सैनिकों ने मातृभूमि को साष्टांग दण्डवत की, जन्मभूमि के रजकणों का चुम्बन किया। बड़ा ही हृदय-द्रावक दृश्य रहा होगा! अपनी मातृभूमि-हिन्दुस्तान की पवित्र धूलि को हाथ में लेकर उन्होंने प्रतिज्ञा की कि वे इस आजादी के पवित्र जग में एक कदम भी पीछे नहीं हटेंगे। जान दे देंगे पर युद्ध से मुंह नहीं मोड़ेंगे और जब तक वे मुल्क की आजादी प्राप्त नहीं कर लेंगे तब तक एक क्षण भी विश्राम और चैन से नहीं बैठेंगे!

दूसरी लड़ाइयाँ भी लड़ी गईं। इम्फाल को चारों ओर से घेर लिया गया! मोराई, कोहिमा आदि अनेक गांव फौज और जापानी टुकड़ियों द्वारा हस्तगत किए गए। वर्षा और हवाई-शक्ति के पीछेबल का अभाव हमारे लिए दो खास बाधाएं थीं। जापानियों की हवाई सेना कहाँ गायब हो गई? फौज के पास तो एक भी हवाई जहाज नहीं था। हमें मणिपुर से पीछे हटना पड़ा। किस लिए? हवाई-शक्ति, शस्त्र, गोलाबारूद, रसद और यातायात के प्रबन्ध की कमी का कौन जिम्मेवार था? मैंने सुना है कि इस भीषण परिस्थिति में जापानी हमारा साथ छोड़ रहे हैं। पर अंग्रेजों से पहिले ही मोर्चे में हमारे शूरवीर देश-भक्त सैनिकों ने यह बता दिया कि यदि उन्हें सुन्दर सुयोग मिल जाए तो वे दावे के साथ अंग्रेजों को बुरी तरह पछाड़ सकते हैं—उन्हें हिन्दुस्तान से मार भगा सकते हैं। जो बहादुरी, पराक्रम और युद्ध-प्रियता हमारे नागरिक रगरूटों ने प्रदर्शित की है उस से अंग्रेजों द्वारा 'मनगढ़न्त सैनिक और असैनिक जातियों' वाले सिद्धान्त की पूरी तरह से पोल खुल जाती है। हमारे ये नागरिक रगरूट अधिकतर क्लार्क, बनिए और मजदूर मात्र थे।

कर्तव्य के प्रति निष्ठा और वीरत्व के तो सैकड़ो उदाहरण दिए जा सकते है। कपड़ों की कमी, शस्त्रों की कमी, राशन की कमी—हवाई शक्ति से शून्य-इन सब कमियों के बावजूद भी हमारी आजाद हिन्द फौज ने अंग्रेजों की सब तरह के साधनों से सज्जित सेना के भी दांत खट्टे कर दिए, उन्हें करारी शिकस्त दी और मैदान से मार भगाया। जब लड़ते लड़ते विपक्षी आमने सामने आजाते तब तो हमारे सिपाहियों की हिम्मत और मर्दानगी देखने ही लायक होती। वे शेरों सी बहादुरी से झूमते थे। आखिर जो शेर का चिन्ह हमें दिया गया था वह निरर्थक थोड़े ही होने देते। अराकान, इम्फाल और पलेल की घाटियें हमारे नारों से सदा गूंजती रहेंगी। इस भूमि पर हमने रक्त छिड़का है। यहां की हवा का जर्राजर्रा हमारे शहीदों की अंतिम श्वासों से पवित्र बन चुका है।

२६ मई, १९४४

इम्फाल के मोर्चे की मैंने एक दिलचस्प घटना सुनी है।

एक स्थान पर हमारी फौज के मुकाबिले में अंग्रेजों की ओर से हिन्दुस्तानी सिपाही लड़ने को आए।

हमारी फौज के सिपाहियों ने लकड़ी के तख्ते पर एक सन्देश लिखकर उसे इस तरह ऊपर उठाया कि जिसे विपक्षी सिपाही आसानी से पढ़ सके। सन्देश यह था कि "हमारे साथ मिलकर मुल्क की आजादी के लिए युद्ध करो।"

ब्रिटिश सेना के हिन्दुस्तानी सिपाहियों ने एक तख्ते पर पीछा लिख कर जवाब दिया, "तुम जापानियों के गुलाम हो। तुम्हारे पास भोजन की कमी है। हम में आ मिलो। पेट भर खाने को देंगे।"

हमारी फौज ने तुरत ही उत्तर दिया, "हम जापान के लेश मात्र भी गुलाम नहीं है। हम श्री सुभाष के नेतृत्व में युद्ध कर रहे है। हमें गुलामी के आटे और घी से आजादी का घास अधिक प्यारा है।"

इस के ठीक बाद हमारे गैनिकों ने भड़ा वदन के गीत से आकाश गुंजा दिया।

सर पर तिरंगा झंडा, जलवा दिखा रहा है
कौमी तिरंगा झंडा ऊंचा रहे जहाँ में,
हो तेरी सर बुलन्दी, ज्यों चाँद आसमां में।

तू मान है हमारा, तू शान है हमारी,
तू जीत का निशां हो, तू ही हया हमारा।

हर एक बसर की लब पे, जारी है ये दुआयें,
कौमी तिरंगा झंडा हम सौक से उड़ायें।

आकाश और जमी पर, हो तेरा बोलबाला,
झुक जाए तेरे आगे, हर ताज तख्त वाला।

हर कौम की नजर में, तू अमन का निशां हो,
हो ऐसे मुय्यसर साया तेरा जहाँ हो।

मुस्ताक बे-नवाबी खुश हो के गा रहा है!
सर पे तिरंगा झंडा, जलवा दिखा रहा है.
कौमी तिरंगा झंडा ऊँचा रहे जहाँ में।

सिक्खी सेना ने इस गीत को सुनकर जोर से तालियों की गड़गड़ाहट द्वारा इस का स्वागत किया। मुझे बताया गया है कि अंग्रेजों ने उस पलटन को तुरत ही उस स्थान से बदल दिया और वहाँ एक गोरी पलटन भेज दी गई।

२ जून, १९४४

मैं फिर से रंगून आ गई हूँ। प... मुझे मेमियो अस्पताल में लेने के लिए आए। रेल की सफर में उन्होंने मुझे अनेक दिलचस्प चुटकले सुनाए।

पहिला चुटकला था जापानी राजदूत का। जापान सरकार ने अस्थायी आजाद हिन्द सरकार के यहाँ एक राजदूत नियुक्त किया था। वह रंगून पहुँचा और उसने नेताजी से मुलाकात करनी चाही। नेताजी ने जवाब भेजा 'हमारे विदेश मंत्री के पास अपने कागजात और अधिकार पत्र भेज दो। राजदूत ने उत्तर भेजा, अपने कागजात तो टोकियो भूल आया हूँ।" पर नेताजी दृढ़ रहे। डिगे नहीं जरा भी। उन्होंने साफ जवाब भेज दिया कि, "बिना अधिकार-पत्र देखे मुलाकात नहीं की जा सकती।"

और जब तक टोकियो से उसके जरूरी कागजात नहीं आए तब तक उस बिचारे जापानी राजदूत को तपस्या ही करनी पड़ी। मुलाकात नहीं हुई और बिलकुल नहीं हो सकी।

हमारी अस्थायी सरकार के अधिकारों की पवित्रता पर नेताजी जरा भी आँच नहीं आने देते हैं।

प...का कहना है कि जब कभी भी कोई जापानी अफसर नेताजी के सामने आता है तो वह अपना सर नीचे तक झुका कर फिर बात करता है। इतना ही नहीं अपितु जिस तरह से हर जापानी अपने सम्राट की तसवीर के आगे श्रद्धा से झुकता है ठीक उसी तरह से हर जापानी को नेताजी के चित्र के आगे भी उसी श्रद्धा से मस्तक झुकाना पड़ता है।

प...ने डा० ज.. की बात बताई। डा० ज. ने एक अंग्रेज महिला से विवाह किया था। जापानियों ने अंग्रेजों के जासूस होने के शक में उसे जेल में बन्द कर दिया। उसे छुड़ाने के सारे प्रयत्न निष्फल गए। आखिरकार नेताजी के पास प्रार्थना-पत्र भेजा गया। उन्होंने उस प्रार्थना-पत्र पर लिखा कि यदि डाक्टर जासूस है तो जापान सरकार को उसे गोली से उड़ा देने का पूरा पूरा अधिकार है। पर यदि इस शक के पीछे कोई प्रमाण नहीं है तो मैं मांग करता हूं कि हिन्दुस्तानी होने के नाते डा० ज.. को तुरंत रिहा कर दिया जाए।" और आश्चर्य न करना आप। डा० ज.. तुरंत ही रिहा कर दिए गए।

४ जून, १९४४

मैं अब पीछो रगून में आ गई हूँ। जब इम्फाल पर घेरा डाला गया था उस समय हमारी फौज के सैनिकों के बहादुरी की एक घटना श्री क...ने मुझे सुनाई।

पलेल के हवाई अड्डे के आसपास हमारी फौज और जापानी टुकड़ियें पहुँच गई थीं। रात को अड्डे पर आक्रमण करने का निश्चय किया गया।

हमारे सैनिकों के पास रसद की कमी थी। रसद प्रायः सभी समाप्त हो गई थी। वे जंगल के कद और मूल पर जीवन बसर कर रहे थे और जरा से चावलों से पेट भर लिया करते थे। उस समय हमारे सेनापति ने जापानी सेनापति से जाकर यह विनय की कि एक वक्त के भोजन के लिए उन्हें जापानियों के राशन में से कुछ चावल दे दिए जाएं।

जापानी सेनपति ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया—"हमारे खुद के पास भोजन सामग्री समाप्त हो चली है। लेकिन आज रात को जहाँ हम चल रहे हैं वहाँ काफी भोजन सामग्री पड़ी है। वहाँ आपको धान मिल सकेगा।"

बैंक के प्रति जनता की रुचि बहुत ही सराहनीय है। बैंक में लोगों का विश्वास दिन प्रति-दिन बढ़ रहा है। अब तक इसकी तीन शाखाएं खुल चुकी हैं और भिन्न भिन्न स्थानों पर पाँच और खोलने की जबरदस्त माँग है। हमारी आजाद सरकार के रोकड़ लेनदेन का सारा हिसाब बैंक के द्वारा ही होता है।

प...ने एक और बात बताई। मई महीने की घटना है। नेताजी हवाई जहाज द्वारा स्योनान जाने के लिए एरोड्रोम पर आए हुए थे। चेहरा उदास था। हृदय के भीतर कुछ कशमकश चल रही थी। हमेशा की मुस्कान आज गायब थी। स्थानीय प्रमुख कार्यकर्ता नेताजी को विदा करने के लिए साथ में थे। उनमें से कोई भी यह नहीं जान सका कि नेताजी के दिल और दिमाग में कौन सी परेशानियाँ उथल-पुथल मचा रही हैं? एक धनपति चेटियर महाशय आगे बढ़े और साहस करके पूछ ही बैठे कि, "आज कुछ उदास से लग रहे हैं नेताजी? क्या बात है? क्या हम आपकी कुछ सेवा कर सकते हैं?"

नेताजी ने कहा कि धन की चिंता में हूं। नहीं समझता कि मेरी यह चिंता रंगून वाले आप लोग मिटा सकोगे! फौज की आवश्यकता के लिए इसी वक्त मुझे बीस लाख रुपए चाहिए। फौज के लिए इस वक्त जीवन और मरण का प्रश्न है। इस समय अधिक से अधिक जितनी भी हो सके-उतनी सहायता फौज को पहुँचानी ही पड़ेगी।

इधर बातचीत चल रही थी, इधर हवाई जहाज उड़ने के लिए तैयार हो गया। नेताजी जाकर अंदर बैठ गए। लेकिन किन्हीं अकस्मात् कारणों से जहाज को रवाना होने में दस मिनट का विलंब हो गया। श्री चेटीयार ने इसी बीच पास में खड़े हुए अपने दूसरे प्रमुख साथियों को नेताजी की चिंता और उदासी का कारण समझाया। देखते ही देखते सब ने मिलकर वहीं कुछ तय किया और हवाई जहाज के उड़ने के पहिले पहिले नेताजी के हाथ में बीस लाख रुपए भेंट करनेवाले लोगों की नामावली सौंप दी। इतनी बड़ी रकम वहाँ उपस्थित लोगों ने केवल अपने ही अपने में से इकट्ठी करली थी।

मैंने एक सुझाव आगे रक्खा है। नेताजी को हमारा नेतृत्व सम्हाले इसी ४ जुलाई को एक वर्ष पूरा हो जाएगा।

उस दिन उत्सव मनाए जाएं और उसकी खुशी में नेताजी को जवाहरातों से तोला जाए। इस के लिए महिलाओं से उन के गहने, चूड़ियें, अगूठियें और हार

मादि भेंट करने की अपील की जाए। मैं अपने महिला विभाग को लिख रही हूं कि वह इस काम को हाथ में ले।

बहुत अच्छा हो यदि डाक्टर मुझे अब कम काज करने और बाहर घूमने फिरने की इजाजत दे दें। बिस्तर में पड़े पड़े आराम करने से तो मैं अब तंग आ गई हूं।

क्या जापानी फौजें कोहिमा से पीछे हट गई है? दिल्ली रेडियो तो इसी तरह के दावे कर रहा था। मुझे प...से इसका पता लगाना चाहिए।

बर्मा में जहाँ कहीं भी हिन्दुस्तानी बस्तियाँ हैं उन सब की रक्षा करने का जिम्मा फौज लेती जा रही है। भले ही कैसी भी विकट बाधाएं सामने आए लेकिन भारतीय जनगण और उनकी जायदाद एवं सम्पत्ति की रक्षा तो हमें करनी ही चाहिए।

१२ जून, १९४४

आज दोपहर को श्रीमती ह...अपनी दो पुत्रियों और एक पुत्र के साथ हमारे यहाँ आई। मैं कहीं बाहर गई हुई थी। और ऐसा लगता है कि इसी दरमियान कई महत्व की घटनाएं घट गई हैं। नेताजी के आदेशानुसार अखिल पूर्वी एशिया में एक बाल-सेना तैयार हो चुकी है।

मैंने कई बालकों से इस सबंध में बातचीत की और मुझे मालूम हुआ कि बाल-सेना ने तो उनमें एक आश्चर्यजनक क्रांति पैदा कर दी है।

श्रीमती ह...ने अपने पड़ोसी डाक्टर प...की कहानी हमें सुनाई। जापानी सेना के अधिकारियों ने डाक्टर प...को सन्देह ही सन्देह में गिरफ्तार कर के जेल में ठूंस दिया था। श्रीमती प...घबरा गई थी। उसे दिखाई नहीं देता था कि अब वह क्या करे और सहायता के लिए कहाँ और किस के पास जाए! कई दरवाजे खट-खटाने के बाद श्री ह...उसे नेताजी के पास ले गए। नेताजी ने विस्तार के साथ उसकी दुख—कथा सुनी और फिर डाक्टर प...के तात्कालिक रिहाई की मांग करने वाले उसके प्रार्थना-पत्र के साथ अपनी तरफ से भी एक पत्र लिखकर उसे जापानी अधिकारियों के पास ले जाने के लिए दे दिया।

श्रीमती प...नेताजी का पत्र ले कर जापानी पुलिस इन्सपेक्टर के पास गई। वह गुर्राया कि 'हिज एक्सीलैंसी मिस्टर बोस को हमारे काम में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है।'

श्रीमती प. ने इन्सपेक्टर से प्रार्थना की कि 'आप कृपया अपने ऊपर के अधिकारियों से इस पत्र के स्वम में थोड़ी बातचीत तो कर के देखिए!' परिणाम स्वरूप श्रीमती प.. को इन्सपेक्टर ने अपने ऊँचे अधिकारियों के पास भेज दिया। बड़े अधिकारी ने सब कुछ सुनकर श्रीमती प. से कहा कि 'मेरे इन्सपेक्टर ने जो कुछ आप को कह दिया है उसके लिए आप से मैं क्षमा की याचना करता हूँ। आपके प्रार्थना पत्र पर जब हिज-एक्सीलेंसी श्री सुभाष बोस ने हस्ताक्षर कर दिए हैं तो हमारे दिल में उनके लिए इतना ही सम्मान है जितना कि स्वयं हमारे खुद सम्राट के आदेश के प्रति होता है। मैं डाक्टर प... की तात्कालिक रिहाई के लिए इसी वक्त हुक्म निकालता हूँ।'

यह कोई एक नई कहानी नहीं है। स्यामान में जब नेताजी पहली बार आए थे तब भी कई भारतीयों को इसी तरह से मुक्त किया गया था। अंग्रेजों के जासूस होने के सन्देह में करीब चार सौ व्यक्ति जेलों में पड़े रहे थे। जापानी इन के प्रति बहुत ही बुरा व्यवहार कर रहे थे। उन पर तरह तरह के अत्याचार किए गए थे। उन्हें भूखों मारा गया था, उन्हें पीटा तक गया था। श्री सुभाष बाबू ने सब से पहले यही माग की कि सभी हिन्दुस्तानियों के खिलाफ जो भी आरोप लगाए गए हैं उनकी विस्तृत तालिका मुझे दिखाई जाए। एक एक कर सारे कागजात उन्होंने देखे, उन पर विचार किया और कई एक हिन्दुस्तानियों से वे स्वयं जेल में जाकर मिले और दूसरे बंदियों से मिलने के लिए उन्होंने हमारे कई स्थानीय नेताओं को भेजा। अंत में उन सभी बंदियों को रिहा कर दिया गया जिन्होंने यह आश्वासन दिया कि वे आजाद हिंद लीग को अपना पूरा पूरा सहयोग देंगे।

उन में से कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने किसी तरह का आश्वासन देने से इंकार कर दिया था। फिर भी नेताजी ने जापानी अधिकारियों को सूचित कर दिया कि उनके प्रति भी ममतापूर्ण और निर्भयता पूर्ण व्यवहार नहीं किया जाए।

२० जून, १९४४

समाचार मिले हैं कि अमेरिकन 'सुपर-फोर्ट्रेसेज़' हवाई जहाजों ने जापान की धरती पर बम बरसाए हैं लेकिन मालूम हुआ है कि कोई खास नुकसान नहीं हुआ।

चार जुलाई के दिन नेताजी को जवाहरातों से तोलने के मेरे सुझाव का चारों ओर स्वागत किया गया है। महिलाएं अपने कीमती जवाहरात भेज रही हैं—एक

"मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि अंधेरे और उजेले में धूप और छाया में, सुख और दुख में और इसी तरह विजय और पराजय में—हर वक्त मैं तुम्हारे साथ रहूँगा !"

ईश्वर को साक्षी रखकर मैं यह शपथ लेती हूँ कि अपने मुल्क हिन्दुस्तान और अपने ४० करोड़ देश वासियों को मैं आजाद करूंगी।"

डाक्टर लक्ष्मी स्वामिनाथन्.

मद्रासी बहन ने अपने सभी गहने भेज दिए है। मैं भी अपने हार और कर्णफूल भेज रही हूं। अपनी चूड़ियों में से मैं अपने लिए केवल दो ही जोड़ियें रख कर शेष सब भेज दूंगी।

श्री म... मुझे बता रहे थे कि हमारी भारतीय स्वाधीनता-संघ की संग्रहित रकम एक करोड़ और साढ़े तेतीस लाख रुपए हो गए हैं। केवल मई के महीने में ही यहाँ करीब चौदह लाख रुपए इकट्ठे कर लिए गए थे। यह ऊपर के आंकड़े तो केवल मलाया प्रदेश के ही हैं।

इस समय अकेले मलाया में ही संघ की सत्तर शाखाएं और उपशाखाएं स्थापित हो चुकी हैं।

आज मैं सदर मुकाम (हेड क्वार्टर्स) देखने गई थी। विश्वास कीजिए वहां अस्थाई हुकूमत के कई विभाग बहुत ही धूमधाम से काम कर रहे थे। मैंने एक एक को गिन के देखा! इन में मुख्य हैं—सामग्री (Supply) अर्थ, हिसाब, भर्ती और शिक्षण, समाचार-पत्र, प्रचार, प्रकाशन, महिलाएं, शिक्षा, जन-स्वास्थ्य, सामाजिक-कल्याण, और पुनर्निर्माण आदि। स्योनान में ठीक ऐसा ही एक और बड़ा विभाग है—मलाया, सुमात्रा, जावा और बोर्नियो के लिए। उस में भी इतने ही अलग विभाग काम करते हैं।

मुझे मालूम हुआ है कि बर्मा में संघ की शाखाएं और उप-शाखाएं मलाया से भी ज्यादा बढ़ गई हैं। वहां उनकी संख्या १०० तक पहुँच चुकी है। थाइलैंड में चौबीस शाखाएं हैं। इस तरह जावा, सुमात्रा और बोर्नियो में भी इनके अतिरिक्त और अलग है। फौज के लिए शिक्षण केन्द्रों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। मलाया में ऐसे चार केन्द्र हैं जहां सात हजार रंगरूटों को एक साथ शिक्षण दिया जा सकता है। इसी तरह बर्मा में भी चार केन्द्र हैं जहां तीन हजार रंगरूट तालीम हासिल कर सकें। एक हजार रंगरूटों के लिए एक केन्द्र थाइलैंड में भी है।

यह सभी शिक्षण केंद्र साधारण सैनिकों के लिए ही हैं। फौज के अफसरों को शिक्षा देने के लिए अलग व्यवस्था है। एक स्योनान में और दूसरा रंगून में। इन दोनों केन्द्रों पर अबतक २००० के करीब अफसर शिक्षण प्राप्त कर चुके हैं।

असैनिक-नागरिक कर्मचारियों के शिक्षण के लिए स्योनान और रंगून में दो केन्द्र पुनर्निर्माण विभाग की अध्यक्षता में काम कर रहे हैं। इन केन्द्रों में व

लोग शिक्षण ले रहे हैं जो तैयार होकर आजाद प्रदेशों में अस्थाई सरकार के प्रतिनिधियों की तरह काम करेंगे।

मलाया-वास्तव में हमारे आन्दोलन के आधार-शिला की तरह सिद्ध हुआ है। हमने नागरिक-वर्ग में से आजाद हिंद फौज के लिए कम से कम बीस हजार रंगरूट दिए हैं। धन-सग्रह के सबंध में तो मलाया के आकड़े बर्मा, थाइलैंड और पूर्वी एशिया के किसी भी दूसरे मुल्क से बहुत आगे बढ़े हुए हैं।

मलाया में हमने खेती की एक विराट योजना तैयार की है। जिस जमीन में पहले कभी हल तक नहीं चला था, ऐसे जंगलों में से ९ हजार एकड़ के विस्तार की जमीन हमने साफ की है और उसे अलग अलग भारतीयों के निवास के लिए वितरित कर दिया है। यह मिट्टी सोना उगलेगी। हमारी मलाया शाखा ने इस जमीन में बसने वाले भारतीयों को बीज, औजार, मकान बनाने की सामग्री और कुछ अग्रिम आर्थिक सहायता की सुविधा दी है कि जिससे वे अपना एक नया जीवन प्रारंभ कर सकें। हमारी इन प्रवृत्तियों से हमारे सेवा-केन्द्रों पर अब बहुत कम बोझ रहेगा।

आज मैं शिक्षा विभाग की मुलाकात लेने चली गई। श्री अ. मे वहाँ मेरी भेंट होगई। उन्होंने बताया कि अकेले बर्मा में अपनी ६० स्कूलें चल रही हैं। प्रत्येक प्रदेश में अब राष्ट्रीय स्कूलों का काम सफलता से चला रहा है। मलाया में ऐसी राष्ट्रीय स्कूलें करीब ५० के हैं। इन स्कूलों में महत्व की बात बच्चों और प्रौढ़ों के लिए हिन्दुस्तानी भाषा के शिक्षण की है। उन्होंने कहा-कि शिक्षा विभाग का यह अनुमान है कि बाजारू हिन्दुस्तानी ही नहीं लेकिन उस्तादों के चरणों में बैठ कर सीखी जानेवाली शिष्ट हिन्दुस्तानी अब प्रत्येक भारतीय के घर में पहुँच चुकी है। हम यह नहीं भूल जाएं कि यहाँ की भारतीय बस्तियों का अधिकांश भाग तामील बोलने वाले मजदूरों का है। उन में हिन्दुस्तानी के प्रचार की सफलता हमारे उत्साह को बढ़ाती है। आखिर यह रचनात्मक कार्यक्रम ही है न?

हमारी फौज के अफसर अपने सैनिक शिक्षण-शिविरों में बर्मावासियों को भी फौजी तालीम देकर उन्हें मदद पहुँचा रहे हैं। हमारे पास जो अस्त्र शस्त्र हैं उन से भी उन्हें सहायता दे रहे हैं। भोजन सामग्री की सहायता के बारे में तो हमें कुछ कहना ही नहीं चाहिए। जो भी रूखी सूखी हमें मिल जाती है उसे बाँट कर

खाने को ही हम मानवता का सौभाग्य मानते हैं। हिन्दुस्तानियों की तुलना में जापानी उन की बहुत ही कम परवाह करते हैं।

२१ जून, १९४८

आज कर्नल ए...से मिली। हमने जिन उपायों को काम में लाकर फौज से साम्प्रदायिकता का गला घोंट दिया है उस की वे जी खोलकर प्रशंसा कर रहे थे। पंजाबियों और मद्रासियों के लिए जो अलग अलग रसोईघर चल रहे थे वे एकदम बन्द कर दिए गए हैं। अब तो सारे रंगरूट एक ही पंगत में बैठ कर एक ही साथ भोजन करते हैं। हर एक जवान को एक थाली दी जाती है। पहिले निरामिष भोजन परोसा जाता है। निरामिष भोजन कर लेने के बाद जिन्हें मांस की जरूरत होती है उन्हें फिर मांस परोसा दिया जाता है। सभी मिलकर एक ही साथ, एक ही जगह बैठ कर खाते पीते हैं। इस के अलावा फौज का वातावरण बहुत ही अच्छा है। हर किसी को ऐसी फौज में आकर रहने की लालसा होना स्वाभाविक है। फौज का चरित्र बहुत ही ऊँचा है। तपस्वियों की तरह हमारे सैनिक अपना जीवन यापन करते हैं। दूसरी फौजों में जिस प्रकार की भोग-विलासिता और इन्द्रीय-परायणता मिलती है उन का यहाँ नामोनिशान तक नहीं मिलने का। चरित्र-हीनता और वासना की बात आप किसी के मुँह पर तक नहीं पायेंगे। हमारी फौज में ऐसे ही अधिकांश सिपाही हैं जिन्होंने अपने जीवन को उच्च आदर्शों पर ढाल रखा है। इसी से तो उन की जिन्दगी में प्रसन्नता और अपूर्व उत्साह है। धन और औरतें ही जिनके जीवन का ध्येय हो ऐसे भाड़े के सैनिकों से हमारी फौज के सैनिक बिलकुल ही विपरीत हैं। यह फर्क तो होना ही चाहिए। फौज में शराबी तो ढूँढने पर भी नहीं मिलने का। यदि किसी व्यक्ति की शराब के प्रति थोड़ी भी रुचि और प्रवृत्ति दिखाई देती है तो उसे दूध की मक्खी की तरह फौरन ही फौज से निकाल कर अलग कर दिया जाता है। फौज में सच्ची प्रजातंत्रवाद की भावना है। संगठन और शक्ति के लिए अनुशासन के महत्व को स्वीकार करके वे भाइयों की तरह अपने अफसरों का हुक्म मानते हैं। अफसरों की अहंमन्यता और अभिमान को प्रसन्न करने के लिए यहाँ कोई काम नहीं होता।

मैं सबेरे सदर मुकाम गई। स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण के महकमे में भी जरा ठहरी। वहाँ डा. कुमारी ज...से मिली उन्होंने मुझे जोर देकर समझाया

कि आज़ाद हिन्द लीग ने जो सामाजिक कल्याण का काम हाथ में लिया है वह राजनैतिक काम की तरह ही महत्वपूर्ण है। उस ने कहा कि यदि लीग आज इस सामाजिक-कल्याण के काम को अविलम्ब बन्द कर दे तो हमारी जनता में रोग, संकट और दुखों की बाढ़ सी ही आजाए। और इस प्रकार पीड़ित होने के बाद जनता हमारे राजनैतिक कार्यक्रम में सहयोग देने के काबिल ही न रहे। हमने बर्मा और मलाया के शहर से शहर जंगलों में सैकड़ों डॉक्टरों को भेज कर रक्षा-केन्द्र स्थापित किए हैं। हम दवा मुफ्त बांटते हैं। जरूरत पड़ने पर अन्न के मुफ्त भंडार भी खोल देते हैं। अब तक हमने हजारों पाउन्ड कुनीन मुफ्त बांट दी है। कोलालम्पुर के रक्षा-केन्द्र में रोज एक हजार से अधिक मर्द, औरतों और बच्चों की दवादारू की जाती है। इस रक्षा-केन्द्र पर पचहत्तर हजार डॉलर प्रति माह खर्च किए जाते हैं। रक्षा केन्द्रों और अस्पतालों के अलावा मलाया और बर्मा में हमारे सैकड़ों छोटे छोटे अस्पताल मुफ्त में दवा-दारू दे कर सेवाकार्य कर रहे हैं। हमारे केलिवा के स्वास्थ्य मंदिर ने तो हजारों की सेवा की है। थाईलैंड में हिन्दुस्तानियों के लिए एक निशुल्क प्रथम श्रेणी का नया अस्पताल है। जापानियों और बर्मियों तक ने बर्मियों के अस्पताल की मुक्त-कंठ से सराहना की है। हमारे पास दवाइयों और डाक्टरी औजारों की कमी थी पर फिर भी हमने रोगों को भगाने और तन्दुरुस्ती देने में कमाल की सफलता प्राप्त की है।

१ जुलाई, १९४४

श्री क... आज हमारे साथ भोजन करने आए। वे हमारे ऑडिटर जनरल हैं।

हमारे आय व्यय की बारीकियें उन्होंने अपने एक बर्मी मित्र को समझाई। उसे मैंने भी सुना। स्वेच्छा की भेटों और सभाओं में हारों को नीलाम किए जाने पर प्राप्त होनेवाली रकमों से खासी भली आमदनी है। पर इन से तो हमारा खर्च पूरा नहीं पड़ता। हमारी कुल आवश्यकता है पन्द्रह करोड़ रुपए की—इस वास्ते हमारी *अस्थायी सरकार ने हिन्दुस्तानियों पर एक कर लगाया है। यह कर वार्षिक आमदनी* अथवा वार्षिक नफे पर वसूल नहीं किया जाता। हमारी सरकार ने एक दूसरा ही तरीका ढूंढ निकाला है। पहिले मुख्य व्यापारियों की एक कमेटी हर हिन्दुस्तानी की मिलकियत का अंदाजा करती है। तब सरकार यह तय करती कि उस पूंजी का अमुक हिस्सा—करीब दस प्रति सैकड़ा—कर के रूप में अदा किया जाए। कमेटी यह भी बता देती है कि कर के रूप में अदा की जाने वाली रकम कितनी किश्तों

में सरकार के खजाने में जमा करा दी जानी चाहिए। आजाद हिन्द का राष्ट्रीय बैंक हमारी सरकार के लिए रकम जमा किया करता था।

यह कर सिर्फ हिन्दुस्तानियों से ही वसूल किया जाता था। किसी न किसी प्रकार का बहाना बना कर कर न देने वाले लोगों की भी कमी नहीं थी। कुछ तो बर्मा के वासिन्दे बन कर छूटने का प्रयत्न करते। ऐसे लोगों के लिए केवल एक ही रास्ता था। वे चेतावनी दे कर छोड़ दिए जाते कि भविष्य में आजाद हिन्द सरकार उन की रक्षा के लिए जिम्मेदार नहीं होगी। दूसरी तरह के लोग जो खरा खोटा बहाने-बाजी करते उन्हें अपील करने का हक था। यदि झूठे साबित होते तो कुछ लम्बे अरसे बाद कर देने पर ही उनका छुटकारा हो पाता था।

इस प्रकार बर्मा के हिन्दुस्तानियों से आठ करोड़ रुपए वसूल होने का अनुमान है, जिस में से अब तक साढ़े तीन करोड़ की नकद वसूली और चालीस लाख के करीब का दूसरा सामान जमा हो चुका है।

हम पेट पर पट्टी बाँध कर ही अपना काम चला रहे हैं पर जापान सरकार या किसी अन्य सरकार से कर्ज लेना हमने मंजूर नहीं किया है। हमें एक बात का अच्छी तरह से ध्यान है कि यदि आज हम कर्ज लेंगे तो हमारे मुल्क के कल की आर्थिक स्वतन्त्रता के रास्ते में काँटे बिखर जायेंगे। इसलिए हम अपने मित्रों से भी ऋण नहीं लेते—उधार से दूर ही दूर रह कर लम्बी सलाम कर लेते हैं। हमारा अर्थ एक ही मुख्य सिद्धान्त पर अटल है कि हिन्दुस्तानियों को अपनी हर जरूरत अपने आप पूरी करनी है। उन्हें अपने पैरों के बल खड़ा होना है। इस वास्ते वे दूसरों की छोटी मोटी सहायता नम्रता पूर्वक अस्वीकार कर देते हैं। इस वास्ते जापानियों के साथ व्यवहार करने में हमें काफी स्वाधीनता है। हमारे कट्टर से कट्टर बैरी तक हमारी जरा सी बात पर भी अंगुली उठाने की हिम्मत नहीं कर सकते और न यह कहने का साहस कर सकते हैं कि हमने अपने मुल्क के भावी हितों पर कुठाराघात किया है।

हमारे शिक्षण-शिविर में जापानी शिक्षक नहीं रक्खे जाते। हमारे फौजी अफसरों में न जापानी और न जर्मन विशेषज्ञों को स्थान है। इस का कारण भी तो हमारी आर्थिक स्वतन्त्रता मात्र ही है। एड़ी से लेकर चोटी तक हमारी फौज भारतीय और केवल भारतीय ही है।

जय हिन्द

४ जुलाई, १९४४

श्री सुभाष दो सप्ताह को मोर्चे से लौट आए हैं। पिछले दो महीनों से वे सारे मोर्चों का खुद अपनी आँखों से निरीक्षण करते रहे थे। उन्होंने फौज के सिपाहियों को प्रेरणा दे कर उनकी प्राणों में नई जान फूंक दी है।

आज से 'सुभाष सप्ताह' का श्री गणेश हुआ है। चार जुलाई का दिन। ठीक एक वर्ष पहिले इसी दिन नेताजी ने स्योनान सम्मेलन में, पूर्वी एशिया के इस आन्दोलन की बागडोर अपने हाथों में सम्हाली थी। ठीक इसी दिन तीन लाख हिन्दुस्तानियों ने श्री सुभाष बोस के पीछे संगठित रूप से खड़े होकर प्रतिज्ञा की थी कि 'आज़ादी अथवा मौत' आज से हमारा जीवन-मन्त्र रहेगा।

आज फिर जुबली हाल खचाखच भर उठा। तिल रखने को भी जगह न रही। राज मार्गों पर भी जनता मेदिनी उमड़ पड़ी। सड़क के पत्थरों की जगह नरमुंड ही नरमुंड दिखाई देने लगे। हॉल के अन्दर उसकी सीढ़ियाँ, बाहर की सड़क और जहाँ कहीं खड़े रहने को स्थान मिला लोग एक दूसरे से सट कर खड़े होगए। चारों ओर जन-सागर लहरा रहा था। इनकी सुविधा के लिए हॉल के बाहर भी लाउड-स्पीकर लगाने की व्यवस्था की गई थी। हमारी अब तक की सफलताओं का विवरण नेताजी ने इस प्रकार बताया।—

(१) अपने 'सम्पूर्ण संगठन के कार्यक्रम को सामने रखकर हमने जन-शक्ति, सधन-संपत्ति तथा धन-बल को पूरी तरह से एकत्रित किया है।

(२) मौजूदा युद्ध लड़ने के लिए हमने एक फौज का संगठन कर के उसे पूरा पूरा सैनिक शिक्षण दिया है और फौज लगातार दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती जा रही है।

(३) हमने फौज में केवल औरतों की एक टुकड़ी का भी आयोजन किया है जो झांसी की रानी रेजीमेंट के नाम से काम कर रही है।

(४) हमने आरज़ी हुकूमत-ए-आज़ाद हिन्द नाम की अपनी एक सरकार कायम की है जिस के अस्तित्व को हमारे नौ मित्र राष्ट्रों की सरकारों ने स्वीकार किया है।

(५) हमने एन्डमन और निकोबार द्वीपों के रूप में स्वतंत्र प्रदेश भी प्राप्त किए है।

(६) हम अपनी फौज को इम्फाल मुकाम से हिन्दुस्तान के निकट बर्मा में ले आए हैं और फरवरी १९४४ में हमने आजादी के जंग की शुरुआत भी करदी है। २१ मार्च के दिन सरकार के समक्ष हम यह घोषणा भी कर चुके हैं कि हमारी फौज ने सीमाओं को पार करके मातृभूमि में प्रवेश कर दिया है।

(७) अपने प्रचार और प्रकाशन विभाग के काम का हमने बहुत ही व्यवस्थित ढंग में विस्तार और विकास किया है।

(८) 'आजाद-हिन्द-दल' नाम के एक और स्वतन्त्र संगठन को हमने कायम किया है। स्वतन्त्र भारत में शासन संचालन और युद्धोत्तर-पुनर्निर्माण का काम इसके जिम्मे रहेगा।

(९) नेशनल बैंक ऑफ आजाद हिंद लिमिटेड के नाम से हमने अपना खुद का एक बैंक बर्मा में स्थापित कर दिया है और स्वतन्त्र भारत में चलाने के लिए अपने खुद के सिक्के ढलने का हुक्म दे दिया है।

(१०) युद्ध के प्रत्येक मोर्चे पर हमने सन्तोषजनक कार्य किया है। हमारी फौज की टुकड़ियें बराबर हिन्दुस्तान में घुसकर मातृभूमि को आजाद करती जा रही हैं। रफ्तार धीमी जरूर है पर वे दृढ़ता से नित्य और बाधाओं का सामना करते हुए आगे बढ़ रही हैं।

"एक समय था जब लोगों को पहले पहल यही शंका थी कि आजाद हिन्द फौज युद्ध में शरीक भी होगी या नहीं और यदि युद्ध में सम्मिलित भी हुई तो क्या सचमुच ही अंग्रेजों के विरुद्ध लोहा लेने के लिए तैयार हो सकेगी? और यदि अंग्रेजों के विरुद्ध उसने झंडा गाड़ भी दिया तो क्या उनकी कुशल सेना को करारी शिकस्त दे सकेगी? लेकिन हम ने इस परीक्षा में असाधारण सफलता प्राप्त की है और इस सफलता ने हम में निश्चय ही असीम आत्म-बल और दृढ़-संकल्प-शक्ति पैदा कर दी है।

"जब से युद्ध भारतभूमि पर होने लगा है तब से हम इसे अपना धर्म युद्ध समझने लगे हैं और इसी धर्म-युद्ध की भावना ने न सिर्फ हमारे युद्ध में जूझने वाले सैनिकों में ही बल्कि मोर्चे के पीछे युद्ध का कार्य करनेवाली नागरिक जनता में भी एक अजीब प्रेरणा—एक अनन्त स्फूर्ति पैदा करदी है।

"अब तक मैंने अपने किसी भी सिपाही के मुख से मोर्चे पर गर्मी गई कठोर यातनाओं के बारे में चूं तक करते नहीं सुना है। एक शिकायत उन की जरूर है कि उन्हें मोर्चे पर जाने के लिए अविलम्ब हुक्म देने में बहुत देर की जाती है। यह सहन करना उन के आत्माभिमान को असह्य जरूर है। अभी अभी मैं एक अस्पताल जा कर आया हूं। वहाँ घायल सैनिकों की मरहम पट्टी हो रही है। मलेरिया या अन्य किसी बीमारी के कारण भी कुछ सिपाही वहाँ इलाज में है। इन सब ने यही इच्छा प्रगट की है कि स्वस्थ होते ही निर्विलम्ब उन्हें फिर मोर्चों पर भेज दिया जाना चाहिए। ये सिपाही मोर्चों पर जा चुके हैं। इन्हें वहाँ की कठिनाइयों और मुसीबतों का पूरा पूरा ज्ञान है। फिर भी उन्हें मोर्चों पर जाने में खुशी है। उन्हें अपनी विजय में दृढ़ विश्वास है। लेश मात्र अतिशयोक्ति के बिना मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि पूर्वी एशिया के सभी हिन्दुस्तानियों में इसी प्रकार अजेय आशावाद कूट कूट कर भरा हुआ है।

"इस आशावाद को दृढ़ बनाने का एक और भी कारण है। वह है हिन्दुस्तान की आंतरिक परिस्थिति। आप ना जानते ही हैं कि कांग्रेस और सरकार के बीच अभी तक किसी तरह का समाधान नहीं हो सका है। जब महात्मा गांधी को जेल से रिहा कर दिया गया था तब अनेक लोग मन ही मन यह प्रश्न अपने आप को पूछा करते थे कि इस मुक्ति का क्या कारण है? क्या यह राजनैतिक समझौते की भूमिका है? या समझौता के लिए कोई पूर्व तैयारी तो नहीं है? पर अब साफ साफ पता चल गया है कि यह रिहाई सिर्फ महात्माजी के अस्वस्थ्य होने के कारण ही हुई है और इस के पीछे कोई भी राजनैतिक रहस्य छिपा हुआ नहीं है।

"जब तक महात्माजी और ब्रिटिश सरकार के बीच कोई संधि-समाधान नहीं होगा तब तक हमारे लिए चिन्ता की कोई बात नहीं।......हिन्दुस्तान में कांग्रेस और ब्रिटिश सरकार के बीच जब तक तनातनी चलती रहेगी तब तक हमारा काम सरलता पूर्वक बराबर चलता रहेगा। अब तक समझौते के कोई भी चिन्ह नजर नहीं आ रहे है। हमारे प्रोत्साहन का कारण यह है कि महात्माजी ने अब तक एक ही बात पर जोर दिया है कि दो वर्ष पहिले कांग्रेस द्वारा पास किए गए 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव में अब तक जरा सा भी फेरफार करने की वे गुंजाइश महसूस नहीं करते है।

"इन सब कारणों को मद्देनजर रखते हुए मैं इस निर्णय पर आया हूँ कि हिन्दुस्तान

की आतरिक परिस्थिति हमारे लिए बहुत ही अनुकूल और लाभप्रद है। जब तक काग्रेस ब्रिटिश सरकार के आगे घुटने नहीं टेक देगी या समझौता नहीं कर लेगी तब तक आम जनता अंग्रेजों के विरुद्ध ही रहेगी। ज्यों ज्यों हमारी फौज आगे बढ़ेगी और भारतभूमि को आजाद करती रहेगी त्यों त्यों हमारे हिन्दुस्तानी भाइयों को भी विश्वास होता जाएगा कि आजादी सिर्फ भुजाओं के बल से ही मिल सकती है। तब वे हमारे साथ कंधे से कंधा मिला कर आजादी के इस धर्म-युद्ध में कूदने के लिए बराबर आगे बढ़ते रहेंगे।"

नेताजी के भाषण को लोगों ने मन मुग्ध हो कर सुना। सभा विसर्जन होने के बाद मानव समुदाय को बिखरने में डेढ़ घन्टे से भी अधिक समय लग गया। यह उत्साह की पराकाष्ठा थी।

५ जुलाई, १९४४

'आज 'सुभाष सप्ताह' का दूसरा दिवस था। एक स्थिन फौज ने कवायद करके श्री सुभाष बोस को सलामी दी। यह एक बहुत ही प्रभावोत्पादक दृश्य था। सैनिकों की शिक्षा में कुशलता और पूर्णता थी। श्री सुभाष बोस इसे देख कर बहुत ही प्रसन्न हुए। उन्होंने जी खोल कर इन की प्रशंसा की।

नेताजी ने फौज के सैनिकों के समक्ष कहा

"आजाद हिन्द सेना का निर्माण हमारे शत्रुओं के लिए एक भयंकर चिन्ता और घबराहट का कारण बन गया है। कुछ समय तक वे जागते हुए भी सोते रहने का बहाना बनाते रहे। पहिले तो फौज के अस्तित्व को ही उन्होंने अस्वीकार कर दिया। पर जब फौज के अस्तित्व की घोषणा संसार के सामने कर दी गई तब इस समाचार को छिपा कर रखना उनके लिए कठिन हो गया। अब दिल्ली रेडियो ने भी अपना स्वर बदल दिया। उसने गला फाड़ फाड़ कर अब चिल्लाना शुरु किया है कि यह फौज जापानियों की कठपुतली मात्र है। भारतीय युद्ध बंदियों को जपान ने इस फौज में भर्ती कर लिया है। पर पोल के घोड़े कब तक दौड़ते? हिन्दुस्तान में तो ठौर ठौर यह समाचार बिजली की तरह फैल गया था कि पूर्वी एशिया के हर कोने से अधिक से अधिक भारतीय नागरिक हमारी फौज में भर्ती हो रहे हैं। अब आल इण्डिया रेडियो के मक्कार दगाबाज प्रचारकों ने फिर

अपनी चाल बदली और एक नई तुक जोड़कर वे चिल्ला रहे हैं कि भारतीय युद्ध बंदियों ने आजाद हिंद फौज में भर्ती होने से साफ इंकार कर दिया है, इस लिए नागरिकों को जबरदस्ती भर्ती किया जा रहा है। पर इतनी सी बात भी दिल्ली रेडियो के लंदन प्रचारकों के दिमाग में नहीं आसकी कि कैद में पड़े हुए युद्ध बंदी भी यदि फौज में भर्ती होने से इंकार कर सकते हैं तो भला स्वतन्त्र नागरिक इस प्रकार की जबरन भर्ती को कैसे स्वीकार कर सकते हैं?

"जिस में जरा भी साधारण बुद्धि है वह सहज मात्र में समझ सकता है कि भाड़े के टट्टुओं की फौज भले ही जबरन भर्ती से तैयार हो जाए लेकिन स्वतन्त्र मनुष्यों की फौज का निर्माण कभी भी लोगों को जबरन सेना में भर्ती कर के नहीं किया जा सकता।

'तुम एक आदमी के हाथ में जबरन बन्दूक दे सकते हो लेकिन जिस आदर्श और ध्येय के प्रति उसके दिल और दिमाग में तनिक भी श्रद्धा और विश्वास न हो, उसके लिए अपने प्राणों को उत्सर्ग करने के खातिर किसी भी स्थिति में उसे मजबूर नहीं किया जा सकता।

"पहिले हमारे दुश्मन यही बात ढोल पीट पीट कर कह रहे थे कि 'आजाद हिन्द फौज का कहीं अस्तित्व नहीं है। वह तो केवल एक प्रचार का बहाना है। लोगों को धोखा देने और भड़काने के लिए केवल शब्दों की गोलाबारी की जा रही है। भला, न फौज का ठिकाना है न सिपाहियों का। असलियत प्रकट हो कर रहेगी। बिना फौज के फौज आएगी कहां से लड़ने?' लेकिन यह राग कुछ दिन ही चला और कौमी जयचंदों ने दिल्ली के रेडियो से फिर नए राग का अलाप शुरु कर दी। सफेद झूठ का प्रचार वे दिन दहाड़े करने लगे। आजाद हिंद फौज जब हिन्दुस्तान की भूमि पर पहुंच चुकी थी और बहादुरी से लड़ रही थी उस समय उन्होंने कहना शुरु किया, "कि आजाद हिंद फौज बहुत दूर है—न जाने कहां? वह अभी हिन्दुस्तान की सीमा में प्रवेश ही नहीं कर सकी।" और अपनी कपट-नीति से लोगों को गुमराह करने वाले इस तरह के अनर्गल प्रलाप भी उन्होंने शुरु किए "फौज ने फलां फलां तारीख को दिल्ली पर अपना अधिकार करने की घोषणा की थी लेकिन उसके निश्चय धरे रह गए। दिल्ली

पर अधिकार करने के उनके निश्चित दिन आए और गए। लेकिन कहां है वह आज़ाद फौज और किसका है हौसला जो इसे आँख भी दिखाए।"

"मैंने तो पहिले ही बता दिया था कि आज़ाद हिन्द फौज में पुराने सैनिक और पुराने नागरिक दोनों ही हैं। इस से भी बढ़कर एक बात और है और वह—यह कि फौज में पुरुषों की सेना के अतिरिक्त महिलाओं की भी रेजिमेंटें अलग कार्य कर रही हैं।"

६ जुलाई, १९४४

आज नेताजी ने रेडियो पर विशेष तौर से गांधीजी को सम्बोधन कर के एक भाषण दी।

जिस तरह से पुत्र अपने पिता के आगे हृदय को खोल कर रख देता है उसी तरह से नेताजी ने आज बापू के आगे अपने अंतर को उड़ेल दिया। उन्होंने अपने हृदय के हर्ष और विषाद की एक एक भावना को उन्मुक्त हृदय से महात्माजी के आगे प्रकट कर दिया।

इस समय 'शोर्ट हैंड' का मेरा ज्ञान खूब काम आया। मैं चाहूँगी कि मेरा पुत्र बड़ा होकर इस भाषण को ज़रूर पढ़े। अपनी डायरी में जो पन्नों पर पन्ने मैं आए दिन लिखती जा रही हूँ उसे वह इस भाषण को पढ़ कर पलक मारते ही समझ जाएगा।

उन्होंने कहा—

"श्रद्धेय महात्माजी!

निरंतर कारावास में माता कस्तूर बा के करुण अवसान के बाद यह स्वाभाविक ही है कि आपके देशवासी आप के स्वास्थ्य के लिए चिंतित हों। यहीं प्रवासी भारतीयों में अपनी कार्यपद्धति के लिए अपने आंतरिक और घरेलू मतभेदों की तरह ही मतभेद है। लेकिन दिसम्बर १९२९ में लाहौर कांग्रेस के अवसर पर मुल्क की जिस मुकम्मिल आज़ादी की घोषणा आपने की थी वही ध्येय—मन सभी हिन्दुस्तानियों के सामने है। अब तो भारतीय, मुल्क के मौजूदा जागरण का आप ही को सर्जक मानते हैं। देश-भक्त प्रवासियों और भारत की आज़ादी के इच्छुक विदेशी मित्रों

के दिलों में आपकी प्रति जो अगाध श्रद्धा थी वह १९४२ के 'अंग्रेजो! भारत छोड़ो' वाले प्रस्ताव को जोरतापूर्वक जनता के सामने लाने में कई गुना अधिक बढ़ गई है।

"यह एक भयंकर भूल है। यदि हम मान लें कि ब्रिटिश सल्तनत और इसकी अंग्रेजी रिआया के दृष्टिकोण और विचारों में कोई अंतर है। बेशक अमेरिका में और उसी तरह से ब्रिटेन में भी उन आदर्शवादियों का एक अत्यन्त अल्प संख्यक दल जरूर मौजूद है जो भारत के प्रति सहानुभूति रखता है और जो चाहता है कि हिन्दुस्तान आजाद हो। परंतु भारतीय स्वाधीनता के हिमायती ये आदर्शवादी अपने मुल्क में केवल 'घनचक्कर' और गर्म दिमाग के अतिरिक्त और कुछ नहीं माने जाते और फिर उनकी तो संख्या ही कितनी है? केवल अंगुलियों पर ही गिने जा सकते हैं वे। इस लिए जहाँ तक हिन्दुस्तान का सवाल है वहाँ तक ब्रिटिश सरकार और ब्रिटिश जनता एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं।

'अमरिका के युद्धोद्देश्यों के संबंध में मेरा यह कहना है कि वाशिंगटन की परंपरा के अनुयायी—ये कपट-मूर्ति शासक वर्ग आज सारी पृथ्वी पर अपने साम्राज्य के विस्तार का स्वप्न देख रहे हैं। राजनीतिज्ञ और इन के मेधावी पुरुष खुले तरीके से इस युग को 'अमेरिका की शताब्दी' के नाम से पुकारते हैं। इस शासक वर्ग में गरमदल के कुछ ऐसे भी लोग मौजूद हैं जो इंगलैंड को अमेरिका का उनपचासवां राज्य मान कहने की सीमा तक चले जाते हैं।

"महात्माजी! मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि खतरों से भरी हुई अपनी यात्रा पर निकलने का बीड़ा उठाने के पहले दिनों, हफ्तों और महीनों तक मैंने इस समस्या के काले और उजले पहलू पर गंभीर चिंतन किया था—और निरंतर करता रहा। हिन्दुस्तान में रह कर, जीवन भर अपनी सम्पूर्ण शक्ति और श्रद्धा के साथ अपने राष्ट्र की अनवरत सेवा करने के बाद क्या मैं देशद्रोही बनना पसंद करूंगा? या क्या मैं चाहूंगा कि कोई मेरी तरफ अंगुली उठा कर भी मुझे देशद्रोही कह दे! अपने देशवासियों के स्नेह और उदारता के कारण मुझे मेरे हिन्दुस्तान में वह बड़े से बड़ा सम्मान मिल चुका है जो भारतीय जनता के किसी सच्चे सेवक को ही मिल

सकता है। मुझ में सम्पूर्ण श्रद्धा और अडिग वफादारी रखने वाले अपने साथियों का एक स्वतन्त्र दल भी मैं स्थापित कर सका था। ऐसे साहसिक और खतरों से भरे हुए काम के लिए विदेश भाग जाने में, मुझे अपनी जान और अपने भविष्य की राष्ट्रकीर्ति का ही खतरा नहीं था परन्तु अपने पार्टी के भविष्य की भी पूरीपूरी जोखिम थी। यदि मुझे इस बात का रत्ति मात्र भी विश्वास होता कि समुद्र पार के उद्योग के बिना हमें स्वाधीनता मिल सकेगी तो मैं इस सघर्ष काल में कभी भी अपने मुल्क हिन्दुस्तान को छोड़कर बाहिर निकलने की नहीं सोचता। यदि मुझे इस बात का जरा भी विश्वास हो जाता कि इस युद्ध के कारण मिले हुए स्वर्ण-अवसर के समान मुझे अपनी जिन्दगी में, आजादी प्राप्त करने का दूसरा मौका मिल सकेगा तो मुझे विचार करना पड़ता कि अपने मुल्क को छोड़ कर मैं बाहर जाऊं या नहीं।

"धुरी राष्ट्रों के सम्बन्ध में मेरे लिए अब एक ही सवाल का जवाब देना बाकी रह गया है। क्या यह मुमकिन हो सकता है कि मैं उन से धोखा खा लूं या वे मुझे फँसा लें? मुझे पूरा विश्वास है और मेरे इस विश्वास के पीछे सारे संसार की स्वीकृति का बल है कि अंग्रेजों में ही संसार के सब से पारंगत और धूर्त कूटनीतिज्ञ मिल सकते हैं। लुकाई का तो उन्होंने जैसे ठेका सा ले लिया है। अब यदि ऐसे शठ-मूर्ति अंग्रेज भी मुझे फुसलाने और बनाने में अपना मुंह लेकर बैठे रह गए तो कौन ऐसे राजनीतिज्ञ हैं जो मुझे फुसला सकेंगे और मुझे धोखा दे सकेंगे? और जरा सोचने की बात है कि जब ब्रिटिश हुकूमत जैसी शक्तिशाली सरकार भी जिस के हाथों मैंने लम्बी लम्बी सजाएं भुगती हैं, यातनाएं सही हैं और लाठियें तक खाई हैं—वह भी मुझे नैतिक पथ पतन की ओर नहीं खींच सकी तो फिर मैं जोर देकर कहता हूँ कि ऐसी कोई ताकत इस संसार में नहीं है जो मुझे पथभ्रष्ट कर सके। मैंने आज तक एक भी काम ऐसा नहीं किया है जिस से मेरे देश के आत्माभिमान, गौरव और हितों पर जरा सी भी आँच आ सके।

"एक समय ऐसा भी था जब जापान हमारे दुश्मनों का साथी था। जब तक अंग्रेजों और जापानियों में मित्रता का गाढ़ा सम्बन्ध था तब

तक मैं जापान नहीं आया। मैंने तो जापान की भूमि पर उस समय तक पैर भी नहीं रक्खा जब तक इन दोनों देशों में राजनैतिक सम्बन्ध सा बना हुआ था। जापान ने मेरे मत के अनुसार जब अपने इतिहास का सब से महत्वपूर्ण कदम उठाया अर्थात् ब्रिटेन और अमरीका के खिलाफ जंग का ऐलान किया उस समय मैंने खुद अपनी ही मर्जी से जापान जाने का इरादा किया। १९३७ और १९३८ के दरमियान—मेरे अनेक देशवासियों की तरह मेरी भी गहरी सहानुभूति चुंकिंग (चीन) के साथ थी। आप को याद होगा कि दिसम्बर १९३८ में मैंने हिन्दुस्तान की कांग्रेस के सभापति के नाते चुंकिंग को एक डाक्टरी मिशन भी भेजा था।

"महात्मा जी! दुनिया के लोगों की अपेक्षा आप इस बात को अच्छी तरह से जानते हैं कि अंग्रेजों के थोथे वायदों को हमारी जनता किस शंकालु नजर से देखती है। यदि जापान की घोषित नीति भी अंग्रेजों की ही तरह खाली कागजी घोड़ों तक ही सीमित रहती तो मैं जापान के साथ मिल कर काम करने का कभी विचार तक नहीं करता।

"महात्मा जी! अब मैं आप को यहाँ स्थापित की गई अस्थायी सरकार के सम्बन्ध में कुछ बतलाना चाहता हूँ। अपनी इस आजाद हिन्द की अस्थायी सरकार का एक, और केवल एक ही मकसद है—कि एक हथियारबन्द संघर्ष द्वारा लोहे से लोहा बजा कर, अंग्रेजों की गुलामी के जुए से हमारे मुल्क हिन्दुस्तान को आजाद किया जाए। जैसे ही एक बार हमारे दुश्मन देश से निकाल कर बाहर कर दिए जाएंगे और शांति तथा व्यवस्था कायम हो जाएगी कि यह अस्थायी सरकार का उद्देश्य भी पूरा हो जाएगा—वह अपने अभीष्ट-मकसद तक पहुँच जायेगी। हमें अपने प्रयत्नों, अपनी यातनाओं, अपनी कुर्बानियों के लिए सिर्फ एक ही इनाम चाहिए और वह है—मुल्क की आजादी। हमारे साथ ऐसे भी अनेकों लोग हैं जो हिन्दुस्तान के आजाद हो जाने के बाद राजनैतिक-जीवन से सन्यास ही ले लेने की सोचे बैठे हैं।

"यदि हमारे देश को किसी प्रकार से हमारे देशवासियों के प्रयत्नों द्वारा ही आजादी मिल सके तो इस से बढ़ कर किसी और को खुशी नहीं हो सकेगी या आप के 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव को अंग्रेज स्वयं ही मंजूर कर के यहाँ से अलविदा कह लें और इस प्रकार हम आजाद हो सकें तो

विश्वास कीजिए, महात्माजी ! हम घी के दिए जलाएँगे। पर हमें इन दोनों में एक भी संभव होता नहीं दिखता और इस लिए हमारी यह मान्यता हो गई है कि हमारा आन्दोलन अनिवार्य है और हम उसी मान्यता के सहारे अपने कदम बढ़ा रहे हैं।......

"हिन्दुस्तान की आज़ादी की आखिरी जंग शुरू हो चुकी है। आज़ाद हिन्द फौज के बहादुर जवांमर्द हिन्दुस्तान की पवित्र भूमि पर ही युद्ध कर रहे हैं। अपनी अनेक मुश्किलों और कठिनाइयों के बावजूद भी वे धीमी गति से पर मजबूत पैरों से आगे बढ़ रहे हैं। और जब तक नई दिल्ली में वायसराय के राज महल पर हमारा तिरंगा झंडा न फहरा दिया जाएगा और जब तक हिन्दुस्तान से आखिरी अंग्रेज को मार कर नहीं भगा दिया जाएगा तब तक यह सशस्त्र संघर्ष चालू रहेगा, कभी रुकेगा नहीं।

"महात्माजी ! हे राष्ट्र जनक बापू ! हिन्दुस्तान की आज़ादी के इस पवित्र यज्ञ में हमें आप की मंगल कामनाएं और आशीर्वाद चाहिए !"

९ जुलाई, १९४४

आज, हजारों दर्शकों के सामने, नेताजी ने मुसलमान कोट्याधिपति श्री ह...के महान त्याग का विवरण सुनाया। इन्होंने अपनी जमीन जायदाद, जवाहरात, गहने और सभी—जड़-जंगम संपत्ति को जो करीब एक करोड़ की सीमा से बढ़कर है आज मुल्क की आज़ादी के संघर्ष के लिए आज़ाद हिन्द लीग को भेंट कर दिया है। नेताजी ने इन्हें इन सेवाओं के उपलक्ष में 'सेवक-ए-हिन्द' के खिताब से विभूषित किया है। इस तरह के सम्मान को प्राप्त करने वाले ये पहिले ही व्यक्ति हैं।

प...ने कहा है कि हिन्दुस्तान से आने वाली खबरें बहुत ही आशाजनक हैं। पर हमारी फौज के आला अफसरों का खयाल है कि बिना लंबे और दुष्कर युद्ध के हम अंग्रेजों को हिन्दुस्तान से बाहर नहीं निकाल सकेंगे। अपने साम्राज्य की रक्षा के लिए अंग्रेज, पागलों की तरह, जी तोड़कर अपना अंतिम युद्ध अपनी पूरी शक्ति के साथ लड़े बिना रहेंगे नहीं। हिन्दुस्तान जैसी सोने की चिड़िया के हाथ से निकल जाने के बाद ब्रिटेन केवल तीसरे दर्जे के राष्ट्रों की पंक्ति में ही रह जाएगा। इसे वे अच्छी तरह से जानते हैं।

श्री सुभाष बाबू जब कभी भी विजय की बातें करते हैं उस समय उनकी वाणी किसी अज्ञात प्रेरणा से प्रेरित दिखाई देती है। सचमुच विजय के प्रति उन का विश्वास अडिग है। अब यदि कहीं कुछ अशुभ और अमंगल घटनाएं घट जाएं और हमारी योजना खाक में मिल जाए तो उनका क्या होगा? मैं केवल इसी कल्पना से कांप उठती हूँ? कहीं उन का हृदय तो टूट नहीं जाएगा? घाव बेशक बहुत गहरा होगा। उन्होंने तो अपना सर्वस्व आजादी की एकमात्र टेक पर न्यौछावर कर दिया है। पूर्वी एशिया के हम सभी भारतवासियों ने भी उन का ही अनुसरण किया है। भगवान! हमें बल दो, हमारी रक्षा करो।

१० जुलाई, १९४४

आम जनता के समारोह में नेताजी ने आज सिंहों की तरह गर्जना करते हुए भाषण दिया। करीब तीस हजार जनता एक मन से कान लगा कर सुन रही थी। उन्होंने हमारे संघर्ष की रण-योजना का इस तरह से खाका खींचा

> "हम यह खूब अच्छी तरह से जानते हैं कि अंग्रेजों की सेना पर जब तक हिन्दुस्तान के बाहिर से कोई प्रबल आक्रमण नहीं होगा तब तक वे अपने निरंकुश दमन और अत्याचार से कभी भी बाज नहीं आने के, एक इंच भी पीछे नहीं हटने के। वे बराबर क्रांतिकारी आन्दोलन को पैरों तले कुचलते रहेंगे। इसलिए आजाद हिन्द फौज ने हिन्दुस्तान की आजादी के जंग में यह 'दूसरा मोर्चा' खड़ा करने का निश्चय किया है। जब हम हिन्दुस्तान में कुछ और आगे बढ़ेंगे और जब हमारे देशवासी अपनी आँखों से अंग्रेजी फौजों का पलायन और भगदड़ देखेंगे तब ही उन्हें विश्वास होगा कि अब अंग्रेजों के कयामत का वक्त निकट आ गया है—तब ही वे अपने सिर के मौत पर भी हमारी फौज में आकर मिलना स्वीकार करेंगे और हमारे साथ कंधे से कंधा मिलाकर मुल्क की आजादी के लिए जूझना शुरु करेंगे। तब वे और हम एक साथ मिल कर अंग्रेजों को हिन्दुस्तान से खदेड़ने के लिए जोरों के साथ आक्रमण करेंगे और उसे तब तक चालू रखेंगे जबतक कि भारत भूमि से उन्हें मारकर नहीं भगा दें।
>
> "दोस्तो! दुश्मनों की ताकत को कम आँकने की भूल तो नादान और बेसमझ लोग ही करते हैं। हम ने अपने दुश्मनों की बिखरी सेना को आराकान कलादान, और हाका में तथा टिड्मि, और आसाम के

क्षेत्रों में देखा है। हमारी मात्रा के अनुरूप ही उन के पास राशन, और गस्त्रास्त्र हमारे से कहीं अधिक मात्रा में हैं। उन के हथियार हमारे हथियारों से नवीनतम हैं। इस में आश्चर्य की बात ही क्या? उन्होंने समस्त हिन्दुस्तान का रक्त चूस चूस कर—उसे लूट लूट कर हम से लड़ने के लिए ये शस्त्र पाए हैं। हम इतना भी नहीं समझ पाए कि यह हमारे ही जूते से हमारे सर कूटने चले आ रहे हैं। फिर भी हमने इन्हें हर स्थान पर करारी हार दी है—उन्हें मैदान छोड़ कर उल्टे पाँव भगना पड़ा है। विश्व का इतिहास साक्षी है इस बात के लिए कि क्रान्तिकारी फौजों को हर देश में इसी तरह की परिस्थितियों में से हो कर गुजरना पड़ा है पर इतना होते हुए भी अन्त में इन्हीं फौजों ने विजय प्राप्त की है। क्रांति के पुजारियों को शराब की बोतलों या टिन में बन्द किए हुए सूअर और गोमांस के द्वारा शक्ति नहीं मिलती। उन की शक्ति का स्रोत उन की श्रद्धा और त्याग में, एवं उनके पुरुषार्थ और धैर्य में है। आजाद हिन्द फौज की तालीम ब्रिटिश सेना की तालीम से बिलकुल दूसरे साँचे की है। वह भाड़े के टट्टुओं की सेना है तो यह देश पर कुर्बान होने वाले क्रांतिकारी देशभक्तों की। जो बातें ब्रिटिश सेना को स्वप्न में भी नहीं सिखाई गई होंगी वे बातें हमारी फौज के हर जवान-मर्द के दिल और दिमाग में अंकित हैं कि "संकट और यातनाओं की दुखदाई वेला में भी निरंतर झूमते रहो, तिल तिल कट मरो परन्तु जिन ३८ करोड़ हिन्दुस्तानियों की आजादी के लिए तुमने हाथ में जो हथियार सम्हाला है उसे अंतिम साँस तक मत छोड़ो।"

११ जुलाई, १९४४

दिल्ली के अंतिम सम्राट बहादुर-शाह की समाधी पर फौज की एक शानदार और भव्य परेड हुई।

नेताजी ने १८५७ के स्वातंत्र्य-संग्राम की खूब अच्छी तरह से चर्चा की। उस की असफलता के कारणों पर भी उन्होंने गंभीर विवेचना कर के प्रकाश डाला। फिर आज के जंगे-आजादी से उस की तुलना की और अन्त में स्वतंत्रता की बलिवेदी पर कुर्बान हो जाने के लिए जनता का आह्वान किया। उन्होंने कहा—

"मैं ज्यों ज्यों १८५७ के जंगे-आजादी का अध्ययन करता हूँ और क्रांति के असफल होजाने के बाद अंग्रेजों द्वारा किए गए पाशविक अत्याचारों का ख्याल करता हूँ उस समय मेरा खून खौल उठता है। यदि हम अपना मस्तक उठाकर स्वाभिमानी इंसान की तरह जीने और मरने का दम भरते हैं तो हमें १८५७ में अंग्रेजों की पाशविकता और अमानुषी अत्याचारों के आगे शहीद होने वाले हमारे वीरों के खून का बदला लेना होगा। हिन्दुस्तान—हमारा मुल्क हिन्दुस्तान—उस बैर का बदला माग रहा है। उसे प्रतिशोध चाहिए। केवल युद्ध में ही नहीं लेकिन जिन बेगुनाह और निहत्थे स्वातन्त्र्य-प्रेमी भारतीयों के उपर इन्होंने यातनाओं की तरह जुल्मो-सितम ढाए हैं-उन अपराधों की सजा इन्हें मिलनी ही चाहिए।

"हम भारतीयों में एक बहुत बड़ी कमी है। हम अपने शत्रुओं को उतनी तीव्रता से घृणा नहीं कर सकते जितने कि वे ओछे होते हैं और जितनी तीव्रता से उन से घृणा की जानी चाहिए। यदि आप चाहते हों कि अपने देशवासी मानवोचित वीरत्व और धीरता के उन आदर्शों को प्राप्त करें तो हमें उनको देश प्रेम का पाठ सिखाना पड़ेगा......और इसके साथ ही साथ अपने देश के दुश्मनों को नफरत करने का भी सबक सिखाना पड़ेगा।

"इस लिए मैं मांगता हूँ खून। दुश्मनों के पिछले पापों और अपराधों का बदला एक मात्र उन के खून से लिया जा सकता है। पर खून लेने के लिए खून देने की तैयारी चाहिए। इस वास्ते अब आज से खून देने का ही अपना कार्यक्रम रहेगा। कुर्बानी हमारा ध्येय होगा। हमारे जवाँ-मर्दों का खून हमारे सारे पुराने पापों को धो डालेगा।

"हमारे बहादुर जवाँ-मर्दों का खून हमारी आजादी की कीमत है। इन अत्याचारी अंग्रेजों से जिस प्रतिशोध की मांग हिन्दुस्तानी कर रहे हैं उसे हमारे बहादुर जवांमर्दों का खून, उनकी बहादुरी और उनका पुरुषार्थ ही पूरा कर सकता है।"

१२ जुलाई, १९४४

श्री सुभाष बाबू ने आज हमारी महिला शाखा के समक्ष प्रवचन करते हुए बताया कि हमारे दुश्मनों ने झूठे प्रचार के लिए किस तरह की धूर्तता पूर्ण

चालबाजियों का सहारा लिया है। आज का प्रवचन अनेकों सूचनाओं से भरा हुआ था। एक दम शिक्षाप्रद। उन्होंने शुरु किया—

"ब्रिटिश प्रचारकों ने पिछले युद्ध में जिन तरीकों को काम में लिया था उन का बयान तो खुद अंग्रेज लेखकों ने अपनी लिखी पुस्तकों में ही कर दिया है। यदि उनके सफेद झूठ का कुछ अंदाजा लगाना हो और यह जानना हो कि प्रचार के द्वारा वे किस तरह से धोखा दिया करते हैं तो सिर्फ दो ही पुस्तकें पढ़ लेना काफी होगा: पहिली का नाम है 'सिक्रेट्स ऑफ क्रिउज-हाउस' (Secrets Of Crews House) और दूसरी है 'वारटाइम फाल्सहुडस' (Wartime Falsehoods। इन पुस्तकों के लेखक का नाम है पोन्सनी। ब्रिगेडियर चार्टरीस एक अंग्रेज जनरल था जिसने पिछले महायुद्ध के समय इस तथ्य हीन झूठ का शरारत भरा प्रचार किया था कि जर्मन लोग मरे हुए सिपाहियों के शवों से चर्बी निकालते हैं। वह अपने मन में जानता था कि यह एकदम गलत, झूठ और कोरी धोखेबाजी है। युद्ध समाप्त हो जाने के बाद उस 'भले अंग्रेज' ने यह सारी बात कबूल भी करली। उसने कहा कि, "खुद मुझे भी विश्वास नहीं था कि मेरी इस झूठी बात का लोग इतना जल्दी सत्य की तरह विश्वास कर लेंगे।" पर संसार में ऐसे भोले भाले लोगों की कमी नहीं है जो जल्दी ही बहकाने में आजाएं। फिर यह तो कोई खयाल ही नहीं कर सकता था कि एक अंग्रेज जनरल जैसा प्रतिष्ठित पदाधिकारी कभी इस तरह का झूठा और शरारत भरा भाषण भी कर सकता है। इस वास्ते यह मक्कारी और धोखेबाजी खूब अच्छी तरह से चल निकली।

"चीते की चितकबरी लहरियाँ क्या कभी मिटाए मिट सकती हैं? और कुत्ते की दुम प्रयत्न करने के बाद भी कभी सीधी हो सकती है? और क्या बन्दर कभी कुलाच मारना भूल सकता है? इसी तरह झूठ बोलनेवाला अपने झूठ का प्रचार करने से बाज नहीं आता चाहे उसे इस बात का विश्वास भी हो जाए कि अब उस के असत्य भाषण पर किसी भी इन्सान के बच्चे का यकीन नहीं है। वह तो यही आशा लगाए रहता है कि संसार में अब भी उस के झूठ को सत्य समझने वाले मूर्ख हैं और बहुत अधिक संख्या में हैं। इस वास्ते जब मैं यह देखता हूँ कि अंग्रेज

अपनी धोखेबाजी और मक्कारी भरे इस झूठे प्रचार से बाज नहीं आ रहे हैं तो मुझे जरा भी आश्चर्य नहीं होता।

"काफी लम्बे अर्से तक दुश्मनों के झूठे प्रचारक यह कहानी कहते रहे कि आजाद हिन्द फौज एक कठपुतली सेना है जिसे जापानी अपने इशारों पर नचा रहे हैं। पर अन्त में उन्हें यह पता लग गया कि उनका यह निशाना खाली ही गया, इस चालाकी और धूर्तता का तनिक भी असर नहीं हुआ। उनकी दाल नहीं गल सकी क्योंकि लोगों ने उन से सवाल किए कि क्या कठपुतली फौजें या भाड़े की सेनाएं इस मर्दानगी और बहादुरी से भी कहीं अपने हथियारों के जौहर दिखा सकती हैं? तब वे क्या जवाब देते। उन्होंने तब अपनी चाल बदली। अब वे संसार को यह कह कर बहका रहे हैं कि आजाद हिन्द फौज एक दम बेकार सेना है। उस में जरा भी दम नहीं—उसके पास लड़ने की योजना नहीं। वह भी कोई फौज है भला, जिस के पास न पहनने को वर्दियां हों, न खाने को अन्न हों और न लड़ने के लिए हथियार हों।

"पर याद रहे आप को कि क्रांतिकारी सेनाओं को इस तरह की परिस्थितियों में ही लोहे से लोहा बजाना पड़ा है। आयरलैंड, रूस और इटली की राज्यक्रांतियों का इतिहास इस बात का साक्षी है। प्रतिकूल परिस्थितियों में लड़ने पर भी अन्त में विजय इन्हीं की हुई है। हमारे यहाँ भी इतिहास का पुनरावर्तन हो रहा है। हम भी अवश्य ही विजयी होंगे। यह बात जरूर है कि हमें अपने आजादी की कीमत अपने खून से चुकानी होगी।

"अंग्रेज प्रचारकों ने इस बार एक नया विस्फोट किया है कि 'हम इस्लाम पर अत्याचार कर रहे हैं। और यहां हम सभी इस्लाम-विरोधी व्यक्ति ही हैं!' इस में कितना सत्य है इसे आप सब जानते हैं। हमारे यहाँ सभी जगह मुसलमान मौजूद हैं—आजाद हिन्द लीग में, आजाद हिन्द फौज में और आजाद हिन्द की अस्थायी सरकार में भी। हमारी फौज में मुसलमान बड़े बड़े ऊँचे और अधिकार पूर्ण पदों पर हैं। ये अफसर प्रतिष्ठित खानदानों के हैं—जिन्होंने देहरादून की फौजी-एकेडमी में शिक्षा

प्राप्त करने की सीधी और सरल राह थी पर अंग्रेजों ने उसे इन्कार किया। उन्हें यह पसन्द नहीं आई। इस वास्ते अब यदि महात्माजी की योजना को भी अंग्रेजों से स्वीकार करवानी हो तो उस के लिए भी एक ही रास्ता बाकी बचा है और वह है—अपनी योजना की स्वांगी और सपूर्ण सफलता। यदि अंग्रेज अपनी योजना को सफल होने से रोकना चाहें तो उन के लिए अब भी एक चारा बाकी बचा है। वे 'भारत छोड़ो' के प्रस्ताव को स्वीकार कर के कांग्रेस और गांधीजी के साथ समझौता कर लें और अपने बोरिये बिस्तर बाँध कर हिन्दुस्तान से चलते बनें। यदि इस तरह से अंग्रेज हिन्दुस्तान को छोड़ कर चले जाएं तो मैं स्वयं ही आप लोगों से हाथ जोड़ कर प्रार्थना करूँगा कि हमारी कार्य सिद्धि हो गई। अब फौज की जरा भी आवश्यकता नहीं है। इसे तुरंत तोड़ दीजिए।''

जापानी इम्फाल और तियदिमो को खाली कर के पीछे हट गए हैं। यह क्या? कहीं यह अंत का आरंभ तो नहीं हो रहा है?

अस्ताचल की ओर

१३ अगस्त, १९४४

नेताजी ने आज आजाद हिन्द लीग के सभी विशेष कार्यकर्ताओं के सम्मुख भाषण दिया। इस अवसर पर आजाद हिन्द सरकार के सभी महकमों के अध्यक्ष, सलाहकार और मंत्री उपस्थित थे।

उन्होंने युद्ध की परिस्थिति का सिंहावलोकन करते हुए कहा:

"हमने युद्ध प्रारंभ करने में काफी देर कर दी। वर्षा का शुरू हो जाना हमारे लिए हानि-कारक रहा। सड़कों पर कीचड़ और दलदल से हो कर हमें गुजरना पड़ा। नदियों में धारा के प्रवाह के प्रतिकूल हमें अपने जहाज चलाने पड़े। पर इस के विपरीत दुश्मनों के पास अव्वल दर्जे की रेल और उत्तम सड़कें मौजूद थीं। हमारी सफलता के लिए एक ही मौका था-इम्फाल पर वर्षा के पहिले पहिले अधिकार कर लेने का। यह भी संभव था। लेकिन हमें हवाई सेना का पूरा सहयोग नहीं मिला

कर लड़ने के लिए तैयार है। अब हमें इन्हें अपनी ओर मिलाने का पूरा प्रयत्न कर लेना चाहिए। हम ने दुश्मनों की नीति को भी परख लिया है। हमने शत्रुओं के बहुत से कागज-पत्र भी छीन लिए हैं। हमारे सेनापतियों को जो अनुभव प्राप्त हुए हैं वे बहुत अनमोल हैं। युद्ध शुरू होने के पहिले जापानियों को हमारे फौज की संजीदगी पर जरा भी विश्वास नहीं था। वे हमारी फौज को टुकड़ियों में बाँट कर, जापानी सेना के साथ लगा देने पर आमादा थे। मैं चाहता था कि एक पूरा और अगला मोर्चा हमारी फौज को सौंपा जाए जहाँ वह अपनी बहादुरी दिखा सके। आखिर हमें एक मोर्चे पर लड़ने का अवसर भी मिल गया। उस मोर्चे पर स्वतंत्र रूप से युद्ध करने के कारण हमारे सेनापतियों, उप-सेनापतियों और अन्य अफसरों ने अतुलनीय अनुभव प्राप्त किए हैं।

"हमें अपनी कमजोरियाँ भी मालूम हो गई हैं। भूमि की प्राकृतिक बनावट के कारण यातायात और सामान पहुँचाने में काफी कसर रही है। हम मोर्चे पर प्रचार में बिलकुल कोरे रह गए हैं। हमने इस काम के लिए ट्रेनिंग दी थी पर यातायात की असुविधा के कारण इस काम का बिलकुल ही उपयोग नहीं किया जा सका। अब आज से आगे के लिए आजाद हिन्द फौज के हर युनिट के साथ एक प्रचार और प्रोपेगेंडा करने वाली टुकड़ी सदा सर्वदा लगी रहेगी। हमें लाउड स्पीकरों की सख्त जरूरत रही थी पर जापानी हमें वक्त पर मदद नहीं कर सके। अब हमें अपने काम के लिए खुद ही लाउड-स्पीकर्स के सेट तैयार कर लेने चाहिए।"

२१ अगस्त, १९४४

हमारे प्रधान सेनापति–नेताजी ने एक फरमान द्वारा सैनिक कार्यवाही को वर्षा के कारण स्थगित रखने का आदेश दिया है। उन्होंने साथ ही साथ हर व्यक्ति को यह भी आज्ञा दी है कि वह आक्रमण करने के लिए हर वक्त तैयार रहे।

एक विशाल जन समूह के सामने, एक सभा में नेताजी ने श्रीमति ब...को 'सेवक-ए-हिन्द' के पदक से विभूषित किया है। भारतीय स्वतन्त्रता के लिए इन्होंने जो भेंट और कुर्बानियाँ की है–यह पदक उन के प्रति सम्मान का प्रतीक है।

१० सेप्टेम्बर, १९४४

आजाद हिन्द की बर्मी शाखा का पूरे एक सप्ताह से अधिवेशन हो रहा है। ३४ शाखाओं से १८० प्रतिनिधि इस अधिवेशन में शरीक हुए हैं। आज यह अधिवेशन समाप्त हो गया। इस के प्रधान मंत्री श्री ज... ने मुझे बताया कि अधिवेशन एक दम सफल रहा। वहां व्यर्थ का वाद-विवाद जरा भी न हुआ और वहां हमने कई उलझनों को सुलझा लिया।

नेताजी ने मातृ-वतन की कितनी महंगी और महान सेवाएं की हैं! पता नहीं कब हमारा देश नेताजी की इन मूक सेवाओं को पहचान पाएगा? कितनी बुद्धिमानी से उन्होंने कलकत्ता, जमशेदपुर, मद्रास आदि घने बसे हुए शहरों को आसमान की आग से बचा लिया। उन शहरों पर जापानियों को बम न बरसाने के लिए राजी करना कोई आसान काम नहीं था पर उन्होंने यह भी सफल कर दिखाया। श्री र. का कहना है कि आजाद हिन्द सरकार ने यह कह कर जापानियों की योजना में सहयोग देने से इंकार किया कि हम भारत के विनाश में किसी प्रकार हाथ नहीं बटा सकते। यह नहीं हो सकता कि तुम हमारे मुल्क को बर्बाद करते जाओ और हम खड़े खड़े तमाशा देखते रहें। हम अपने देश को अपने अधिकार में करना चाहते हैं लेकिन दलित और बर्बादी से जर्जर मुल्क को नहीं बल्कि पूर्ण शक्तिशाली और स्वस्थ हिन्दुस्तान को।

मैं डायरी नहीं लिख पाती। बहुत थोड़ा लिखती हूँ। मैं लाचार हूँ। मैं काम में इतनी व्यस्त हूँ कि दम मारने को भी फुरसत नहीं निकाल सकती।

२२ सेप्टेम्बर, १९४४

कल हमने शहीद दिवस और जतीनदास की सवत्सरी मनाई। जुबली हॉल में तिल रखने को भी जगह नहीं थी। भीड़ के कारण लोगों के दम घुटे जा रहे थे। एक के बाद दूसरे भाषण-कर्ताओं ने भगतसिंह राजगुरु और सुखदेव की स्मृति को फिर से ताजा बना दिया जिन्होंने 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारों के साथ फांसी के तख्ते पर मौत का आलिंगन किया था। चन्द्रशेखर आजाद के अमर यश ने फिर से उसकी याद को जगा दिया—बंगाल के एक डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट को गोली मार देने वाली दो वीर युवतियों की मूर्ति आँखों के सामने खड़ी कर दी जिन का नाम था कुमारी सुनीति और कुमारी शान्ति। बीनादास का इतिहास सामने आया जिस वीरांगना ने कलकत्ता विश्व

विद्यालय के कन्वोकेशन हॉल में बंगाल के गवर्नर पर गोली चलाई थी। भारत के अनेक अमर क्रांतिकारियों की कथाएं सुनाई गईं। लाहौर जेल में भूख-हड़ताल में तिल तिल मिट कर बलिदान हो जाने वाले अमर शहीद श्री जतिन्द्रनाथ दास की संपूर्ण जीवन-कथा विस्तार के साथ बताई गई।

इन भाषणों के दरमियान शुरू से आखिर तक हमारी आंखें आंसुओं से छलछलाती रहीं। जब क्रांतिकारियों पर ढाए गए जुल्मो-सितम के पूरे वाक्यात जनता को सुनाए जा रहे थे उस समय बहुत से भावुक सिसकियां भर भर कर रो रहे थे।

इस के बाद नेताजी बोलने के लिए उठे और उन्होंने कहा—

"मादरे वतन आजादी मांग रही है। उस में आजादी के लिए तड़प है। वह अब आजादी के बिना चैन से जी नहीं सकती। पर आजादी अपनी वेदी पर कुर्बानी चाहती है—संपूर्ण बलिदान—तुम्हारी शक्ति का, दौलत का, तुम्हारी प्यारी से प्यारी वस्तु का—तुम्हारे पास जो कुछ है—उस सब का! अतीत के क्रांतिकारियों की तरह तुम्हें भी अपना सब कुछ बलिदान करना होगा—अपने आराम, चैन, खुशियाँ, धन दौलत और मिल्कियत को हिन्द माता के चरणों में चढ़ाना होगा। हमने अपने सपूतों को रणचंडी के खप्पर में होम दिया है। लेकिन रणचंडी अभी तक रीझी नहीं। आज मैं उसे रिझाने का रास्ते तुम्हें बताऊंगा। रणचंडी आज केवल सैनिक ही नहीं मांगती उसे और कुछ चाहिए। उसे विद्रोह चाहिए-इस विद्रोह को पैदा करने वाले विद्रोही चाहिए—वे विद्रोही औरतें और मर्द-जो मृत्युंजय टुकड़ी में मौत से खेलने के लिए भर्ती हो सकें। रणचंडी को ऐसे बागी चाहिए जो अपने ही खून के नाले बहा कर दुश्मनों को उस में डूबने के लिए मजबूर कर सकें।

'तुम मुझ को खून दो—
मैं तुम को आज़ादी दूंगा!'

स्वतंत्रता की देवी यही मांग कर रही है। कौन यह मांग पूरी करेगा?

"हम तैयार हैं! हम खून देंगे अपना," जनता में से अपने आप ही जन-रव गूंज पड़ा, "लीजिए! अभी हाजिर है!"

जनता अपने पैरों पर उठ खड़ी हुई और मुक्ति-मत्त मानवता रंग मंच पर खड़े हुए नेताजी की ओर—बढ़ चली। उनकी लगन और प्रेरणा दर्शनीय थी। हम तो अपनी जगह पर ही रह गए और हस्ताक्षर करने वाले एक के आगे एक रंग मंच पर जा चढ़े। चक्कू और पिनें अपना काम करने लगीं और खून से हस्ताक्षर किए जाने लगे। हस्ताक्षर समाप्त हुए। सब से पहिले १७ महिलाएं पहुँची थीं। उन्होंने तो मर्दों के भी कान कतर लिए। जब तक वे हस्ताक्षरों का क्रम समाप्त नहीं कर सकीं तब तक कोई मर्द मंच पर नहीं जा सका—किसी दूसरे को किसी ने अपने से आगे जाने ही नहीं दिया। रक्तदान चलता रहा। इस प्रकार—एक घन्टे से भी अधिक समय तक लोग स्वेच्छा से अपने मौत के परवानों पर बराबर हस्ताक्षर करते रहे।

उस समय लोगों में उत्साह खुद ही मूर्तिमान हो उठा था। उन के चेहरों पर चमक थी और आंखों में चिनगारियाँ। आज मैं इस बात का अनुभव कर सकी कि केसरिया पहन कर शत्रुओं पर टूट पड़ने वाले क्षत्रियों का तेज और पराक्रम कैसा होता होगा? ऐसी कौम को कौन रोक सकता है—आजादी प्राप्त करने से? ब्रिटिश साम्राज्य! सावधान! तुम्हें उखाड़ फेंकने वाली शक्ति पनप चुकी है—तुम्हारे विनाश के उपकरण तैयार हो चुके हैं।

घर आने पर मैंने प.. की अँगुली पर भी चाकू का घाव (पन) देखा। अब तक वे उसे छिपा रहे थे मुझ से। मैंने एक ही नजर में समझ लिया—उन्होंने भी

हस्ताक्षर किए हैं। एक क्षण के लिए मैं भय से आतंकित हो उठी। मेरी आँखें आँसुओं से छलछला पड़ीं। पर मैं दूसरे ही क्षण सम्भल गई। यह तो क्षणिक मानसिक दुर्बलता थी। मुझे अपने वीर पति पर गर्व हुआ। उनकी शान में मेरी छाती फूल उठी और मैंने आवेश में आकर उन्हें आलिंगन में भर लिया—उन के अधरों पर मेरे अधर जा गिरे और फिर वहीं स्थिर हो गए।

मुझे कल रात नींद नहीं आई। जीवन संग्राम में मैं कहीं अकेली ही नहीं छोड़ दी जाऊँ? कहीं वे मुझ से छीन न लिये जाएँ? पर मैं उन्हें बाधा नहीं दूँगी उन के संकल्प में। यह विचार मात्र ही बेहूदा है। लेकिन मेरा धर्म-संकट दूसरा है। मैं भी हस्ताक्षर कर दूँ? तो फिर मेरे पुत्र का कौन इस दुनिया में? उन्हें जरा यह तो विचार करना था। अपने बदले यदि मुझे वे हस्ताक्षर करने का कह देते तो—तो कितना अच्छा होता! मेरी जिन्दगी का महत्त्व उन की जिन्दगी से अधिक नहीं। फिर—क्या उन्होंने मुझे कायर समझा? ओफ केवल निर्बल नारी!

पर क्या उन का हस्ताक्षर करना ही जरूरी था? जाने दो, यह उन्हीं के विचारने का विषय है। पर देव! तुम तो मेरी इस अजीब कसौटी में परीक्षा ले रहे हो जिसकी मुझे कल्पना भी नहीं थी। पर मैं तुम्हारे रास्ते की बाधा नहीं बनूँगी। तुम्हें अपने पथ से विचलित नहीं करूँगी मेरे प्राण! विश्वास करना! कसौटी पर खरी ही उतरूँगी!

२८ सेप्टेम्बर, १९४४

केन्द्रीय शिविर पर आज मैं श्री सुभाष बाबू से मिली। मैं अन्दर जा रही थी और वे बाहिर निकल रहे थे। मैंने तन कर 'जयहिन्द' के साथ सैनिक अभिवादन किया। वे रुके। उन्होंने मेरे घावों के बारे में पूछा और प...के विषय में भी। मैंने उनको बताया कि दिल्ली रेडियो आप की आकांक्षाओं को 'स्वप्न मात्र' बता रहा है—और आपको केवल स्वप्न-द्रष्टा कह रहा है।

एक क्षण के लिए नेताजी मौन रहे। फिर अत्यन्त धीमी आवाज में उन्होंने उत्तर दिया। उन की वाणी में न आवेश था न क्रोध। इन शब्दों में उनकी आत्मा बोल रही थी। उन्होंने कहा "वे मुझे स्वप्न-द्रष्टा कहते हैं—कहते हैं न? मैं स्वयं स्वीकार करता हूँ कि मैं स्वप्न-द्रष्टा हूँ। बाल्यकाल से ही मैं मुझ

की आजादी का स्वप्न देखता आया हूँ। मुल्क की आजादी का स्वप्न-मेरा मन मे प्रिय स्वप्न है। वे समझते है आजादी के स्वप्न देखना पाप है; बेइज्जती है, शर्म की बात है। मै इसी में गौरव अनुभव करता हूँ। उन्हें मेरे स्वप्न पसन्द नहीं, फूटी आँखों भी देखना नहीं चाहते वे मेरे स्वप्नों को। यह कोई अनहोनी बात नहीं उन के लिए। यदि मैं भारत की आजादी के स्वप्न नहीं देखता तो मुझे गुलामी को एक सनातन सिद्धान्त की तरह स्वीकार कर के चुपचाप ही बैठ जाना चाहिए था। पर मूल बात यह है कि क्या मेरे स्वप्न सच्चे भी हो सकते है या नहीं ? लेकिन मुझे बताने दो कि मेरे स्वप्न बराबर सच्चे होते गए है—और होते जा रहे है। आजाद हिन्द फौज का निर्माण मेरा एक युगों का लम्बा स्वप्न था। लेकिन आज वह सत्य है। तुम और तुम्हारे पति का एक साथ स्वतन्त्रता के लिए अर्पित होना मेरा दूसरा स्वप्न पूरा कर रहा है। आज तुम्हारी इस युगल जोड़ी के समान हजारों युवक और युवतियाँ मुल्क की आजादी के लिए अर्पित होकर मेरे दूसरे स्वप्न को भी सत्य कर रहे हैं। चिंता नहीं कि मै जीवन भर स्वप्न-दृष्टा ही रहा। ससार की प्रगति युग युग मे स्वप्न-दृष्टाओं और उन के स्वप्नों पर ही आधारित रही है......शोषण, स्वार्थ और साम्राज्यवाद के सपनों पर नहीं बल्कि प्रगति, लोक-कल्याण और ससार की समग्र जनता की स्वाधीनता के सपनों के ऊपर।"

और इतना कह कर वे चलते बने। कितने महान व्यक्ति है वे!

२ आक्टोबर १९४४

आज गांधी जयंती का पर्व था। प्रत्येक भारतीय के घर पर तिरंगा झंडा शोभा दे रहा था। प्रात फौज ने झंडा अभिवादन का कार्यक्रम बनाया था। हम सबने—भारत को आजाद कर के ही दम लेने की अपनी प्रतिज्ञाओं को फिर से दोहराया। कांग्रेस द्वारा प्रचारित स्वतन्त्रता की प्रतिज्ञा पर रंगून के हजारों भारतीयों ने हस्ताक्षर किए।

२० ओक्टोबर, १९४४

टिड्डिम से जापानी पीछे हट गए हैं। अग्रेजों की १४ वीं आर्मी खोफनाक बताई जाती है। पर हमारी फौज के वीरों के मुकाबिले में उन की दाल नहीं गलने की।

पर फौज पूरी शक्ति से मोर्चों पर आक्रमण क्यों नहीं कर रही है ?

२७ नवम्बर, १९४४

पंजाब-केसरी लाला लाजपतराय की आज हमने बर्सी मनाई। वे पंजाब के महान क्रांतिकारी नेता थे।

श्री न... पेर्गोर से यहाँ आए हुए हैं। उन्होंने फौज के केन्द्रीय-शिविर के अधिकारियों को संबोधन कर के कहा—

"हम पूर्वी एशिया के तीस लाख भारतीयों ने देश की आजादी के लिए डट कर युद्ध करने का दृढ़ निश्चय कर लिया है। या तो विजय प्राप्त करेंगे या आगे बढ़ते हुए प्राणों की होम देंगे। यदि हम जंगे-आजादी के मैदान में कट मरेंगे तो भी इस विश्वास के साथ कि हमने अपने मुल्क के प्रति अपना एक फर्ज अदा कर दिया है। हमें असफलताओं का जरा भी भय नहीं। हमारे रक्त की एक-एक बूंद से—हमारे बैर का बदला लेनेवाले हजारों वीर उठ खड़े होंगे। अंग्रेज यत्न करते रहें—संघर्ष जारी रक्खें और जितना करना हो—जी खोल कर कर लें। पर भारत आजाद हो कर ही रहेगा—चालीस करोड़ों का यह जन्म-सिद्ध अधिकार है—इसे कोई नहीं छीन सकता।

"एक और बात मैं यहाँ स्पष्ट कर दूं। श्री सुभाष और उन के साथ चलने वाले तीस लाख भारतीय साथी किसी भी साम्राज्यवाद के मित्र नहीं हैं—साम्राज्यवाद के वे मित्र बन नहीं सकते। भारत की राजनैतिक स्वतन्त्रता तो अपने ध्येय को प्राप्त करने का एक साधन मात्र है—असली ध्येय तो भारतीय समाज का नूतन निर्माण है।"

श्री न...और जापानी अधिकारियों में बहुत कम बनती है। छत्तीस का सम्बन्ध भी बताया जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। इनके समाजवादी दृष्टिकोण के कारण इन को शक की दृष्टि से देखा जाता है। पर जापानी इन का बिगाड़ कुछ नहीं सकते। बिगाड़ना दूर रहा जापानी इनका बाल भी बाका नहीं कर सकते जब तक हमारी अस्थायी आजाद हिन्द सरकार का उन पर संरक्षण है और जब तक वे इस सरकार की प्रजा हैं। यदि वे चीनी होते तो जापानी कभी ही पकड़कर ले गए होते इन्हें-'सुधारने के लिए'। लेकिन नेताजी भारतीयों के लिए एक जबरदस्त आधार-स्तम्भ बने हुए हैं। उन के यहाँ आ जाने के बाद ही हम इतने सुरक्षित हो सके हैं। व यदि, यहां न आए होते तो हमारी हालत-शत्रुराष्ट्रों के अन्य नागरिकों की तुलना में बहुत ही बदतर होती—शायद अत्यन्त भयानक।

श्री न...का कथन है किकान ने एक नई आपत्ति खड़ी की थी। वे नेताजी के भाषणों की एक पुस्तक का सपादन कर रहे थे। किताब का नाम रक्खा था "चलो दिल्ली"। श्री न...ने उसकी भूमिका लिखी थी। किकान ने उसकी भूमिका पर एतराज उठाया। वह उस पुस्तक को प्रकाशित नहीं होने देना चाहती थी। पर उसे मुँह की खानी पड़ी। पुस्तक छप गई उसी भूमिका के साथ और अब धड़ल्ले से बिक रही है बाजार में। पर जापानी फिर भी अपनी चालों से बाज नहीं आए। अब उन्होंने "बैंकोक क्रोनिकल" पर यह दबाव डाला है कि वह भविष्य में श्री न...के लेख नहीं छापा करे। उन्हें आज तक तो बराबर सफलता मिलती रही है पर उस पत्र में तब से अब तक श्री न...का एक शब्द भी प्रकाशित नहीं हो सका है।

श्री न...अभय और वीर योद्धा है। हम ने उन के आग भरे लेखों को बार बार पढ़ा है। सारे थाईलैंड में उन के लिए काफी सम्मान और इज्जत है। उन के लेख पढ़ पढ़कर उन के बारे में मैंने जो धारणाएं बनाली थी वे पूरी तरह से सत्य निकली। यह उनसे अधिवेशन में मिलने पर मैंने जाना। पूर्वी एशिया में रहने वाले भारत-माता के ऐसे अनेकों लाडले सुपुत्र और सुपुत्रियाँ है कि जिनका ससार के हर कोने में सम्मान होता है।

२६ दिसम्बर १९४४

चीनी सेना ने भामो पर कब्जा कर लिया है और अंग्रेज यूयीडाग तक बढ़ आए हैं।

पर युद्ध में उतार चढ़ाव तो आते ही रहते है। नेताजी तो पहिले से ही कहते आए है "अंग्रेज आसाम और बगाल की सीमा पर तो प्राणों की बाजी लगाकर भी भयकर से भयकर युद्ध करेंगे।"

उन्होंने आज मुझे यह बताया कि फौज अब अपनी रक्षा का युद्ध लड़ रही है। इस के दो कारण है। बर्म्मा का हाथ से निकल जाना हमारे लिए बहुत ही हानिप्रद रहेगा। आजादी के आन्दोलन को इससे गहरा धक्का लगेगा। दूसरा—अभी जापानी प्रशान्त में बुरी तरह से उलझे हुए है। वहाँ उन्हें लेने के देने पड़ रहे है। इस वास्ते जितनी मदद वे देना चाहते है अभी देने से लाचार है।

२६ जनवरी, १९४५

आज स्वाधीनता दिवस है। एक बड़ी जोरदार सभा हुई।

सर ए...चले। पता नहीं कहाँ? स्थान अनिश्चित है। मिलेंगे फिर कभी हम दोनों या नहीं? मुझे मन में उठने वाले भय और आशंकाओं को दबाना चाहिए। उन के वशीभूत मैं न बनूं। उन की जरा भी परवाह मुझे नहीं करनी चाहिए।

यह आवश्यक है कि मैं सजग रहूँ। अपने पर पूरा काबू रक्खूं। मैं अपने से ही इसी लिए कहती हूँ कि। 'भूल मत तू कि तू भारत माता की बेटी है। झांसी की रानी रेजिमेंट की वीर और विद्रोहिनी सैनिका है। अपने आप को काम में भुला दे।'

अंग्रेज आक्रियाब पर उतर पड़े हैं। मोर्चे पर बातें सुधरी हुई जान पड़ती है। पर चिन्ता नहीं। हमारा निश्चय अटल है और संकल्प दृढ़। हमें हमारी विजय में पूरा विश्वास है।

पिछले दो हफ्तों में मलाया ने आज़ाद हिन्द सरकार के लिए चालीस लाख रुपए इकट्ठे किए हैं। मलाया ने यह स्वाधीनता दिवस की अपनी भेंट दी है। बर्मा में अब तक कुल आठ करोड़ रुपए इकट्ठे हो चुके हैं।

१५ फरवरी, १९४५

आज समाचारों में नई जान है। वे इन दिनों के पीछे हटने की खबरों से बिलकुल भिन्न हैं। कर्नल स. की अध्यक्षता में सुभाष ब्रिगेड ने आज कमाल कर दिखाया। अंग्रेजों की १४ वीं फौज के दांत खट्टे कर दिए। आगे बढ़ने से एक दम रोक दिया गया है उन्हें।

६ मार्च, १९४५

जनरल मैक आर्थर की प्रगति में बिजली की गति आ गई है। द्वीप के बाद द्वीप उन के पन्जे में आ रहे हैं। प्रशान्त युद्ध के सम्बन्ध में यह सगुन अमंगलकारी है। मित्र राष्ट्रों ने शेखी बघारी है कि उन्होंने टोकियो पर लगातार छः घन्टों तक बमबारी की। वे कहते हैं कि १५०० हवाई जहाजों से यह आक्रमण किया गया था पूरा। यह बात एक दम सत्य भले ही न हो पर जापानी है पूरी तरह से मुसीबत के पंजे में। यह तो जापानियों के व्यवहार से ही पता चल रहा

है। अमेरिकन इवोजिमा द्वीप पर उतर पड़े है और कुछ मोर्चों पर अधिकार भी कर लिया है। पर कब तक के लिए? वे अवश्य पीछे खदेड़ दिए जावेंगे।

आजाद ब्रिगेड तेजी से बढ़ रही है। उसने एक बहुत बड़ा मोर्चा फतह किया है। इस के कमान्डर कर्नल ज...है। सैनिक पागल हो कर युद्ध में डट हुए है। जरा एक घटना तो सुनो।

जब उन्हें "पीछे हट जाओ" का हुक्म मिला तो—सब के सब सन्न पड़ें। विद्रोह तक की नौबत आ गई। हर सैनिक ने हुक्म मानने से इन्कार कर दिया। उन्होंने कहा:

"हमें दिल्ली पहुँचने का हुक्म है। नेताजी की यही आज्ञा है। उन्होंने हमें किसी भी हालत में पीछे न हटने का सबक दिया है। यह पीछे हटने का हुक्म अवश्य ही अंग्रेजों के पाँचवें कालम की करतूत है। अभी दूसर डिविजन के चार मेजर, अंग्रेजों से मिल कर यही काम कर बैठे थे। इन कपूत विभीषणों के नाम है—ड, मदान, रियाज और गुलाम-सरवर। हम नहीं मानेंगे यह हुक्म—कभी नहीं। ज्यादा जोर देगा कोई तो गोली मार देंगे उस गद्दार को।"

कमान्डरों और दूसरे अफसरों ने समझाने की भरसक कोशिशें की। उन्होंने कारण भी बताए "हमारे पास गोला बारूद नहीं है। हमारे पास मोटरों और टैंकों की एकदम कमी है। चिदविन पार करते करते सारा राशन भी समाप्त हो चुका है। हमने जंगल की जड़ों और फलों को खा खाकर काम चलाया है। फौज के अनेकों सैनिक ज्वर से पीड़ित है। मलेरिया फूट निकला है और शायद हमारी दवाइयाँ भी खत्म हो जाएं। अब केवल पीछे हटने के अतिरिक्त दूसरा कोई चारा नहीं है।"

फिर भी सैनिकों को विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने जवाब दिया "हम अब तक घास और पत्तियाँ खा कर आगे बढ़े हैं। अब भी इन्हीं के सहारे कूच करेंगे आगे को। पीछे हटने का नाम न लो। कायरता के शब्द मुँह से निकालने के पहिले ख्याल बन्द कर लो। हमें दवाइयों की चिन्ता नहीं। हमें बराबर आगे बढ़ कर शत्रुओं को पीछे खदेड़ना है। हम नेताजी के प्रति विश्वास-घात नहीं कर सकते। हम दिल्ली जा कर ही दम लेंगे। अपने हुक्म वापिस लौटा लो—और आगे बढ़ने का हमें हुक्म दे दो। चलो दिल्ली!"

ये ही बहादुर, अंग्रेजों को इरावदी के पार दो बार खदेड़ चुके थे। उन्हें यह भी समझाया गया कि जापानी फौज हट चुकी है। अब बच निकलने के लिए पीछे हटने में ही भलाई है। पर वे तो अपनी बात पर एक दम दृढ़ थे—लोहे की तरह। उन्होंने यही उत्तर दिया, "महरबानी कर के हम इन का पीछा करने दो। आज मौका है। आज हम इन्हें पछाड़ कर ही छोड़ेंगे।"

अन्त में एक व्यक्ति मोर्चे के पीछे सैनिक-शिविर में नेताजी के पास दौड़ाया गया। वह नेताजी के ही हस्ताक्षरों में लिखा हुआ हुक्म लेकर आया। तब ही वे लोग माने। अब उस वीरतापूर्ण दृढ़ विरोध का स्थान करुणा ने ले लिया। वे रो पड़े। उन की आँखों में आंसू थे और गले में हिचकियाँ। वे जवां-मर्द सैनिक बच्चों की तरह सिसकियें भरने लगे। टूटे हुए दिल से उन्होंने पीठ फेरी और मैदाने जंग से लौट पड़े। उस दिन अन्न का एक दाना तक मुँह में नहीं डाला किसी ने। क्या यह अन्त का ही आरम्भ तो नहीं है? सभी के चेहरों पर यही एक प्रश्न था।

१५ मार्च १९४५

५ तारीख को मैन्डेला का पतन हो गया। अब जापानी, रंगून खाली कर देने पर तुले हुए हैं। मुझे किसी ने कहा है—

रंगून की रक्षा के लिए फौज द्वारा युद्ध जारी रखने की व्यवस्था करवाने के वास्ते नेताजी अपनी सम्पूर्ण तर्क-शक्ति के साथ जापानियों से विचार विमर्ष कर रहे हैं। यदि बर्म्मा अंग्रेजों के हाथ में चला गया तो दिल्ली हमारे लिए और अधिक दूर हो जावेगी। हमारी आजादी की आशा पर हमेशा के लिए पानी फिर जाएगा।

गांधी और नेहरू ब्रिगेड ने भारी हानि उठाई है पर अंग्रेजों को एक एक इंच भूमि के लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी करनी पड़ी है। यह आजादी का युद्ध हमारे लिए मरण-त्यौहार है। हम पीछे हटना नहीं जानते। हर कदम के लिए दुश्मनों से प्राणों की बाजी लगा कर ही हम लोहा लेते रहे हैं।

ऐसे समाचार मिले हैं कि अंग्रेजों की १६ वीं डिविजन ने माडले फतह कर लिया है। मेनोय का भी यही हाल है। क्या हो रहा है यह सब? अचानक ही अंग्रेज इतने अधिक शक्ति-शाली कैसे बन गए? या यह अमेरिकनों की ही करामात है? जापानी हवाई शक्ति तो मानो गायब ही हो गई—मानो आसमान ही निगल गया हो उसे।

५ अप्रैल, १९४५

मास्को ने आज सोवियट-जापान की अनाक्रमण-सन्धि का अंत कर दिया है। इस का सीधा अर्थ है—तबाही और बर्बादी का ताण्डव नृत्य। अंतिम पटाक्षेप।

२४ अप्रैल, १९४५

श्री सुभाष आज रंगून से बेंकॉक चले गए हैं। उन्होंने तब तक रंगून छोड़ने से इन्कार कर दिया था जब तक कि झांसी की रानी रेजिमेंट और दूसरी टुकड़ियों को यहाँ से नहीं हटा लिया जाता। मैं रंगून के सदर फौजी मुकाम के साथ हूँ। अतः मुझे जाने की जरूरत नहीं। मेरी यह प्रार्थना स्वीकार कर ली गई है।

जापान के सेनापति भी कल रंगून छोड़ कर चले गए।

श्री सुभाष रंगून छोड़ने वाले सब से अंतिम व्यक्ति थे। हवाई जहाज में चढ़ने के पहिले जिस अंतिम नजर से उन्होंने हमारी ओर देखा था उसे मैं जीवन भर भूल नहीं सकूँगी।

रंगून शहर फौज के सुपुर्द कर दिया गया है। जनरल लोकनादन फौज का कमान्ड करेंगे। फौज के सात हजार सिपाही नगर में अमन चैन कायम करेंगे और नागरिकों के जान माल की रक्षा करेंगे। अब, जब अंग्रेज यहां आए तो हमें उनके साथ युद्ध नहीं करना है। हमें यह भली प्रकार मालूम है कि रंगून चारों ओर से घेर लिया गया है। हिन्दुस्तान की स्वाधीनता प्राप्ति का हर संभव प्रयत्न असफल हो चुका। हमारी आशाएं लुप्त हो गईं। अब मलाया की तरफ भागना बेकार है। हम अंग्रेजों के आगे इसी लिए व्यवस्थित रीति से आत्म-समर्पण कर देंगे।

आजाद हिन्द लीग का काम श्री बहादुरी के जिम्मे छोड़ा गया है। अब तक ये हमारे उप सभापति थे।

आजाद हिन्द की अस्थाई सरकार ने बेंकॉक जाने के पहले अपना सारा हिसाब साफ कर दिया था। अब एक पाई का भी ऋण नहीं है इस के सिर पर।

हमारा बैंक खुला रहेगा—हाँ अंग्रेजों के आने के बाद भी खुला रहेगा। बर्मा की आजाद सरकार के पास अपने सैनिकों को वेतन तक देने के लिए पैसा नहीं है। यह सर्व नष्ट में है। हमने उसे पाँच लाख रुपए की भेंट दी है। यह

रकम उधार नहीं है मित्र राष्ट्र मेल-मुलाकातों में उल्लास मना रहे हैं। कमाल की बात है। जब हमारा रोम धू धू कर के जल रहा है उस समय ये नीरो निश्चिन्तता से बैठा बैठा बाँसुरी बजा रहा है.. ..।

४ मई, १९४५

कल रंगून अंग्रेजों को सौंप दिया गया। दो तारीख को पगू पर उन्होंने अधिकार कर लिया था और एक सप्ताह पहिले टोंगू का भी पतन हो गया।

हमारी फौज ने जिस दक्षता से रंगून में सार्वजनिक व्यवस्था का संरक्षण किया उस के लिए तो शत्रुओं को भी सराहना करनी पड़ी। हमारे नियन्त्रण-काल में न कहीं चोरी हो सकी और न लूटमार ही। १९४२ में जब अंग्रेज रंगून को एकदम असहाय छोड़कर भाग गए थे उस से बिलकुल ही उल्टा व्यवहार हमारी फौज ने किया। हमारी फौज के सामने न नगर में आग लगाने का सवाल था और न अंग्रेजों की तरह जान बचा कर भागने का। उसने जाते जाते भी नागरिकों के प्रति अपने फर्ज को पूरा कर दिखाया।

इरावदी नदी पर जापानियों ने सुरंगों का जाल सा बिछा रक्खा था और यदि हम चाहते तो दुश्मनों के सामने एक एक गली में, एक एक घर में नया-मोर्चा खड़ा कर सकते थे। पर निश्चय हो चुका था कि सम्पूर्ण शान्तिमय तरीकों से आत्म-समर्पण कर दिया जाए। इस लिए फिलहाल तो हमारी हार हो चुकी। आजादी हम से दूर निकल गई। अब केवल जापानियों के मान और प्रतिष्ठा के लिए भारतीय रक्त का व्यर्थ ही क्यों बलिदान किया जाए?

आजाद हिन्द लीग की शाखाओं की रिपोर्टों से मालूम हुआ है कि जिलों और कस्बों में भी लीग ने भारतीय तथा बर्मी जान-माल की रक्षा का पूरा खयाल रक्खा था और उन को किसी तरह की हानि नहीं होने दी थी। लीग के कारण इन दोनों जातियों का पूरा पूरा बचाव हो सका।

५ मई, १९४५

२४ वीं भारतीय इन्फैन्ट्री के अध्यक्ष ब्रिगेडियर लौअर रंगून क्षेत्र के इंचार्ज हैं।

आज यह ब्रिगेडियर श्री बहादुरी से मिला। उस ने लीग की प्रवृत्तियों का विवरण माँगा है। उसने यह मंशा प्रगट की है कि लीग अपने राजनैतिक कामों

को बद कर दे। परन्तु सामाजिक कल्याण और दवादारू का काम चालू रक्खे। उसने भारतीय कांग्रेस का उदाहरण दिया और बताया कि सरकार और कांग्रेस राजनैतिक क्षेत्र में एक दूसरे के कट्टर विरोधी है। फिर भी सार्वजनिक हित के अन्य कामों में कांग्रेस सरकार के साथ सहयोग करती है।

श्री बहादुरी मान गए हैं। रंगून के हमारे सभी अस्पताल बराबर चालू रहेंगे। ब्रिगेडियर ने धन और दवाइयों से सहायता देनी चाही थी। परन्तु श्री बहादुरी ने धन्यवाद पूर्वक उन्हें अस्वीकृत कर दिया।

आजाद हिन्द के राष्ट्रीय बैंक को अंग्रेज बन्द नहीं कर रहे हैं। यह भी बहुत अच्छा हुआ। इस तरह जब कि बाजार में स्थिरता नहीं है—भाव के उतार चढाव का कोई पार नहीं है—कीमतें लगातार बढ़ती जा रही है—दूकानें और बाजार प्रायः बन्द ही रहते है—उस समय बैंक हमारी भोजन सामग्री का प्रबन्ध करने लगा है, कपड़े आदि की भी व्यवस्था कर रहा है—और वह भी पुरानी कीमतों पर ही। गड़बड़ी और तूफान के इन दिनों में यह बैंक ही हमारा एक मात्र सबल है।

फौज के सम्बन्ध में ब्रिगेडियर, जनरल लोगनादन को यह आश्वासन दे चुका है कि फौज के सभी स्त्री और पुरुष स्वतन्त्र नागरिकों की तरह भारत लौट सकेंगे। पर उस ने एक अनुरोध किया है कि फौज अपनी वर्दी उतार दे और ब्रिटिश सेना के भूत पूर्व अफसर फिर से अपने पदों के अनुसार अपने चिन्ह धारण कर ले।

उसने जनरल लोकनादन को इस बात का भी विश्वास दिलाया है कि फौज के सिपाही और अफसरों से हल्की मजदूरी के काम नहीं कराए जावेंगे और यदि कभी जरूरत भी पड़ी तो उस समय फौज और अंग्रेजों की सेना के आदमी बराबर की संख्या में उस काम पर लगाए जावेंगे।

फौज के कैम्प पर फौज का ही पहरा रहेगा। फौज पर हमारा राष्ट्रीय तिरंगा उड़ता रहेगा। फौज अपना खुद का राष्ट्रीय गीत भी गा सकेगी।

मैं श्री न...से मिली। श्री न...मेरे प...के साथ मृत्युञ्जय टुकड़ी में रह चुके हैं। सेनाग येंग से दोनों बिछुड़ चुके हैं। रह रह कर एक आशंका उठती है मेरे दिल में। ..... मेरे नयन तुम्हारे दर्शनों के लिए तड़पते ही न रह जावें कहीं मेरे प्राण? यदि तुम कैद कर लिए गए तो—मैं तुम्हें रंगून में ढूंढ ही निकलूंगी। ओह! तुम्हारे बिना यह जीवन भार हो रहा है मेरे जीवन धन!

१९ मई, १९४५

ब्रिगेडियर लोडौर आज हमारे बैंक पर टूट पड़ा। पर बैंक ने अब तक तो बहुत से खातेदारों के जमा पीछे लौटा दिए हैं। पर फिर भी बैंक के खुद के पास इस वक्त तक ३५ लाख रुपए जमा थे। बैंक के हिसाब किताब की बहियों के साथ साथ यह सब रुपया भी अंग्रेजों द्वारा जब्त कर लिया गया है।

धीरे धीरे, पर—बहुत ही सख्ती और चतुराई के साथ हमारी गर्दन एक बार फिर इन विश्वासघाती अंग्रेजों के फंद में फंसी जा रही है। प्रारंभ में ब्रिगेडियर द्वारा दिए गए आश्वासनों के साथ यह विश्वासघात है। पर इन धूर्तों को कौन कपटी और विश्वासघाती नहीं मानता!

ब्रिटिश फिल्ड सिक्योरिटी सर्विस भी अब रंग दिखाने लगी है। आज मेरे लिए बुलावा आया। सिपाहियों के साथ सैनिक अफसर द्वार पर आ धमकते हैं और कहते हैं कि "जरा एक मिनट के लिए तुम से काम है–थोड़ा साथ आइए न?" और फिर उनके साथ वैसे ही उसी समय जाना पड़ता है। मना करने पर शायद कैद कर के ले जावें। वे जिरह करने वाले अफसरों के पास ले जाते हैं। उन से कई दिनों तक जिरह होती रहती है। जो उनके साथ अपने पहिने हुए सधारण कपड़ों में ही जाते हैं उन्हें बिना बिस्तर, बिना कपड़ों के जब तक वे आज्ञा न दें—रंगून सेंट्रल जेल में बन्द रहना पड़ता है। बाहिर निकलना भाग्य की ही बात है। पर ऐसा बहुत कम कम हो पाता है और जो जेल में ही रख लिए जाते हैं तो फिर उन का खुदा ही हाफिज है।

जिन्हें छोड़ दिया जाता है–उन पर कड़ी निगरानी रहती है। कइयों से जमानत के तौर पर बड़ी बड़ी रकमें हड़प की जाती हैं। अनेकों को पुलिस में नियमित रूप से हाजिरी देने जाना पड़ता है। झांसी की रानी पलटन की महिलाएं भी उन की नजर से बच नहीं पाई हैं। मैं तो कठिनता ही से बच कर निकल सकी हूं। अफसरों ने मुझे मेरे प...के विषय में बहुत कुछ पूछताछ की। मुझ से पता लगाना चाहा कि वे कहां हैं? इस का यह तो स्पष्ट अर्थ ही है कि प...युद्ध-बंदी तो नहीं ही बनाए गए हैं–अंग्रेजों के हाथों। फिर उन्होंने मुझे भी अपनी प्रवृतियों के बारे में पूछताछ की। मैंने निर्भय हो कर उत्तर दिया, "मैं आजाद हिन्द लीग में काम करती थी। और फौज में मेरा युनिट झांसी की रानी था। मैं झांसी की

रानी पलटन की सैनिका हूं। बस इस से ज्यादा मैं कुछ बताने की नहीं। यदि और कुछ जानना हो तो मेरे अफसरों से जान लें।"

मुझ पर फिर अधिक दबाव नहीं डाला गया। आश्चर्य है ऐसा क्यों हुआ? हो सकता है, मेरे दृढ़ निश्चय ने ही उन्हें विचार में डाल दिया हो। पर जब से मैं लौटकर घर आई हूँ तब से भूत की तरह एक अंग्रेज सी. आई. डी मेरे पीछे लगा दिया गया है। वह मेरे मकान के सामने ही बैठा रहता है। मुझे इस की जरा भी चिन्ता नहीं है। भले ही वह मेरे पीछे दिन रात घूमा करे, भटका करे।

और यदि प. अचानक ही घर आ जाए तो? तो उन्हें मुझे छिपाकर रखने के लिए अड़ोस पड़ोस में कोई सुरक्षित स्थान ढूंढ लेना चाहिए और सतर्कता से उन की खोज भी करते रहना चाहिए। और अपने सभी मित्रों को इस भूत से सावधान कर देना चाहिए कि मुझ से मिलने के पहले यदि प. उन में से किसी को मिल जावें तो वे इस—भूत—सी आइ. डी से उन्हें सचेत कर दें।

/ २८ मई १९४५

श्री बहादुरी कैद कर लिए गए। उन्हें रंगून जेल में रखखा गया है। विश्वास-घात की हद हो गई।

समाचार तो ऐसे भी है कि हमारे दो सौ से भी अधिक आदमियों को बिना किसी अदालती कारवाई के लंबी लंबी सजाएं दी गई है—उन पर न मुकदमा चला, न गवाह हुई और न कानूनी न फैसला। ज्यों के त्यों वे सब इनसिन जेल में रख दिए गए।

फौज के सम्बन्ध में भी हमें धोखा हुआ—एक दम धोखा। जिस समय फौज का सम्पूर्ण निशस्त्रीकरण हो गया तब एकदम-उसी वक्त हमारे सैनिकों को रंगून जेल में *बिलकुल अलग कैद कर दिया गया।* उन पर अंग्रेज पहरेदार निगरानी कर रहे है। उन्हें अंग्रेजी सेना के सिपाहियों की देखरेख में सड़कें सुधारने का काम दिया गया है। उन से जबरन काम लिया जाने लगा है। अब उन के साथ साधारण कैदियों जैसा बर्ताव होने लगा है। ऐसी भी खबर है कि फौज के उच्च अफसरों को हिन्दुस्तान भेज दिया जावेगा। फिर वहां उन का कोर्ट—मार्शल होगा और फिर......

५ जून, १९४५

मेरी डायरी ! तुम्हारे आगे अपने हृदय की बात स्वीकार करते मुझे संकोच कैसा ? मुझे मानने दो कि मेरा दिल टूट चुका है। अब मैं संभल सकूँगी यह संभव नहीं दिखता। दिन और रात प.. की चिन्ता लगी रहती है। रह रह कर उनका विचार आता रहता है। घर की एक‌एक बात उन की स्मृति को और ताजा बना देती है। बीते दिनों की यादगारें उमड़ उमड़ कर सामने आ रही हैं। उन का पाइप, उन के कपड़े और वह खाने की मेज–ओफ ! किस तरफ देखूं ? जहां कहीं–सब तरफ उन्हीं की प्रतिमा दीख रही है। बीच बीच में ऐसा लगता है कि वे मुझे पुकार रहे हैं–घर के ज़र्रे ज़र्रे से उन की आवाज निकल रही है।

मेरे आंसू नहीं थमते। तकिया तर हो रहा है। रोते रोते दो रात और दो दिन बीत गए। परन्तु कौन है जो मुझे आश्वासन दे, ढाढ़स बधाए, शान्ति और सान्त्वना दे कर जी का बोझ हल्का करे ? जीवन में अब तक जिसका थोड़ा बहुत महत्व भी था वह इस समय नीरस और फीका लग रहा है। क्या आत्म-हत्या करलूं ? यही विचार दिनरात चक्कर लगा रहे हैं। भरसक प्रयत्न कर के भी इन से बच नहीं पाती। मेरे भाग्य में क्या यही बदा था मेरे देवाधिदेव ? कौन से पापों का फल भोगना है मुझे कि जिसके लिए ऐसी कठोर सजा मिलने जा रही है मुझे। जिस के लिए मेरा प्यार अक्षुण था, जिस की मुस्कराहट मात्र मेरी प्रसन्नता थी–जिस का विरह मुझे सूना कर काटा बना चुका था–वही–हा देव !–वही हाथ से छिन गया। भाग्य की एक ही ठोकर ने सब कुछ मटियामेट कर दिया। मैं ने अपने प्राणों से भी बढ़ कर प...को प्यार किया था और प...गए, बीच मझ-धार में–बिलकुल अकेली मुझे छोड़ कर। जीवन को आनंद–दायक, मंगल–मय, प्रेम–मय बनाने वाली सभी वस्तुएं तुमने एक ही साथ मुझ से छीन ली। हिन्दुस्तान की आजादी का जंग मैं चाहती थी। प...और मैं–दोनों इस में कूद पड़े थे। वह युद्ध भी आज हम हार बैठे। जीवन आज दिशा–शून्य, साथी–शून्य और आदर्श–शून्य हो गया है। मेरा काम खतम हो गया—नहीं जबरदस्ती मुझ से छीन लिया गया। साथी बिछुड़ गए। अपनी अपनी अलग अलग राहें पकड़ ली हैं सबने। पर मैं—मैं क्या करूं ? किस राह चलूं ? अनाथ ! हत–भागिनी ! मेरे लिए यहाँ कोई स्थान नहीं। अब मेरा पुत्र ही एक मात्र मेरी सान्त्वना है। उसी के चहेरे में, मैं उन के दर्शन करूंगी। उन की यह धरोहर मैं यत्न से पालूंगी। पर तब तक

अरक्षित युद्ध भूमि में भारतीय स्काउट वीरांगनाएं

"हमें—इसबार केवल एक ही नहीं—पर हजारों और लाखों झांसी की रानियों की जरूरत हैं....!"
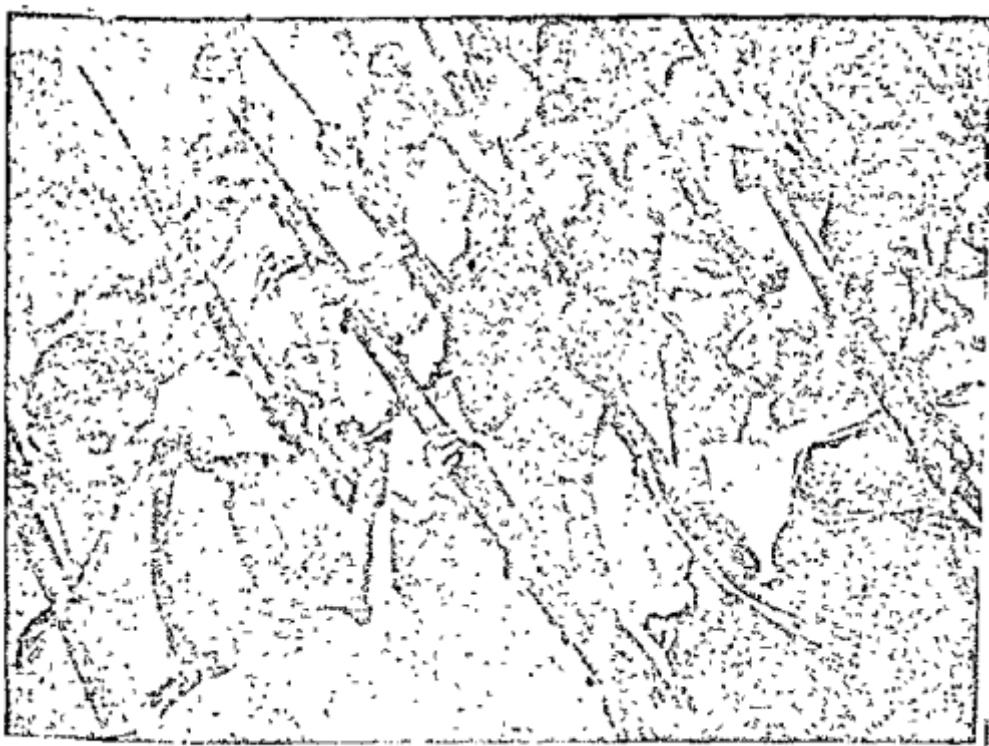
पूर्व सरहद को जाने का आजाद हिन्द सेना का रास्ता.

भी जाने की मुझे इजाजत नहीं। वह हिन्दुस्तान में है और मैं वहां भी नहीं जा सकती, हिन्दुस्तान को—अपने देश को। ऐसी ही आज्ञा है अंग्रेजों की मेरे लिए।

ओफ ! क्या लिखूं ? क्या करूं ? किस से सलाह लूं ? उन से तो मैं नित्य ही झगड़ती थी—अपनी आजादी के लिए। यह आज मालूम हुआ मेरे देव ! कि मैं अकेली नहीं चल सकूंगी, नहीं जी सकूँगी तुम्हारे बिना। मुझे तुम्हारा सहारा चाहिए। मुझे तुम्हारे मजल की जरूरत है। मुझे विश्वास हो गया मेरे देव! तुम्हारे बिना मैं एक कदम भी अकेली नहीं बढ़ सकूंगी। आगे एक दिन भी जीना पहाड़ हो जाएगा।

पहिले पहल जब वज्रपात की तरह यह खबर आई तब मैं सन्न हो गई! श्री क.. इस बात को बहुत पहिले से जानते होंगे। जब इस की गहराई में जाती हूँ तो मुझे ख्याल आता है कि यह समाचार मुझे सुनाने के पहले श्री क ने इस पर खूब खूब विचार किया होगा। कितने दूरदर्शी हैं वे। उनका आभार मानती हूँ मैं।

मेरे देव! तुम्हारे जीवन का अन्तिम दृश्य आज भी मेरी आँखों के आगे वैसा ही नाच रहा है जैसा श्री क ने बताया था। ठीक वही चित्र सामने आता है और उस में जरा भी धुंधलाहट नहीं आने पाती। मैं इस दृश्य को कभी भूल नहीं सकूंगी। श्री क...की वाणी आज भी मेरे कानों में वैसी ही गूँज रही है। उन्होंने कहा था—

"दुश्मनों के एक बहुत बड़े बारूद के गोदाम पर उन की आँखें गड़ चुकी थी। उस गोदाम का सही सलामत रह जाना वे गवारा नहीं कर सके। उन्होंने उसे उड़ा देने की ठान ली। उन्हें खतरा सामने दीख रहा था। उन्होंने किसी भी साथी को यह काम नहीं करने दिया। बहुत कुछ समझाने पर भी उन्होंने एक की नहीं मानी, किसी की बात तक नहीं सुनी। इस काम का जिम्मा उन्होंने अपने पर ही लिया और शिर के सौदे पर आग में कूद पड़े। शत्रुओं के बारूद के गोदाम को उन्होंने नष्ट कर दिया—अपने प्राणों के मोल पर। बर्मा सीमान्त के उस पार—जन्म-भूमि के पवित्र रजकणों पर उन्होंने मृत्यु का आलिङ्गन किया। तुम वीर पत्नी हो—तुम्हें धीरज नहीं खोना होगा—उनका ऐसा ही आदेश था। उन्होंने आखिरी दम तक साहस रक्खा था। तुम उनकी अर्द्धांगिनी हो।"

मेरी डबडबाई आँखें भी एक बार चमक उठीं। मेरा सोया हुआ साहस फिर से जाग पड़ा। वीर-पति के नाम से मेरी छाती फूल उठी। मैं जरा और संभल कर बैठ गई—छाती उभार कर, आगे की कथा सुनने के लिए। श्री क... बिना रुके एक ही सांस में साहस से कहते चले जा रहे थे।

"बारूद का गोदाम उन्होंने उड़ा दिया। जब हम के साथी उन का पता लगाने निकले तो वे एक खाई में पड़े हुए अपनी अन्तिम सांसें गिन रहे थे। उन के बाएं हाथ का कहीं पता तक नहीं था और शरीर क्षत-विक्षत हो चुका था। घाव संगीन थे। वे जानते थे—व प्राणों पर खेल चुके हैं। मृत्यु उन की बाट देख रही है। उन्होंने यह संदेश दिया है तुम्हारे लिए और अपने साथियों के लिए—

मेरी बहादुर सिंहनी—मेरी जीवन संगिनी स... को कहना—

मैं पुलकित हो उठी पहिले ही शब्द से। भूल गई सब दुख। मेरे रोम रोम में उन की वह ध्वनि छा गई। काश! आज मेरे हजार कान होते उन का संदेश सुनने के लिए।

"मैं सिंहों की तरह वीर गति को प्राप्त हो रहा हूँ। मैं ने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया। मुझे पूरा सन्तोष है। तुम धीरज न खोना। अपने कर्तव्य का पालन करना। माँ मुझे पुकार रही है—इस लिए उसी की पावन गोदी में मैं सोने जा रहा हूँ। बस—मैं चला रानी, लो मैं चला।" और अपने साथियों को संबोधन कर के उन्होंने कहा।

"दोस्तो! बहादुरी से कदम बढ़ाना—लड़खड़ाना नहीं। नेता जी! मुझे सन्तोष है मैं आप के आदेशों का पालन कर सका हूँ। मैंने अपना खून दे दिया है। यह खून व्यर्थ नहीं जा सकता। इस की हर बूंद से असंख्य सैनिक उठ खड़े होंगे। मित्रों! यहाँ मेरे पास खड़े रहकर व्यर्थ समय न खोना। जाओ! अपने मोर्चे पर डट जाओ। विश्वास करना! शत्रु मुझे जिन्दा नहीं पकड़ सकेंगे। थोड़ी ही देर बाकी है। मुझे मृत्यु की अमरता और शहीद होने का राष्ट्रीय मान मिलने वाला है। अपनी फौज का रास्ता—आजादी और मुक्ति का रास्ता अपने शोणित से मैंने सींच दिया है। नेताजी! आप के शब्द मेरे कानों में बराबर गूंज रहे हैं।

मेरी डबडबाई आँखें भी एक बार चमक उठी। मेरा सोया हुआ साहस फिर से जाग पड़ा। वीर-पत्नी के भाव से मेरी छाती फूल उठी। मैं उरा और संभल कर बैठ गई—छाती तानकर, आगे की कथा सुनने के लिए। श्री क...बिना रुके एक ही सांस में साहस से कहते चले जा रहे थे।

"बारूद का गोदाम उन्होंने उड़ा दिया। जब हम के साथी उन का पता लगाने निकले तो वे एक खाई में पड़े हुए अपनी अंतिम सांसें गिन रहे थे। उन के बाएं हाथ का कहीं पता तक नहीं था और शरीर क्षत-विक्षत हो चुका था। घाव संगीन थे। वे जानते थे—वे प्राणों पर खेल चुके हैं। मृत्यु उन की बाट देख रही है। उन्होंने यह सदेश दिया है तुम्हारे लिए और अपने साथियों के लिए—

मेरी बहादुर सिंहनी—मेरी जीवन संगिनी म...को कहना—

मैं पुलकित हो उठी पहिले ही शब्द से। भूल गई सब दुख। मेरे रोम रोम में उन की वह ध्वनि छा गई। काश! आज मेरे हजार कान होते उन का संदेश सुनने के लिए।

"मैं सिंहों की तरह वीर गति को प्राप्त हो रहा हूँ। मैं ने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया। मुझे पूरा संतोष है। तुम धीरज न खोना। अपने कर्तव्य का पालन करना। माँ मुझे पुकार रही है—इस लिए उसी की पावन गोदी में मैं सोने जा रहा हूँ। बस—मैं चला रानी, लो मैं चला।" और अपने साथियों को संबोधन कर के उन्होंने कहा।

"दोस्तो! बहादुरी से कदम बढ़ाना—लड़खड़ाना नहीं। नेताजी! मुझे संतोष है मैं आप के आदेशों का पालन कर सका हूँ। मैंने अपना खून दे दिया है। यह खून व्यर्थ नहीं जा सकता। उस की हर बूंद से असंख्य सैनिक उठ खड़े होंगे। मित्रो! यहाँ मेरे पास खड़े रहकर व्यर्थ समय न खोना। जाओ! अपने मोर्चे पर डट जाओ। विश्वास करना! शत्रु मुझे जिन्दा नहीं पकड़ सकेंगे। थोड़ी ही देर बाकी है। मुझे मृत्यु की अमरता और शहीद होने का राष्ट्रीय मान मिलने वाला है। अपनी फौज का रास्ता—आजादी और मुक्ति का रास्ता अपने शोणित से मैंने सींच दिया है। नेताजी! आप के शब्द मेरे कानों में बराबर गूंज रहे हैं।

"हमारे जवाँ-मर्दों का खून हमारी आजादी की कीमत होगा। हमारे शहीदों के खून—उन की बहादुरी और उन की मर्दानगी से ही हिन्दुस्तान की माँग पूरी हो सकेगी। हिन्दुस्तानियों पर जुल्मो सितम तोड़ने वाले बरतानवी जबरों से बदले का बदला सिर्फ खून से ही लिया जा सकेगा—जय हिन्द।"

और समाप्त करते करते उन्होंने रिवाल्वर को अति मानवता से अपने मुँह में डाल कर घोड़ा दबा दिया। उन के अंतिम वाक्य में जय हिन्द का नाद था—उन के चेहरे पर हिन्द को आज़ाद देखने की तमन्ना बिखरी पड़ी थी। उन की अंतिम वाणी अनन्त आकाश में गूंज रही थी—जय हिन्द, जय हिन्द, जय ...

इतिहास यों बनता गया—

७ दिसम्बर,	१९४१	सुदूर पूर्व में युद्ध शुरू हुआ
१५ फरवरी,	१९४२	सिंगापुर पर जापानियों का अधिकार
२४ जून,	१९४२	आजाद हिन्द संघ की स्थापना
नवम्बर-दिसम्बर	१९४२	पेनांग की स्वराज्य इन्स्टिट्यूट और आजाद हिन्द फौज के लिए संकट-काल
१८ अप्रेल,	१९४३	आजाद हिन्द संघ की युद्ध के लिए तैयारी
४ जुलाई,	१९४३	श्री सुभाष बोस आजाद हिन्द संघ के अध्यक्ष
५ जुलाई,	१९४३	संसार के समक्ष आजाद हिन्द फौज की घोषणा
२५ अगस्त,	१९४३	श्री सुभाष बोस फौज के सिपह-सालार.
२१ अक्टोबर,	१९४३	आजाद हिन्द के अस्थाई सरकार की स्थापना
२२ अक्टोबर,	१९४३ . ..	झांसी की रानी रेजिमेंट के शिक्षण-शिविर का उद्घाटन
२५ अक्टोबर,	१९४३	ब्रिटिश साम्राज्य और अमेरिका के साथ युद्ध की घोषणा
८ नवम्बर,	१९४३	अंडमान और निकोबार द्वीप समूह आजाद हिन्द सरकार को सौंपे गए
३० दिसम्बर,	१९४३	पोर्ट ब्लेयर पर तिरंगा झंडा फहराया गया
८ जनवरी,	१९४४	रंगून में अग्रिम सदर मुकाम की स्थापना, शहीद द्वीप समूह के लिए जनरल लोगनादन चीफ कमिश्नर नियुक्त किए गए
१८ मार्च,	१९४४	सीमाएं पार कर के फौज ने हिन्दुस्तान में प्रवेश किया
२२ मार्च,	१९४४	जनरल चैटर्जी हिन्दुस्तान में मुक्त-प्रदेश के पहले गवर्नर नियुक्त हुए
४ जुलाई,	१९४४	सुभाष-सप्ताह की शुरुआत
२१ अगस्त,	१९४४	वर्षाऋतु के कारण युद्ध-प्रगतियें स्थगित की गईं
दिसम्बर-जनवरी,	१९४५	फौज का दूसरा विग्रह
२४ अप्रेल,	१९४५	आजाद हिन्द सरकार रंगून से बैंकॉक चली गई
३ मई,	१९४५	फौज ने अंग्रेजों को रंगून सौंप दिया

रंगून छोड़ने के पहिले श्री सुभाष चंद्र बोस का आजाद हिन्द फौज के नाम अंतिम आज्ञा-पत्र

हेड क्वार्टर्स, आजाद हिन्द फौज

आजाद हिन्द फौज के
बहादुर सेनापतियो और सैनिको !

बर्म्मा से विदा होते वक्त मुझे हार्दिक वेदना हो रही है। १९४४ की फरवरी से आज तक आप लोगों ने इस धरती पर अनेकों वीरतापूर्ण लड़ाइयें लड़ी है। हम इम्फाल और बर्म्मा में अपनी स्वतन्त्रता-प्राप्ति का पहला युद्ध हार चुके लेकिन केवल पहला युद्ध ही। अभी तो हमें हमारे मुल्क की आजादी के लिए अनेकों लड़ाइयें लड़नी पड़ेंगी। मैं जन्म से ही आशावादी हूँ। किसी भी परिस्थिति में मैं पराजय स्वीकार नहीं कर सकता। इम्फाल के मैदानों में, अराकान के जगलों और घाटियों में, बर्म्मा के तेल-क्षेत्रों में और अन्य स्थानों पर तुमने शत्रुओं के सामने जो साहस, हिम्मत और बहादुरी दिखाई है वह भारतीय स्वाधीनता-सग्राम के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगी।

साथियो ! इस सकट की वेला में मुझे तुम्हें एक ही आदेश देना है और वह यह है कि यदि थोड़े वक्त के लिए भी हमें अपनी पराजय स्वीकार करनी है तो उसे हम बहादुरों की तरह अनुशासन और स्वाभिमान के उच्चतम आदर्शों का पालन करते हुए ही स्वीकार करें। हिन्दुस्तान की आनेवाली पीढ़ियें, जो—गुलामी में नहीं परन्तु आजादी के गर्व और गौरव भरे वातावरण में जन्मेगी—और जिनकी वे तुम्हारे त्याग, तप और बलिदान के प्रताप से ही तुम पर आशीर्वाद बरसएगी और अभिमान के साथ ससार के समक्ष डंके की चोट से कहेंगी कि हमारे पुरखाओं ने मणिपुर, आसाम और बर्म्मा के रण-क्षेत्रों में युद्ध किया था, झुके थे और पराजित होकर भी उन्होंने हमारे स्वाधीनता-प्राप्ति के रास्ते को निष्कटक बनाया था।

मेरा अडिग विश्वास है कि हिन्दुस्तान आजाद हो कर रहेगा ! अपना राष्ट्रीय तिरंगा झंडा, अपना राष्ट्रीय स्वाभिमान और भारतीय सैनिकों के मर्दानगी की शौर्य

और साहस भरी परंपरा तुम्हारे हाथों में मैं सुरक्षित छोड़ कर जा रहा हूँ। स्वाधीनता-संग्राम के नेताओ! मुझे विश्वास है—तुम इन की रक्षा के लिए अपने सर्वस्व का बलिदान कर दोगे। संसार के किसी दूसरे कोने से हमारे स्वाधीनता संग्राम को शुरु करने वाले तुम्हारे जीवन से प्रकाश-मयी प्रेरणा लेंगे। यदि मेरे ही मन की हुई होती तो, मैं यहीं—तुम्हारे ही साथ रह, पर इस चणिक पराजय की पीड़ा को सहन करने में तुम्हारा हिस्सा बटाता। लेकिन आजाद हिन्द सरकार के मंत्रि-मंडल और अपनी फौज के सेनापतियों के आग्रह से मैं बर्मा छोड़ रहा हूँ—यहाँ विश्राम करने के लिए नहीं—लेकिन किसी अन्य स्थान पर जा कर अपने आजादी के जंग को निरंतर चालू रखने के लिए।

पूर्व एशिया और हिन्दुस्तान की धरती पर रहनेवाले मेरे भारतीय देशबंधुओं को मैं अच्छी तरह से पहिचानता हूँ और पहिचानता हूँ इसी लिए तुम्हें विश्वास दिला सकता हूँ कि कैसी भी विषम परिस्थितियों में वे आजादी के जंग की मशालों को निरंतर जलाया रख सकेंगे और तुम्हारी कुर्बानियें और कष्ट सहन व्यर्थ नहीं जायेंगे उनका फल हमें मिलेगा ही। जहांतक मेरा संबंध है—मैं १९४३ के २१ अक्टोबर को ली हुई अपनी शपथ को वफादारी के साथ निभाऊँगा...और अपने मुल्क के ३८ करोड़ देशवासियों के कल्याण और उनकी मुक्ति के लिए जितना भी करना शक्य होगा—किए बिना चैन नहीं लूंगा।

मुझे विश्वास है—तुम भी मेरी तरह अपने उद्देश्य के सिद्धि की आशा अपने में जीवित रक्खोगे। और मेरी इस मान्यता को स्वीकार करोगे कि गहन अंधकार के बाद ही उषा का उदय होता है।

हिन्दुस्तान आजाद होकर ही रहेगा—और वह भी बहुत ही थोड़े समय में.....

भगवान तुम पर आशीर्वाद बरसाए......

इन्किलाब — जिन्दाबाद

आजाद हिन्द-जिन्दाबाद

जय हिन्द

२४ अप्रिल, १९४५

सुभाष चंद्र बोस

सिपहसलार—आजाद हिंद फौज

बर्म्मा छोड़ने के पहिले अपने सहयोगियों को श्री सुभाष चंद्र बोस का अंतिम-संदेश

निवासी मेरे हिन्दुस्तानी और बर्म्मी मित्रो को—

और बहनो !

ी ही दुख के साथ मैं बर्म्मा से विदा ले रहा हूँ। अपने स्वातन्त्र्य-का पहला युद्ध अपन हार बैठे है—लेकिन पहला युद्ध ही। अभी तो कई लड़नी बाकी है। एकाद युद्ध में पराजित होकर ही निराश होजाने का मुझे ण नजर नहीं आता।

ंसार आज तुम्हारी सराहना कर उठे—ऐसी खूबी के साथ, बर्म्मा के ासियो ! तुमने मादरे-वतन के प्रति अपने फर्ज को अदा किया है। तुम ...मानव-सम्पत्ति, द्रव्य और साधन-सामग्री मा के चरणों मे उदारता से ...। 'अंतिम युद्ध के लिए अपनी सपूर्ण और सर्वांगी तैयारी' का अर्थ ने व्यवहार और यतन से प्रत्यक्ष कर दिखाया है। लेकिन विपक्षी शत्रु बहुत प्रचंड थी जिस के परिणाम स्वरुप कुछ वक्त के लिए बर्म्मा में ा अपनी आजादी का युद्ध हम बेशक हार चुके है।

र्थ-सेवा और समर्पण की जो उच्चतम भावना आप लोगों ने इस बार—ा पर अपने फौजी सदर मुकाम को बर्म्मा में ले आने के बाद आपने ...उसे मैं जीवन भर नहीं भूल सकूगा।

विश्वास है कि आप की इस भावना को कोई शक्ति कभी भी कुचल ...गी। और इसी लिए मेरा आप से अनुरोध है कि हिन्दुस्तान की ...के लिए अपनी इस उम्दा भावना को आप ज्यों का त्यों बनाए रक्खें। प्रार्थना है आप से कि हिन्दुस्तान की आजादी के लिए फिर से दुगना

जग शुरू करने का जब स्वर्ण-प्रभात उदय हो—तबतक राष्ट्रीय अभिमान से अपने मस्तक को गर्व से ऊंचा उठाए रक्खे ।

भारतीय स्वाधीनता के इस संग्राम का जो इतिहास लिखा जाएगा उसमें के हिन्दुस्तानियों का स्थान बहुत ऊँचा रहेगा ।

मैं अपनी निजी इच्छा से बर्म्मा को छोड़कर नहीं जा रहा हूँ । अपनी इस पराजय के दुःख को आप सब लोगों के साथ रहकर सहन करने में मुझे सुख मिलता । लेकिन मेरे मंत्रीमण्डल और अन्य उच्च अधिकारियों की यह मेरी सलाह है कि हिन्दुस्तान की आजादी के इस जंग को निरंतर जारी लिए मुझे बर्म्मा से किसी दूसरे स्थान पर चला जाना चाहिए। मैं जन्म से वादी हूं और इसीलिए आज भी मुझे अडिग विश्वास है कि बहुत ही शीघ्र आजाद हो कर रहेगा । और मैं आप सब से भी यही करता हूँ कि इस आशावाद को आप अपने हृदय में भी दृढ़ से बनाए रक्खें ।

आप को कई बार मैंने कहा है कि उषा के उदय होने के पहले चा अगाढ़ अंधकार फैल जाता है । हम इस समय गहन तम अंधकार से गुज इस लिए उषा के उदय में अब विलंब मत समझिए ।

विश्वास रखिए---हिन्दुस्तान आजाद होकर ही रहेगा ।

बर्म्मा की प्रजा और बर्म्मा की सरकार ने हमारे स्वाधीनता---संग्राम का करने में मुझे शक्ति भर सहयोग और सहायता दी है । अपने इस प्रति में उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट किए बिना मैं नहीं रह सकता । बर्मा का स्वतंत्र भारत के हाथों से ही उतारा जा सकेगा और वह दिन भी अब दूर है ।

इन्किलाब — जिन्दाबाद !

आजाद हिन्द-जिन्दाबाद !

जय हिन्द

—सुभाष चं